समीपमागत्य सुचिरं स्थित्वा [illegible] । तदा तु तत्रागत्य किं कृतं किमभिहितं किमाचेष्टितमिति शून्यहृदया सर्वं नाज्ञासिषम् । (ग)

ततोऽस्तं तस्याम्, (१) भगवत्युपगते भगवति हारीत-हरित-वाजिनि सवी-त्रिणीमीलितेक्षणे [illegible] सवितरि, (घ) लोहिततायमाने पश्चिमाशा-मुखे, हरितायमानेषु कमलवनेषु, नीलायमाने पूर्वदिग्विभागे, पातालपङ्कप्लुतेन महाप्रलय-जलधिपयःपूरेणेव तिमिरेणापूर्यमाणे जीवलोके, [illegible] तथैव तरलिकामब्रवम्—(ङ) 'चक्षि तरलिके । कथं न पश्यसि, [illegible]

(ग) [illegible]

(घ) [illegible]

(ङ) [illegible]

(च) [illegible]

থাকলেন, সকল দিকই [illegible] হইয়া গিয়াছিল। (গ) না, আমার নিকট আসিয়া কি করিলেন, কি বলিলেন এবং কি [illegible] কোন্ চেষ্টা করিলেন—এই সকলই আমি শূন্যমনে লক্ষ্য করিতে পারিয়াছিলাম না।

(ঘ) তিনি চলিয়া গেলে, [illegible] এবং তিনি [illegible] অস্তমিত হইলেন; (ঙ) পশ্চিম-দিক্ রক্তবর্ণ হইয়া উঠিল; পদ্মবন হরিদ্বর্ণ হইল, পূর্বদিক্ নীলবর্ণ ধারণ করিল এবং পাতালের [illegible] ও মহাপ্রলয়কালীন সমুদ্রের জলপ্রবাহের ন্যায় সর্বব্যাপী অন্ধকার আসিয়া জগৎকে আচ্ছন্ন করিল—এমন সময়ে আমি বিরহবেদনা-বিধুর হইয়া

---

(১) [illegible] ।

कुलं मे हृदयम्, असमीक्षितकारीणि चेन्द्रियाणि। न स्वयमल्पमपि कर्तव्याकर्तव्यं (१) ज्ञातुम्, उपदिशतु मे भवान् यदत्र साम्प्रतम् (ख)। अयमेवं [illegible]कमिवाभिधाय मतः कपिञ्जलः। यदि तावदितरजन्मेव विहाय लज्जाम्, उत्सृज्य धैर्यम्, उपेक्ष्य (२) विनयम्, अचिन्तयित्वा जनापवादम्, अतिक्रम्य सदाचारम्, उल्लङ्घ्य शीलम्, अवगणय्य कुलम्, अङ्गीकृत्यायशः, रागान्धकृतः अननुज्ञातो पित्रा, अननुमोदितो मात्रा, [illegible] पाणिं [illegible] ;—एवं गुरुजनातिक्रमादधर्मो महान् (ग)। अथ धर्मानुरोधादितर-जनवदसम्मतहरेण मृत्युमङ्गीकरोमि, एवमपि प्रथमं तावत् [illegible] [illegible] कपिञ्जलस्य प्रणयप्रसरभङ्गः (घ)। गुरुतरं यदि

[illegible] विज्ञानानि [illegible]। [illegible] [illegible] कर्तव्यं [illegible]। [illegible] [illegible] उपदिशतु।

(ग) [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। एवं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महान् [illegible] भविष्यतीति भावः।

(घ) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

সেই কপিঞ্জলকেই জিজ্ঞাসা করিলাম—(খ) 'কপিঞ্জল! তুমি দেখিতেছ না কেন? আমার মন যে বড়ই আকুল হইয়াছে এবং কর্তব্য স্থির করিতে না পারায় ইন্দ্রিয়গুলিও বিকল হইয়া পড়িয়াছে; আমি নিজে আর কর্তব্য স্থির করিতে পারিতেছি না; সুতরাং এ বিষয়ে যাহা যুক্তিসঙ্গত হয়, তুমিই আমাকে তাহার উপদেশ দাও। (গ) কপিঞ্জল, [illegible] তোমার সম্বন্ধেই এইরূপ বলিয়া গেলেন; এখন যদি আমি, ইতরজাতীয় লোকের ন্যায় লজ্জা, ধৈর্য ও বিনয় পরিত্যাগ করিয়া, লোকাপবাদের চিন্তা না করিয়া, সদাচার অতিক্রম করিয়া, [illegible] উল্লঙ্ঘন করিয়া, বংশের অবজ্ঞা করিয়া এবং লোকনিন্দা স্বীকার করিয়া, অনুরাগান্ধ [illegible] হইয়া, পিতার অনুমতি না লইয়া এবং মাতার অনুমোদন না পাইয়া, আপনিই যাইয়া পাণিগ্রহণ করি; তাহা হইলে গুরুজনের অতিক্রম করায় গুরুতর অধর্ম হয়। (ঘ) আবার যদি ধর্মের অনুরোধে অপর পক্ষ অবলম্বন করিয়া

---

(১) কর্তুম্। (২) অবধূয়।

कदाचिदस्य जनस्य मदनातिशयात् प्राणविपत्तिरुपजायेत, तदपि मुनि-जनवधजनितं महदेनो भवेत्' (क)। इत्थं मम ब्रुवत एवाभिनव भवि, चाचय-(१) चन्द्रोदयसमये विरलविरलेनालोकेन [illegible] कुसुमरजसा धूसरता-मावनी दिगयासीत्। (ख)

ततः शशि-शीकरि-कर-मकर-विहारैरिमाम-(२) तमः-करि-कुम्भ-भञ्जनेन मुक्ता-फलक्षोदैरिव धवलतामुपनीयमानम्, (ग) उदयगिरि-सिंह-सुन्दरी-कुच-चन्दनेन चन्दनधूसरिताभिरिव पाण्डुरीक्रियमाणम्, (घ) [illegible]-जलधि-जल-

(क) ननु [illegible] [illegible] भवतु नाम [illegible] का [illegible] कुर्वित्ति। [illegible] पुण्डरीकस्य। [illegible] पुण्डरीकनामानुकारयेति [illegible]। [illegible] विपत्तिर्विनाशः। तदपि तथापि। [illegible] महदेनो महत्पातकं भवेत्, "[illegible]" [illegible] [illegible] इति भावः।

(ख) इत्थमिति। [illegible] इत्युक्तं [illegible] [illegible] कुसुमरजसा [illegible], [illegible] [illegible] चन्द्रोदयसमये [illegible] विरलविरलेन [illegible] आलोकेन [illegible]। [illegible]।

(ग) तत इति। शशी चन्द्र एव [illegible] सिंहः [illegible] तस्य कराः किरणा एव [illegible] [illegible] तमोऽन्धकार एव [illegible] [illegible] [illegible], मुक्ताफलक्षोदैरिव [illegible], धवलतामुपनीयमानं [illegible], [illegible] [illegible]। [illegible]।

(घ) उदयेति। उदयगिरौ यः सिंहसुन्दर्यौ [illegible] कुचेभ्यः [illegible] [illegible], चन्दनधूसरिताभिरिव [illegible], [illegible] [illegible]। [illegible]।

[illegible] স্বীকার করি, তাহা হইলেও প্রথম দোষ এই যে, আপনা আপনি উপস্থিত এবং প্রণয়প্রার্থী মাননীয় অপিঞ্জলের [illegible] প্রার্থনা ভঙ্গ করিতে হয়; (ক) এবং দ্বিতীয় দোষ এই যে, আমাদের আশাভঙ্গ হওয়ায় কখন যদি সেই ব্যক্তির প্রাণের বিপদ ঘটে, তাহা হইলেও মুনিজনের বধজনিত মহাপাতক হইবে' (খ) আমি এইরূপ বলিতেছিলাম— এমন সময়ে, পূর্বের [illegible] [illegible] [illegible] ন্যায় পূর্বদিক্, [illegible] [illegible] হইতে [illegible] [illegible] অল্প আলোকে, ধূসরবর্ণ হইয়া উঠিল।

(গ) তাহার পর, চন্দ্ররূপ সিংহের কিরণরূপ নখদ্বারা বিদীর্ণ অন্ধকাররূপ হস্তীর কুম্ভ হইতে পতিত মুক্তাচূর্ণের ন্যায় চন্দ্রের কিরণ, পূর্বদিক্ ধবল করিয়া তুলিল; (ঘ) উদয়াচল-

(१) क्वचित् [illegible] पाठो नास्ति। (२) [illegible], [illegible]।

[illegible]ोत्तासितेन [illegible]-[illegible] पाण्डुतामापाद्यमानम्, [illegible]दिन्दुधाम्ना दिनकरमहसा [illegible] (अ)। शनैः शनैश्चन्द्रदर्शनानन्द-[illegible]तारा [illegible] ज्योत्स्ना निपतन्ती निशाया मुख[illegible] (इ)। तदनु [illegible] (१) [illegible] (२) रजनी-[illegible] (३) [illegible] रजनी (उ)। [illegible] कामिनी[illegible] [illegible]

(अ) [illegible]

(इ) [illegible]

(उ) [illegible]

(ए) [illegible]

[illegible] হইতে নিপতিত চন্দন-চূর্ণ-রাশির ন্যায় চন্দ্রের কিরণ, পূর্বদিক্ পাণ্ডুবর্ণ করিল (অ) এবং [illegible] পূর্ব-সমুদ্রের [illegible] [illegible] হইতে আকাশে [illegible] চন্দ্রের কিরণ, সেই পূর্বদিক্ পাণ্ডুবর্ণ করিল—ইহা লোকে দেখিতে লাগিল। (ই) চন্দ্রকে দর্শন করিয়া [illegible] রজনীর [illegible] ন্যায় জ্যোৎস্না ধীরে ধীরে ভূতলে পতিত হইতে থাকিয়া, সেই রজনীর মুখ-শোভা-সম্পাদন করিল। (উ) তাহার পর, ভূতল বিদারণ করিয়া পাতাল হইতে [illegible] ন্যায় [illegible] শোভা পাইতে লাগিল। (এ) [illegible] সমস্ত জীবলোকের আনন্দজনক, [illegible] কামদেবের [illegible] ([illegible]), [illegible] শোভা ও [illegible] ([illegible]

(১) [illegible]। (২) [illegible]। (৩) [illegible]।

[illegible] यौवनेनेवारोहता [illegible] रमणीयता- मनोहरा यामिनी । (क)

अथ तं मधुमास-कुसुम-विद्रुम-प्रभा-पाटलितमिव उदय-गिरि शिखर-[illegible]-[illegible] (१) [illegible] रति-कलह-कुपित-रोहिणी-चरणा- [illegible]-रस-[illegible]लितमिव [illegible] (२) शशिबिम्बं (३) उदितं विलोक्य [illegible], [illegible] [illegible]

[illegible]

(ख) [illegible]

[illegible]

মুখান্ত) এবং অল্প পরিমাণে বালভাব-পরিত্যাগকারী, মনোহারিণী যৌবনের ন্যায় গগনাভোগী জ্যোৎস্না, যামিনীকে মনোহর করিয়া তুলিল।

(খ) তাহার পর, নূতন উদয়রাগে রক্তবর্ণ বলিয়া, [illegible] পূর্বসমুদ্রের প্রবাল-মণির কিরণে রক্তবর্ণের ন্যায়, উদয়াচলশিখরে [illegible] সিংহের [illegible] হরিণের রক্তে আরক্তের ন্যায় এবং সম্ভোগ-বিবাদে কুপিত রোহিণীদেবীর চরণের [illegible] রঞ্জিতের ন্যায় উদিত সেই চন্দ্রমণ্ডল দেখিয়া, আমার অন্তরে কামানল জ্বলিতে থাকিলেও, [illegible] অন্ধকার ছিল; [illegible] তাহার ক্রোড়ে আমার শরীর ধারণ করিয়া রাখিলেও, আমি কামদেবের [illegible] ছিলাম এবং চন্দ্রের উপর দৃষ্টি রাখিলেও, আমি মৃত্যু

(१) क्वचित् [illegible] नास्ति । (२)...[illegible] । (३) शशिबिम्बं ।

अचिन्तयम्—(क) 'एकतश्च खलु मधुमास-(१) मलयमारुतप्रभृतयः समस्ताः, एकतश्चायं पापकारी चन्द्रहतको न शक्यते सोढुम्। इदमतिदुर्विषहमदन-वेदनातुरञ्च (२) मे हृदयम्। एष चोद्गमनमिदं शशाङ्कस्य (३) [illegible]-वर्षः, शीतार्तस्य तुषारपातः, विषस्फोट-(४) मूर्च्छितस्य कृष्णसर्पदंशः,' (ख) इत्येवं चिन्तयन्त्यामेव (५) चन्द्रोदयापनीता कमलवनलक्ष्मीरिव निद्रेव (६) मूर्च्छा मां निमीलितलोचनामकार्षीत् (ग)। अचिरेण च सम्भ्रान्ततरलिकोपनीतानि-चन्दनजल[illegible]। तामिव कृताकुलां मूर्च्छामेवापहसिता

(क) एकतश्चेति। एकतः एकस्मिन् पक्षे। [illegible] मलयमारुतादीनां [illegible] तुल्य एव पक्षो [illegible] इति भावः, अतएव सोढुं न शक्यते। तेन च इदं मे हृदयं अतिदुर्विषहया मदनवेदनया आतुरं [illegible] इति शेषः। [illegible] च चन्द्रहतकस्य [illegible], दाहज्वरेण [illegible] [illegible] [illegible], शीतार्तस्य [illegible] तुषारपात[illegible], तथा विषस्फोटेन [illegible] मूर्च्छितस्य [illegible] कृष्णसर्पदंशो [illegible], मदनवेदनार्त्तस्य [illegible] [illegible] इति भावः। अत्र "[illegible]" [illegible] [illegible]।

(ख) इत्येवमिति। चन्द्रोदयेन अपनीता [illegible], [illegible] [illegible]; [illegible] निद्रा इव, मूर्च्छा मां निमीलितलोचनां मुद्रितनयनामकार्षीत्। [illegible]।

(ग) अचिरेणेति। [illegible] [illegible] [illegible] तरलिकया उपनीतानि [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] सती, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

দেখিতেছিলাম—এই অবস্থায় তখন আমি চিন্তা করিতে লাগিলাম ; (ক) চৈত্রমাস ও মলয়বায়ু প্রভৃতি সকল উদ্দীপক পদার্থ এক দিকে, আর পাপাচারী চন্দ্রহতক এই চন্দ্র এক দিকে ; সুতরাং ইহাকে আর সহ্য করিতে পারিতেছি না। আমার এই হৃদয়ও, অত্যন্ত দুঃসহ মদন বেদনায় পীড়িত হইতেছে। হায়! এই চন্দ্রের উদয়টা, দাহজ্বর-পীড়িত লোকের পক্ষে অগ্নিময় অঙ্গার-বৃষ্টিস্বরূপ, শীতার্ত ব্যক্তির পক্ষে হিম-পাতস্বরূপ এবং বিস্ফোটের বেদনায় মূর্চ্ছিত লোকের পক্ষে কৃষ্ণ সর্পের দংশনস্বরূপ ; (খ) আমি এইরূপ চিন্তা করিতেছিলাম—এমন সময়ে চন্দ্রোদয়নিবন্ধন পদ্মবনের সঙ্কোচ-নিদ্রার ন্যায় মূর্চ্ছা আসিয়া আমার নয়নযুগল মুদ্রিত করিয়া ফেলিল। (গ) তখন তরলিকা, ব্যস্ত হইয়া আমার অঙ্গে চন্দন লেপন ও তালবৃন্তের বায়ুসেবন করিতে লাগিল, তাহাতে আমি অতিকষ্টে

(१) मधुमास...। (२) अतिदुर्विषहं मदनातुरञ्च, अतिदुर्विषहमदनातुरञ्च। (३) [illegible]। (४) विषास्फोट...। (५) चिन्तयन्त्यामेव। (६) [illegible]।

विषादेन, ललाट-विनिहित-चन्द्रकान्तमणिशलाकां, अविच्छिन्न-बाष्पजल-धाराप्रक्षालितमुखीं रुदतीं तरलिकामपश्यम् (घ)। कथमपि उन्मीलितलोचनां मां सा तत्पादप्रणामा चन्दनपङ्कार्द्रेण करयुगलेन कृताञ्जलिरवादीत्—"भर्तृदारिके ! किं लज्जया गुरुजनापेक्षया वा। प्रसीद, प्रेषय माम्, आनयामि ते हृदयदयितं जनम्, उत्तिष्ठ स्वयं वा तत्र गम्यताम्, अतःपरमसमर्थास्मि सोढुमिमं नवचन्द्रोदय-विजृम्भमाणोत्कलिकाजलमुदधिमिव मकरध्वजम्" इत्येवं वादिनीं तामहमवोचम्—(१) (ङ) 'उन्मत्ते ! किं मदनेन। अन्यदपि सर्वविघ्नजालमपहरन्, (२) सर्वोपायदर्शनाभ्युद्यतम्, सर्वानन्तरायान् (३)

चन्द्रकान्तमणेर्... शलाकां धारयन्ती चन्द्रकान्तमणिशलाका यस्या सा तथा अविच्छिन्नया बाष्पजलधारया प्रक्षालितं मुखं यस्यास्ताम्। अत्र मूर्त्तेनेवेति मूर्त्तिमतोऽविषादस्योपरि ... ।

(घ) कथमपीति। कियत्, तत: पादयोर्नत चरणयो: प्रणामो यस्याः सा, तत्पादप्रणामा। चन्दनपङ्केन मदनशैत्यजलपङ्केन आर्द्रेण करयुगलेन कृताञ्जलिः। ... नवचन्द्रोदयेन विजृम्भमाणा वर्द्धमाना उत्कलिकाजलं ... समुद्रमिव मकरध्वजं ... मकरकेतुं ... सोढुमसमर्थास्मि। अतएव स्वयं वा तत्र गम्यतामिति भाव:। अत्र पूर्णोपमालङ्कार:।

(ङ) उन्मत्त इति। हे उन्मत्ते ! ... इति भाव:। मदनेन किं ... किं प्रयोजनम्? ... ।

সংস্থাপন করিয়া, সেই তরলিকাকেই রোদন করিতে দেখিলাম; তখন সে, আমার অবস্থা দেখিয়া অত্যন্ত বিহ্বল হইয়া পড়িয়াছিল, বিষাদ যেন মূর্ত্তিমান্ হইয়া তাহার উপরে আবির্ভাব করিতেছিল, তাহার ললাটের উপরিভাগে জলধারী একটি চন্দ্রকান্তমণির শলাকা স্থাপন করিয়াছিল এবং অবিচ্ছিন্ন অশ্রুজলের ধারাতে তাহার মুখমণ্ডল মলিন করিয়াছিল। (ঘ) আমি নয়নযুগল উন্মীলন করিলাম, তখন তরলিকা, আমার চরণে প্রণাম করিয়া, চন্দনের রসে আর্দ্র স্বকীয় করযুগল দ্বারা অঞ্জলি বন্ধন করিয়া আমাকে বলিল—"রাজকন্যে ! লজ্জা কিংবা গুরুজনের অপেক্ষা করিয়া ফল কি ? আপনি প্রসন্ন হউন, আমাকে পাঠাইয়া দিন, আমি আপনার প্রাণবল্লভকে আনয়ন করি, অথবা উঠুন, আপনি নিজেই সেই স্থানে গমন করুন; ইহার পর আপনার এই কামবেদনা আমি আর সহ্য করিতে পারিব না; কারণ—নূতন চন্দ্রোদয়ে সমুদ্রের তরঙ্গের ন্যায় আপনারও উৎকণ্ঠা ক্রমশঃ বৃদ্ধি পাইতেছে" তরলিকা এইরূপ বলিতেছিল, তখন আমি তাহাকে বলিলাম—(ঙ) 'উন্মত্তে ! কন্দর্প

(१) तामवोचम्। (२) अपाहरत्। (३) क्वचित् सर्वानिति पाठः।

अपहरता, सर्वथापहस्तितलज्जं धैर्यम्, लज्जामुत्सृज्य, स्वयमभिगमनलाघवदोष-
मादृत्य, कुलातिपातं परिहरन्, आगत एव वत्सोऽसत्यैव मा सकामं नेत
कुसुमायुधः (क)। तदुत्तिष्ठ यावत्कथञ्चिदनुगमनेन जीविता (१) स्वयमेव-
जानि कुदवद्यितमायासकारिणं जनम्' इत्यभिदधाना मदनमूर्च्छानिर्वेदविकरी-
रङ्कैः कथञ्चिदङ्गकैर् तामिवोत्थितम् (ख)। उपस्थितायाश्च मे दुर्निमित्त-

कृत्वोर्मिलित', मा [illegible] इति [illegible] कुमारस्यैव समीपं नीता मा [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भावः, [illegible] कुलातिपातं परिहरन् [illegible] [illegible] [illegible] आगत एव [illegible] [illegible] [illegible] एव। [illegible] [illegible] [illegible] भावः।

(क) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भावः, [illegible] तं कुमारं [illegible] [illegible] जीविता [illegible], [illegible]।

একাকী কি করিয়াছেন ; দেখ, তিনি, দূরে ফিরিয়া সেই কুমারেরই নিকট আগ্রহে লইয়া যাইতেছেন, এই সেই চন্দ্র, উদিত হইয়াছেন ; ইনি সকল বিতর্ক খণ্ডন করিয়াছেন, সকল প্রকার উপায় নিষ্ফল করা দূর করিয়াছেন, সকল প্রতিবন্ধক সরাইয়া দিয়াছেন, সকল আশঙ্কা দূরে ফেলিয়াছেন, লজ্জা নিবৃত্ত করিয়াছেন, আপনা আপনিই তাঁহার নিকট গমন করায় যে লঘুতা প্রকাশ পায়, সে দোষ ঢাকিয়া ফেলিয়াছেন এবং কালক্ষেপ করা দূর করিয়াছেন। (ক) অতএব উঠ, জীবিত থাকিতে থাকিতে যে কোন প্রকারে তাঁহার নিকট গমন করিয়া, ক্লেশদায়ক সেই প্রাণসখাকে জীবিত রাখি'; এই কথা বলিতে বলিতে, কামপীড়া বৃদ্ধি পাওয়ায় ঘর্ম নির্গত হইয়া আমার সকল অঙ্গ পিচ্ছল করিয়া ফেলিল ; এই অবস্থায় আমি সেই তরলিকাকেই অবলম্বন করিয়া কোন প্রকারে গাত্রোত্থান করিলাম।

(१) अनुगमनजीविता।

निवेदयमभ्युन्नन् दक्षिणं लोचनम्। उपजातशङ्का चाचिन्तयम्—'इदमपरं किमुपस्थापितं दैवेन' इति। (ग)

अथ नातिदूरोद्गतेन त्रिभुवनप्रासादप्रकाशप्रदीपायमानेन सुधासलिलमिवा- मिव (१) वमता चन्दनरसनिर्झरनिकरानिव क्षरता अमृतसागरपूरानिवोद्गिरता [illegible] शशलाञ्छनमण्डलेन [illegible] (२) ज्योत्स्नया भुवनान्तराणि, (घ) [illegible]

(ग) उपजातशङ्केति। किम्, [illegible] दक्षिणं लोचनं दुर्निमित्तसूचकम् [illegible]। किमपि [illegible], [illegible] भावः।

(घ) अथेति। [illegible]। त्रिभुवन- [illegible] भावः। [illegible]

[illegible]

(ङ) [illegible] भावः। [illegible]

(গ) উঠিয়া সেই দিকেই চলিলাম, তখন আমার দক্ষিণ নয়ন স্পন্দিত হইয়া অমঙ্গল সূচনা করিল, তাহাতে আশঙ্কা জন্মিল, তাই চিন্তা করিলাম যে, 'বিধাতা, এই আর একটি কিছু উপস্থিত করিলেন?'

(ঘ) তদনন্তর, চন্দ্রমণ্ডল, আকাশের অনতিদূরে উঠিয়া জ্যোৎস্নাধারা সমস্ত জগতের অন্ধকার প্লাবিত করিল; তখন সেই চন্দ্রমণ্ডলটি, ত্রিভুবনরূপ অট্টালিকার উপরিভাগের [illegible] অনুকরণ করিতেছিল, চূর্ণসংযুক্ত জলধারা যেন বহন করিতেছিল, চন্দনরসের প্রবাহসমূহ যেন নিঃসারণ করিতেছিল, অমৃতসমুদ্রের জলরাশি যেন উদ্গীরণ করিতেছিল এবং জ্যোৎস্নার অজস্র প্রবাহ যেন বমন করিতেছিল। (ঙ) জগতের লোক যেন

(१)...सूत्रपतिम। (२) [illegible]मानि।

क्षणे, (च) महावराह-दंष्ट्रामण्डलनिभेन शशिना क्षीरसागरोदरादिवोद्ध्रियमाणे महीमण्डले, (छ) प्रतिभवनमङ्गनाजनेन विकचकुमुदगर्भैश्चन्दनोदकैरुपक्रियमाणेषु चन्द्रोदयार्घेषु, (ज) कामिनी-प्रहित-सुरत-दूती-सहस्र-संकुलेषु राजमार्गेषु, (झ) नीलांशुकावगुण्ठनासु चन्द्रालोकभयपलायितासु तमस्तमःखण्डेष्विव नीलोत्पलवनाविष्टितासु इतस्ततः पलायमानास्वभिसारिकासु, (ञ) प्रतिकुसुममालम्बमानमधुकरमेचकतासु प्रबुध्यमानासु भवनदीर्घिकाकुमुदिनीषु (ट)

(च) महीति। महीमण्डले, महावराहस्य [illegible] दंष्ट्रामण्डलनिभेन [illegible] शशिना क्षीरसागरस्य [illegible] उदरादुद्ध्रियमाणे इव सति, [illegible] वर्णः [illegible] भावः। [illegible] सङ्कटः।

(छ) प्रतीति। प्रतिभवनं [illegible] अङ्गनाजनेन [illegible] विकचानां प्रफुल्लितानां कुमुदानां गर्भो येषु तैश्चन्दनोदकैः [illegible], चन्द्रोदयार्घेषु उपक्रियमाणेषु [illegible] सत्सु।

(ज) कामिनीति। राजमार्गेषु, कामिनीभिः प्रहिताः [illegible] सुरतदूत्यस्तासां सहस्रेण सङ्कुलेषु व्याप्तेषु सत्सु।

(झ) नीलेति। नीलांशुकैः [illegible] अवगुण्ठनं [illegible] शरीरवेष्टनं यासां तासु, [illegible] नीलोत्पलवनानां समाधिः [illegible] आविष्टितासु [illegible] अभिसारिकासु नायिकाविशेषेषु, [illegible] आलोकेन प्रकाशेन [illegible] पलायितासु सतीषु, इतस्ततः पलायमानासु सतीषु। [illegible] नीलोत्पलमलङ्कारः। अभिसारिकालक्षणं साहित्यदर्पणे—

"अभिसारयते कान्तं या मन्मथवशंवदा। स्वयं वाभिसरत्येषा धीरैरुक्ताभिसारिका॥"

(ञ) प्रतीति। कुसुमं कुसुमं प्रतीति प्रतिकुसुमं, [illegible] मधुकरमेचकतं [illegible] भवनदीर्घिकायाः कुमुदिनीषु, प्रबुध्यमानासु प्रकाशमानासु सतीषु। [illegible] चन्द्रोदयेन [illegible] भवनदीर्घिकावर्तीषु [illegible] परिवर्तनीयः।

[illegible] দান করিতেছিল এবং চন্দ্রালোকদর্শনের সুখ যেন অনুভব করিতেছিল। (চ) আদি-[illegible] যেন পৃথিবীমণ্ডলকে ক্ষীরোদসাগরের ভিতর হইতে উত্তোলন করিতেছিল। (ছ) প্রত্যেক গৃহে রমণীগণ, প্রস্ফুটিত-কুমুদ-যুক্ত চন্দনজলদ্বারা চন্দ্রোদয়ের উদ্দেশে অর্ঘ দান করিতেছিল। (জ) রাজপথগুলি কামিনীগণের প্রেরিত রতিদূতীগণে ব্যাপ্ত হইয়াছিল। (ঝ) অভিসারিকা নায়িকাগণ, নীলবর্ণ বসনে সমস্ত শরীর আবৃত করিয়া, নীলোৎপলের প্রকার [illegible] অন্ধকারের [illegible] করিতে থাকিয়া, চন্দ্রের আলোকমধ্যে লোকের দর্শনের ভয়ে উদ্বিগ্ন হইয়া চারিদিকে পলায়ন করিতে লাগিল। (ঞ) বাটীস্থিত দীর্ঘিকার কুমুদিনীগুলি প্রস্ফুটিত হইল, তাহাতে

स्फुटित-कुमुदवन-बहल-धूलि-धवलितोदरे निशा-नदी-पुलिनायमाने चन्द्रा-लोके, (१) (ट) चन्द्रोदयानन्दनिर्भरे महोदधाविव रतिरसमय इव मदमय इव विलासमय इव प्रीतिमय इव जीवलोके, (ठ) मणिमन्दिरगवाक्ष-निर्झरे प्रमोद-मुखर-मयूर-रव-रम्ये प्रदोषसमये, (ड) गृहीत-विविध-कुसुम-ताम्बूलाङ्गराग-पटवास-चूर्णया तरलिकयानुगम्यमाना, तेनैव मूर्च्छा-निहितेन विचित्रदामान्त-चन्दन-ललाटिका-भस्म-धूसर-कुचान्तरेण चन्दनरस-

(ट) स्फुटितेति। चन्द्रालोके आकाशे, स्फुटितस्य कुसुमवनस्य बहलधूलिभिः प्रचुरपरागैः धवलितं [illegible] सति, [illegible] नदी [illegible] भावः, तथा: पुलिनाय- माने [illegible] भावः। अत्र [illegible] [illegible] अलङ्कारः।

(ठ) चन्द्रोदयेति। [illegible] चन्द्रोदये आनन्दनिर्भरः [illegible] महोदधाविव जीवलोके [illegible], रतिरसमये इव मदमये इव, विलासमये इव तथा प्रीतिमये इव च सति। अत्र [illegible] अलङ्कारः, [illegible] [illegible] [illegible] पाठः [illegible]।

(ड) मणीति। [illegible] [illegible] सति। अत्र [illegible] अलङ्कारः।

(ढ) गृहीतेति। गृहीतानि विविधानि कुसुमानि ताम्बूलानि [illegible] [illegible] यया तया। मूर्च्छानिहितेन मूर्च्छाकाले [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

প্রত্যেক কুমুদের উপর মধুকরগণ আসিয়া বসিতে লাগিল। (ট) প্রস্ফুটিত কুমুদের রেণুতে আকাশের মধ্যস্থান ধবলবর্ণ করিয়া তুলিল, তাহাতে আকাশটি, রাত্রিরূপ নদীর পুলিনের ন্যায় বিরাজ করিতে লাগিল। (ঠ) চন্দ্রের উদয়ে আনন্দে পরিপূর্ণ প্রাণিগণ, মহাসমুদ্রের ন্যায় স্ফীত হইয়া, যেন শৃঙ্গারময়, উৎসবময়, বিলাসময় এবং হর্ষময় হইয়া উঠিল। (ড) চন্দ্র-কান্তমণিরূপ পয়নালা হইতে জল-নিঃসরণ হইতে লাগিল, এই ভাবে—আমোদবশতঃ শব্দায়মান ময়ূরগণের রবে মনোহর হইয়া প্রদোষকাল উপস্থিত হইল। (ঢ) এমন সময়ে আমি, পত্রাবলির কিরণে নির্মিতের ন্যায় একখানি রক্তবর্ণ বসনে অবগুণ্ঠন করিয়া সেই অট্টালিকার উপর হইতে নামিলাম; তখন তরলিকা নানাবিধ পুষ্প, তাম্বুল, অঙ্গলেপনদ্রব্য ও পটবাস-চূর্ণ লইয়া আমার পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতে লাগিল। তরলিকা, আমার ললাটে যে

(১) চন্দ্রাতপে।

[illegible]नेष्टिनाद्यैव, (१) तथैव च तया कण्ठस्थितयाक्षमालया श्रवणशिखर-चुम्बिन्या च पारिजातमञ्जर्या, [illegible] कर्णशिरो-[illegible]मुखकमला [illegible] तस्मात् प्रासादशिखराद-वातरम्। (ङ)

अवतीर्य च पारिजातकुसुम-मञ्जरी-परिमलाकृष्टेन [illegible]पवनेन कुसुम-[illegible] मधुकरजालेन नीलपटावगुण्ठनविभ्रममिव (२) कुर्वता-[illegible]नुबध्यमाना प्रमदवनपक्षद्वारेण निर्गत्य तत्समीपमुपसृतवती। (च)

प्रयान्ती च तदभिमुखम[illegible]परिचितं (३) [illegible]माचरन्ती (४) [illegible],

[illegible]। [illegible] किञ्चित् [illegible]। [illegible] पारिजातमञ्जरी [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]

(च) [illegible]। [illegible]

(छ) प्रयान्तीति। [illegible]

[illegible] দিন দিয়াছিল, তখন তাহা কিছু দৃঢ় হইয়া গিয়াছিল, সুতরাং আলুলায়িত কেশকলাপ তাহার উপরে সংলগ্ন হইয়া ধূসরবর্ণ হইয়াছিল; আর সুন্দর সময়ে আমার শরীরে তরলিকা, যে চন্দন লেপন করিয়া দিয়াছিল, তখনও তাহা আর্দ্র ছিল এবং সেই মাত্র আমার কেশবিন্যাস হইয়াছিল; সেই [illegible] মালা তখনও সেই ভাবেই আমার গলায় ছিল এবং সেই পারিজাত-মঞ্জরীটিও সেই ভাবেই আমার কানের উপরে ছিল; আমি নামিলাম বটে, কিন্তু আমার কোন পরিজনও আমাকে দেখিতে পাইল না।

(চ) আমি নামিয়া, উদ্যানের পার্শ্ব-দ্বার দিয়া নির্গত হইয়া তাঁহার নিকট চলিলাম; তখন মধুকরগণ, পারিজাতকুসুম-মঞ্জরীর সৌরভে আকৃষ্ট হইয়া, উদ্যানটি শূন্য করিয়া এবং কুসুমবন পরিত্যাগ করিয়া, নীলবর্ণ বস্ত্রের অবগুণ্ঠন-বোরখাই যেন সম্পাদন করিতে করিতে আমার পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতে লাগিল।

(ছ) আমি যাইবার সময়ে, আপনাকে কেমন তরলিকা-সহায় ও অন্য-পরিজন-বিহীন

(१) [illegible]तैव। (२)...[illegible]। (३) तदभिमुखम[illegible]। (४) [illegible]।

प्रियजनमभिसरत्प्रवृत्तस्य जनस्य किमिव कृत्यं बाह्येन परिजनेन (ग)। मन्मथेन एव परिजनलीलामुपदर्शयन्ति। तथाहि, समारोपितशरसन्धान-व्यापारोऽनुसरति कुसुमायुधः, दूरप्रसारितकरः करमिव कर्षति शशी, मलयपवन-प्रयात् पदे पदेऽवलम्बते रागः, लज्जा [illegible] कृत्वा पृष्ठे सर्वेन्द्रियैर्धावति हृदयम्, निश्चयमारोप्य नयत्युत्कण्ठा' इति (घ)। प्रकाशमवादम्—'अयि सुरभिणि! यदि नाम माधविकायमिन्दुकरसरमपि करोषि (१) [illegible]

[illegible] "[illegible]" इति [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible]। [illegible] 'चन्द्रकी' इति [illegible]। प्रियजनस्य [illegible] प्रवृत्तस्य जनस्य [illegible], बाह्येन परिजनेन [illegible] किं नाम कृत्यं कर्त्तव्यं [illegible], अपि तु किमपि [illegible]।

(घ) ननु तर्हि [illegible] परिजनकार्य्यैः कैः सम्पादितमित्याह [illegible]। एते मन्मथादयः कुसुमायुधादयः परिजनस्य लीलां [illegible]। समारोपितशरसन्धाने [illegible] कुसुमायुधः, अनुसरति। [illegible] दूरे प्रसारितः करः [illegible] कर्षतीव [illegible]। [illegible] पदे पदे प्रतिपदक्षेपं अवलम्बते धारयति। [illegible] लज्जा पृष्ठे [illegible] इन्द्रियैः [illegible] पुरः धावति [illegible], तथा निश्चयमारोप्य [illegible] नयति [illegible]।

(१) [illegible]। अपि नाम [illegible] किरेव [illegible] [illegible] [illegible]। तथा [illegible] [illegible]।

দেখিয়া চিন্তা করিতে লাগিলাম—'যে ব্যক্তি, প্রিয়জনের নিকট অভিসারে প্রবৃত্ত হয়, তাহার আবার বাহিরের পরিজনে প্রয়োজন কি?। (ঘ) কারণ—ইহারাই পরিজনের কার্য্য-সম্পাদন করিয়া থাকেন। যথা,—কামদেব, ধনুকে বাণ সন্ধান করিয়া অনুগমন করিতে থাকেন; চন্দ্র, দূরে কর প্রসারিত করিয়া হস্তধারণ করিয়াই যেন নিয়া যাইতে থাকেন; পড়িয়া যাইবার ভয়ে, অনুরাগ আসিয়া প্রত্যেক পদক্ষেপে ধারণ করিতে থাকে; লজ্জা, পশ্চাতে পিছনে রাখিয়া অন্যান্য ইন্দ্রিয়ের সহিত, অগ্রে অগ্রে ধাবিত হইতে থাকে এবং 'নিশ্চয়ই প্রিয়জনের সহিত মিলন হইবে' এইরূপ নিশ্চয় বাসনা জন্মাইয়া উৎকণ্ঠা আনিয়া দিয়া যাইতে থাকে।' (ঙ) তাহার পর প্রকাশ করিয়া বলিলাম—'সুরভিকে! এই [illegible] [illegible], আমার [illegible] তাঁহাকেও [illegible] কেশাকর্ষণপূর্ব্বক আকর্ষণ করিয়া আমার দিকে কিছু পদ

(১) [illegible]

धीत् (द)। इत्येवंवादिनीमेव मामसौ विहस्याब्रवीत्—"भर्तृदारिके! मुग्धासि, किमत्र तेन कृतेन। अयमात्मनैव तावन्मदनातुर इव भर्तृदारिकायां (१) नानाचेष्टाः करोति। तथाहि प्रतिबिम्बच्छलेन स्वेदसलिलकणिकाचितं (२) चुम्बति कपोलयुगलम्, आबध्नाति पयोधरभारे निपतति, प्रस्फुरितकरः स्पृशति रशनावलिमणीन्, निर्मल-नख-सङ्क्रान्तमूर्तिः पादयोः पतति (ध)। किञ्चान्यत् मदनातुरस्येव वपुरप्यस्य चन्दनानुलेपपाण्डुतां वहति,(३) कुसुम-कलापवत् कम्पम् धत्ते, प्रतिमाव्याजेन स्फटिकमणिभूमिषु निपतति,

(द) इतीति। [illegible] मुग्धा सरलबुद्धिरसि, [illegible] [illegible]

(न) किञ्चेति। [illegible]

আনিবে কি?' (দ) আমি এইরূপ বলিতেছিলাম, তখন তরলিকা হাস্য করিয়া আমাকে বলিল—"রাজকন্যে! আপনি সরলবুদ্ধি কি না, তাই এইরূপ বলিতেছেন; প্রকৃতপক্ষে সেই ব্যক্তি দ্বারা তাহার প্রয়োজন কি? দেখ যে, নিজেই কামাতুরের ন্যায় আপনার প্রতি সেই সকল ব্যবহার করিতেছে। দেখুন—ঘর্ম-জল-বিন্দু-সমূহে আর্দ্র আপনার গণ্ডযুগলকে প্রতিবিম্বচ্ছলে যেন চুম্বন করিতেছে, লাবণ্যযুক্ত স্তনমণ্ডলে যেন লাগিয়া পড়িতেছে, প্রস্ফুরিত-করে আপনার কাঞ্চীদামের মণিগুলিকে স্পর্শ করিতেছে এবং আপনার নির্মল নখসমূহে সংক্রান্ত হইয়া চরণযুগলেই যেন পতিত হইতেছে। (ন) বিশেষতঃ কামাতুরের ন্যায় চন্দ্রের শরীরটা, কাম-সন্তাপ-শান্তির জন্যই যেন চন্দনের শুভ্র প্রলেপের ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ বহন করিতেছে, কুসুম-বনের ন্যায় [illegible] কম্পন ধারণ করিতেছে। প্রতিবিম্বচ্ছলে স্ফটিকময় ভূমিতে লুণ্ঠিত হইতেছে, কেতকী পুষ্পের [illegible] কেশরের ন্যায় ধূসরবর্ণ-চরণ হইয়া প্রতিবিম্বচ্ছলে

(१) भर्तृदारिकायाः। (२) ···चितं [illegible] (३) भवति [illegible]

[illegible]-केसर-धूसर-पादः कुमुद-सरांसि [illegible], दक्षिणमीनराशीन् [illegible] [illegible] [illegible] विघटित[illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । (क)

तत्र च मार्ग-लता कुसुम-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-(१) चन्द्रकान्त[illegible] [illegible], (२) [illegible] [illegible] च [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

(ख) [illegible]

কুমুদপূর্ণ সরোবরে অবগাহন করিতেছে, দক্ষিণদিকে মীন রাশির উপরে [illegible] আরোহণ করিতেছে এবং রাত্রি উপস্থিত হওয়ায় চক্রবাক[illegible], যে সহচরের নিকট হইতে চলিয়া গিয়াছে, সেই সহচরগণকে যেন [illegible] করিতেছে।' এই প্রকার এবং সেই সময়ের উপযুক্ত অন্যান্য অনেক প্রকার আলাপ করিতে করিতে [illegible] সহিত সেই [illegible] করিয়া চলিলাম।

(গ) সেখানে চন্দ্রের উদয়ে কৈলাস পর্বতের [illegible] হইতে চন্দ্রকান্তমণির জল নির্গত হইতেছিল, [illegible] পথের [illegible] কুমুদের রেণুতে আমার চরণযুগল ধূসরবর্ণ হইয়া গিয়াছিল,

(১)—[illegible]। (২) [illegible]।

सुधाधवलम् (ख)। हरिणीविषमवल्लुरवेण च प्रथममेव मनसाऽभिहितमह्ना, तेन सुतरामवदीर्णहृदयेव विसर्पद्विस्मयमन्तः कम्पमानेव विवर्णमानसस्मिता "तरलिके! किमिदम्" इति ससम्भ्रममभिदधाना वेपमानाभ्यन्तरहृदय-मुना (१) धवलितपिहितमनुष्ठाम्। (ग)

अथ निशीथसमयाद् रावेण [illegible] "हा हतोऽस्मि, हा दग्धोऽस्मि, हा वञ्चितोऽस्मि, हा किमिदमापतितम्, किं वृत्तम्, उत्सन्नोऽस्मि, (२)। दुरात्मन्! मदनपिशाच! पाप! निर्घृण! किमिदमकार्य-मनुष्ठितम्? आः पापे! दुष्टतरलिके! दुर्विनीते! महाश्वेते! किमनेन

(ख) हरिणीति। किञ्च। [illegible], [illegible] [illegible]। [illegible]।

(ग) अथेति। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। हतोऽस्मि [illegible]। दग्धोऽस्मि [illegible]। वञ्चितोऽस्मि [illegible]। [illegible]। [illegible]। निर्घृण! [illegible]। [illegible]

সুতরাং সেই বনে চক্ষু প্রসারণ করিয়াছিলাম ;— এমন সময়ে, তিনি যে স্থানে ছিলেন, অচ্ছোদ সরোবরের সেই পশ্চিমতীরে, হেমনিস্বন অস্পষ্ট কোন পুরুষের যেন রোদনধ্বনি শুনিতে পাইলাম। (গ) এদিকে প্রথমেই দক্ষিণ-চক্ষু স্পন্দিত হইয়া আমার মনে আশঙ্কা জন্মাইয়াছিল, সুতরাং আমার সেই রোদনধ্বনি শুনায় বক্ষ যেন বিদীর্ণ হইয়া গেল এবং অন্তরাত্মা খিন্ন হইয়া মনের নিকট যেন কোন বিপদের সংবাদ বলিতে লাগিল, তখন আমি ভয়ের সহিত বলিলাম—'তরলিকে! এ ব্যাপারটা কি'? আমার কিন্তু শরীর কাঁপিতে লাগিল— এই অবস্থায় আমি অতি তাড়াতাড়ি সেই দিকে যাইতে লাগিলাম।

(ঘ) তদনন্তর, খানিক নিকটবর্তী স্থান হইতেই শব্দ অবধারণ করিতে পারিয়াছিলাম যে, কপিঞ্জল উচ্চৈঃ স্বরে আর্তনাদ করিতেছেন—"হায়! মারা গেলাম, হায়! কপাল পুড়িল, হায়! বঞ্চিত হইলাম, হায়! এ কি উপস্থিত হইল, কি ঘটিল, এ যে একেবারে উৎসন্ন হইলাম। দুরাত্মন্! মদনপিশাচ! পাপিষ্ঠ! নির্দয়! এ কি অকার্য্য অনুষ্ঠান করিলি? আঃ পাপীয়সি! পাপকারিণি! দুর্বিনীতে! মহাশ্বেতে! এ তোর কি অপকার করিয়াছিল?

(१) [illegible]। (२) [illegible]।

[illegible]ऽहतक ? पाप ! दुर्मते ! क्रूर ! चाण्डाल ! (१) कृतार्थोऽसि ?, इदानीमपगतदाक्षिण्य ! दक्षिणानिलहतक ! पूर्णस्ते मनोरथः, कृतं यत्-कर्तव्यं ? (२) वहेदानीं यथेष्टम् (३) हा भगवन् ! श्वेतकेतो ! पुत्रवत्सल ! न वेत्सि मुषितमात्मानम्, हा धर्म ! निष्परिग्रहोऽसि, हा तपः ! निराश्रयमसि, हा सरस्वति ! विधवासि, हा सत्य ! अनाथमसि, हा सुरलोक ! शून्योऽसि (४) सखे ! प्रतिपालय माम्, अहमपि भवन्तमनुयास्यामि, न शक्नोमि भवन्तं (५) विना क्षणमप्यवस्थातुमेकाकी । अपरिचित इवाद्यपूर्वं इवास्य [illegible] प्रयासि, [illegible], [illegible] न [illegible], [illegible]

[illegible] विनाशकाले, [illegible] दर्शं [illegible] भावः । चाण्डाल ! [illegible] ॥ कृतार्थोऽसि [illegible] भावः । इदानीं [illegible] पूर्णमिति भावः, [illegible] दाक्षिण्यं [illegible] मनोरथं, [illegible] दक्षिणवातो ! । [illegible] दक्षिणदिङ्मलयानिलेनैकेनं [illegible] [illegible] । इदानीं यथेष्टं [illegible] ।

(३) [illegible] । [illegible] मुषितं [illegible] न वेत्सि [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] भावः । [illegible] ! [illegible] भावः । [illegible] । सुरलोक ! [illegible] ॥

(४) [illegible] इति । प्रतिपालय [illegible] । [illegible] । "[illegible]" इति [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] भावः । [illegible] भावः । [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] इति [illegible] । [illegible] भावः [illegible] । [illegible]

হা পাপিষ্ঠ ! দুর্মতি ! ক্রূর ! চণ্ডাল ! কৃতার্থ হইয়াছ ? হে দক্ষিণবাতো ! এখন তোমার যে দাক্ষিণ্য দূরীভূত হইয়াছে, মনের অভিলাষ পূর্ণ হইয়াছে, যাহা করিবার তাহা করিয়াছ, এখন ইচ্ছানুসারে বহিতে থাক। (৩) হা ! ভগবন্ শ্বেতকেতো ! পুত্রবৎসল ! আপনার সর্বস্ব অপহৃত হইয়াছে, তাহা জানিতে পারিতেছেন না। হা ধর্ম ! তুমি এখন কাহাকে গ্রহণ করিবে ? হা তপঃ ! তুমি এখন নিরাশ্রয় হইলে, হা সরস্বতি ! তুমি বিধবা হইলে, হা সত্য ! তুমি অনাথ হইলে, হা স্বর্গলোক ! তুমি শূন্য হইলে। (৪) সখে ! পুণ্ডরীক ! আমার অপেক্ষা কর, আমিও তোমার অনুগামী হইব। কারণ—তোমাকে ছাড়িয়া আমি একাকী ক্ষণকালও থাকিতে পারিব না। যাহার সহিত পরিচয় [illegible] নাই এবং যাহার সঙ্গে কখনও দেখা হয় নাই—এইরূপ লোকের ন্যায় তুমি কেন আজ আমাকে [illegible]

(१) चण्डाल ॥ (२) क्वचित् वहेति पाठः । (३) क्षणम् ।

कं शरणमुपैमि। अन्धोऽस्मि संवृत्तः, शून्या मे दिशो जाताः, निरर्थकं जीवितम्, व्यर्थमधीतं तपः, निःसुखाश्च लोकाः। किम् वद परि नमामि, कमालपामि। (१) कमिह देवि मे प्रतिवचनम्. (२) क नाममोपरि कुदयोपेम. क वा स्मितपूर्वमभि-भाषिता च" इत्येतानि वाक्यानि च विलपन्तं चापि [illegible]। (अ)

तत्र श्रुत्वा पतितैरिव प्राणैर्हृतैरिव सुश्लोकतया [illegible] [illegible]-म् [illegible] (१) [illegible]-सम-विषम-भूमिभाग-विन्यस्तैः पादपल्लवैः [illegible] पदे पदे, [illegible] जीवयन्निव तं प्रदेशं गत्वा, (अ)

[illegible] "[illegible]" [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]

(अ) तत्रेति। [illegible] [illegible]

[illegible]। [illegible]

[illegible] করিয়া যাইবেন ? তোমার এই অভাব [illegible] আর কোথা হইতে আসিল ? বল, তোমাকে ছাড়িয়া কোথায় যাইব, কাহার নিকট প্রার্থনা করিব এবং কাহার শরণ লইব ; আমি অন্ধ হইয়াছি, আমার সকল দিক শূন্য বলিয়া বোধ হইতেছে জীবন অনর্থক মনে করিতেছি, তপস্যার প্রয়োজন নাই এবং [illegible] কোথাও সুখ নাই। আমি কাহার সহিত [illegible] করিব এবং কাহার সঙ্গে আলাপ করিব। ভাই ! উঠ, আমার কথার উত্তর দাও, আমার উপরে তোমার সেই [illegible] আর কোথায় গেল এবং [illegible] করিয়া সেই কথা বলা আর কোথায় গেল"—এইরূপ কপিঞ্জল এই সকল ও অন্যান্য অনেক রকম বিলাপ করিতেছিলেন।

(২) তাহা শুনিয়া আমার প্রাণ যেন বহির্গত হইতে উদ্যত হইল, আমি দূর হইতেই [illegible] উচ্চৈঃস্বরে রোদন করিয়া উঠিলাম, সরোবরের তীরবর্তী লতাতে সংলগ্ন হইয়া আমার পরিহিত ও উত্তরীয় বস্ত্র ছিঁড়িয়া যাইতে লাগিল, অপরিচিত সমতল ও বিষমতল ভূমিতে শক্তি অনুসারে [illegible] পদক্ষেপ করায় প্রত্যেক পদক্ষেপেই পড়িয়া যাইতে লাগিলাম

(१) [illegible] वाणी [illegible], पाठः [illegible] (२) [illegible] (३)...[illegible]...।

तरङ्गोत्सङ्गसमीपवर्त्तिनि शिशिरशीकरासारवर्षिणि मणिमयशिलातले विरचितं कुमुद-कुवलय-कमल-विविध-वनकुसुम-सुकुमारं (१) मृणालमयं कुसुमशर-शायकमयमिव शयनमधिशयानम्, (ख) अतिनिस्पन्दतया मत्पदशब्दमिवाकर्णयन्तम्, (ग) अन्तःक्षोभ-शमित-(२) मदन-सन्तापतया [illegible]-सुखमिव, (घ) मनःक्षोभ-प्रतिबिम्ब-प्राणप्रतिनिधिमिव, (ङ) अतिगम्भीर-हृदयमपि 'स्वल्पानि सुखानीति' कथयन्तमिवाधरेण, (च) कुसुम-बाण-परि-

(ख) शर इति । [illegible]

(ग) अतीति । [illegible]

(घ) अधरेति । [illegible]

(ङ) मन इति । [illegible]

(च) अतीति । [illegible]

এবং কেহ যেন আমাকে উৎপাটন করিয়া দিয়া গেল—এই ভাবে আমি সেই স্থানে থাকিয়া, সেই সময়েই যাঁর যৌবন চলিয়া গিয়াছে—এই অবস্থায় সেই মহাকায় মুনিকুমারকে দেখিতে পাইলাম। (খ) সরোবরের তীরের নিকটে, শীতল-জলবিন্দুবর্ষী সুন্দর একখানা চন্দ্রকান্ত-মণির উপরে মৃণালের একখানি শয্যা নির্মিত ছিল; রক্তোৎপল, নীলোৎপল, পদ্ম ও নানাবিধ বনফুলে সেই শয্যাখানি অতি কোমল হইয়াছিল, সুতরাং কামদেবের বাণসমষ্টি যেন তাহা নির্মিত হইয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছিল; সেই শয্যার উপরে তিনি শয়ন করিয়াছিলেন। (গ) অত্যন্ত নিস্পন্দভাবে ছিলেন বলিয়া আমার পদশব্দই যেন শুনিতেছিলেন; (ঘ) মনের ক্ষোভে মদন-সন্তাপ নিবারিত হওয়ায় তখন যেন সুখে [illegible] পাইতেছিলেন; (ঙ) মনের [illegible] প্রাণের প্রতিনিধিস্বরূপ কুসুম-ধনুই যেন অবস্থান করিতেছিলেন। (চ) [illegible] প্রকাশ পাইতেছিল, সুতরাং তাহা তাহা

(१) [illegible] । (२) अन्तःक्षोभशमित..., अन्तःक्षोभशमित... ।

वर्तितरेखतया पृष्ठभाग-विपनिर्गमेदम-रुधिर-विमुक्त-हृदय-[illegible]-नख-मयूख-जालेन चिरच्छिन्नमिव मन्मथशरैः, (ग) उपचार-पाण्डुतया (१) [illegible] (२) मदनचन्द्रमसेव [illegible] ललाटिकम्, (१) (घ) 'मत्तः प्रियतरः (४) तवापरो जनो जातः' इति कुपितेनेव जीवितेन परित्यक्तम्, (ङ) [illegible] (५) [illegible], (च)

(ग) [illegible] ।

(घ) [illegible] ।

(ङ) [illegible] । [illegible] ।

(च) [illegible] ।

যেন বলিতেছিলেন যে, "তোমার জন্যই আমার এই অবস্থা হইয়াছে"। (গ) হৃদয়ের প্রতি বিদ্বেষবশতঃ যেন পরিবর্দ্ধিত করিয়া ধারণ করিয়াছিলেন, তাহাতে [illegible] উপরে হৃদয় বিদ্ধ করিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, কামদেব বিষম [illegible] উপরে যে সব শরাঘাত করিয়াছিলেন, তাহার মধ্যে [illegible] সেই হৃদয় [illegible] যেন [illegible] করিয়া ছিন্ন করিয়া দিয়াছে। (ঘ) কপিঞ্জল, [illegible] ললাটে একটি তিলক [illegible] করিয়া দিয়াছিলেন, সেই [illegible] পাণ্ডুবর্ণ হইয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল, যেন [illegible] জন্য, [illegible] একটি কথা অক্ষরে উৎকীর্ণ পাইয়াছে। (ঙ) 'আমা হইতেও তোমার অধিক প্রিয় অন্য লোক হইয়াছে' ইহা মনে করিয়া ক্রুদ্ধ হইয়াই যেন জীবন তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়াছিল। (চ) নিকটে যেন [illegible] সহিত প্রায় পরিত্যাগ করিয়া

(१) [illegible] । (२) [illegible] ।

(३) [illegible] ।

(४) [illegible] । (५) [illegible] ।

অনঙ্গযোগবিদ্যামিব ধ্যায়ন্তম্, (ক) অপূর্বপ্রাণায়ামমিবাভ্যস্যন্তম্, (খ) [illegible] (গ) রচিত-[illegible]ললাটত্রিপুণ্ড্রকম্, (ঘ) [illegible]-মৃণাল-বিসসূত্র-যজ্ঞোপবীতম্, (ঙ) [illegible]-কদলী-[illegible]-কৌপীনম্, (চ) একাবলীম্[illegible]মালম্, (ছ) [illegible]-কর্পূর-[illegible]-ভস্ম-[illegible], (জ) [illegible]-প্রতি-

---

(ক) অনঙ্গেতি। [illegible] যোগবিদ্যা তাং ধ্যায়ন্তমিব, [illegible] ভাবঃ। [illegible]

(খ) অপূর্বেতি। অপূর্বঃ [illegible] প্রাণায়াম[illegible] [illegible]

(গ) [illegible] [illegible] পূর্বপাত্রং [illegible] "[illegible]" ইতি [illegible]।

(ঘ) রচিতেতি। রচিতং [illegible] ত্রিপুণ্ড্রকং যস্য তম্।

(ঙ) [illegible] বিসসূত্রং [illegible] যজ্ঞোপবীতং যস্য তম্। [illegible]

(চ) [illegible] কৌপীনং যস্য তম্। পূর্ববদলঙ্কারঃ।

(ছ) একেতি। [illegible] বিস্তারা [illegible] যস্য তম্। পূর্ববদলঙ্কারঃ।

(জ) [illegible] কর্পূর[illegible] [illegible]। পূর্ববদলঙ্কারঃ।

পাটচ্ছত্র-দ্বয় অনুভব করিতেছিলেন। (ক) কামদেবের যোগবিদ্যাকে যেন ধ্যান করিতেছিলেন। (খ) অদ্ভুত প্রাণায়াম যেন অভ্যাস করিতেছিলেন। (গ) কামদেবের আবার আসন [illegible] করিয়া এতদ্রূপেই যেন তাঁহার [illegible] পারিতোষিক গ্রহণ করিয়াছিলেন। (ঘ) কামদেব, তাঁহার ললাটে চন্দনের তিলক উপরে একটি ত্রিপুণ্ড্র অঙ্কিত করিয়া দিয়াছিলেন। (ঙ) তিনি, স্বচ্ছ মৃণালসূত্রময় যজ্ঞোপবীত ধারণ করিয়াছিলেন। (চ) কদলীবৃক্ষের অভ্যন্তরের পত্ররূপ একখানা মনোহর কৌপীন, তাঁহার কটিদেশে [illegible]। (ছ) আবার সেই একাবলী মুক্তার মালাই, তাঁহার স্কন্ধ দেশের মালা হইয়াছিল। (জ) ঘন ও নির্মল কর্পূরের রেণুরূপ ভস্ম তাঁহার সর্বাঙ্গে

मर (१): मनोहरम्, (ञ) मनोभव-शर-वेदनाभयात् (२) [illegible] कामयमानम्, (ट) (३) अविरत-(४) रोदमानाभ्यामेव चक्षुर्भ्याम् (५) [illegible] वारिभिरिव मदन-शर-शल्य-वेदना-कूणित [illegible] (६) "कठिनहृदये! (७) दर्शनमात्रकेणापि न [illegible] जनः" इति सस्पृहं मामुपालभमानामिव चक्षुषा, (ठ) [illegible] अन्तःप्रविष्टे- [illegible] (ड) [illegible]

[illegible]

হিল। (ঞ) [illegible] কামদেবের [illegible] (ট) [illegible] (ঠ) [illegible] (ড) [illegible]

(१)...[illegible] (२)...[illegible]

(३) [illegible] (४) [illegible]

(५) [illegible] (६) [illegible] (७) [illegible]

नाम(१) हृदयनिहितेन वामपाणिना "प्रसीद, मा गाः सर्वं मानसी ! न गन्तव्यम्" इति हृदयस्थितां मामिव धारयन्तम्, (ङ) इन्दुरिव च नवसमुद्गतस्तुहिनतया चन्दनमिव नखनीलालोकितेन चन्द्रातपमिव निवारयन्तम्, (च) चलितवाणितेन च चिरोद्गतजीवितमार्गमिवोद्वीक्षितेन विलोकयता तपःसुहृदा कमण्डलुना समुपेतम्, (छ) कण्ठाभरणीकृतेन च यथास्वचरितेन रजनीकर-(२) किरणपाशेनेव संयम्य लोकान्तरमुपनीयमानम्, (३) (ज) कपिञ्जलेन महर्षिणाप्

(ङ) मन्मथेति । मन्मथव्यथया विघटमाने विदार्यमाणे हृदये निहितः स्थापितेन वामपाणिना करेण । हे मानसि ! मत्कान्ते ! मा गाः सर्वं निर्गच्छ हृदयात् इति, मया हृदयस्य मध्यं मानसमागतेन जीवाहरणैः सह तथापि अमधरवत्यादिति भावः । इति सन्दिशन्निवाभिप्रायेण, हृदयस्थितां चित्तस्थायिनीं मां धारयन्तमिव अवरुन्धन्तमिव । अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः । एतदनुरूपः श्लोको यथा मेघे—

"मनोहरीं निरतीतुमानां तद्विकलहृत् । निविडदैवे ॥
निदा यदि दारुणतया नैव मे इतरागृनिः मानवाः सर्व नराः ॥"

(च) इतरेवेति । किम्, नखमयूखैर्नृपुरतया विकलतया हेतुना चन्द्रहृदयं सवनेन स्थितेन, चलनीकृतेन इतरेव दक्षिणेन पाणिना, चन्दनस्य धारार्थं चलीकृतोऽधमकरपतीर्थ निवारयन्तमिव स्थितम् । अत्र क्रियोत्प्रेक्षयोर्मिथोऽनिरपेक्षतया संसृष्टिः ।

(छ) चलितेति । किम्, उद्ग्रीवेण चलतपस्विचिरोद्गतस्य जीवितस्य मार्गं विलोकमानेन सता चलित-स्थितेन तपःसुहृदा कमण्डलुना समुपेतम् । अत्र स्वार्थविलासायामतिश्रिताधीनात्रै वक्रोक्त्यादिसमासेन सङ्करः ।

(ज) कण्ठेति । किम्, कण्ठाभरणीकृतेन यथास्वचरितेन उपलक्षितं, चन्द्रस्य रजनीकरस्य, चन्द्रस्य किरण एव पाशस्तेन संयम्येव बद्ध्वेव यमेन लोकान्तरमुपनीयमानम् । अत्र निरपेक्षैकवाक्यस्थितीनां क्रियोत्प्रेक्षादीनां सङ्करः ।

জীবন অপহরণ করিবার জন্যই যেন কণ্ঠগত-প্রবিষ্ট চন্দ্রকিরণের ন্যায় গলদেশে বিলম্বমান নির্গত হইতে থাকিয়া তাঁহার সমুদয়াংশ চন্দ্রবর্ণ করিয়াছিল। (চ) কামবেদনায় তাঁহার হৃদয় বিদীর্ণ হইতেছিল,—সুতরাং তাহার উপরে তিনি বাম পাণিকমল সংস্থাপন করিয়া, হৃদয়বর্তিনী আমাকে এই অভিপ্রায়েই যেন অবরুদ্ধ করিতেছিলেন যে, 'হে প্রাণেশ্বরে ! প্রসন্ন হও, প্রাণের সহিত তুমিও চলিয়া যাইও না'। (ছ) উত্তানভাবে স্থিত দক্ষিণ হস্ত, নখের কিরণে অসমাপ্ত হওয়ায় চন্দনের রস যেন নিঃসারিত করিতেছিল, আর তিনি যেন সেই রসে চন্দ্রের কিরণ নিবারণ করিতেছিলেন। (জ) তপস্যার বন্ধু একটি কমণ্ডলু, নিকটে উদ্গ্রীব হইয়া থাকিয়া, তাঁহার অচির-নির্গত জীবনের পথই যেন দেখিতেছিল। (ঝ) কপিঞ্জল, তাঁহার কণ্ঠদেশে একটি মৃণালবলয়ের আরোপণ করিয়া দিয়াছিলেন, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, যম

(१) नखमयूखवारिविक्षेपण... । (२) रजनिकर... । (३) नीयमानं ।

'असाम्प्रतम्' इत्युपालम्भेन विमुखीभूतप्राणोऽपि कपिञ्जलेन कण्ठे परिष्वक्तम्, तत्क्षणविगतजीवितं तमहं पापकारिणी मन्दभाग्या महाभागमद्राक्षम्। (ङ)

उत्पन्नमूर्च्छान्धकारा च पातालतलमिव प्रविशन्ती तदा क्वागमम्, किमकरवम्, किं व्यलपम्, इति सर्वमेव नाज्ञासिषम् (च)। असवश्च मे तस्मिन् क्षणे किमतिकठिनतया वज्रमयहृदयस्य, किमनेकदुःखसहस्रसहिष्णुतया हतशरीरकस्य, किं विहितत्वात् दीर्घशोकस्य, किं भाजनतया जन्मान्तरोपार्जितस्य दुष्कृतस्य, किं दुःखदाननिपुणतया दग्धदैवस्य, किमेकान्तवामतया दुरात्मनो मकरकेतनस्य, केन हेतुना नोदक्रामन्निति तदपि न जानामि (छ)। केवल-

---

(ङ) असाम्प्रतमिति। [illegible] विमुखीभूतोऽपि [illegible], "असाम्प्रतमनुष्ठानम्" [illegible]। [illegible] कण्ठे परिष्वक्तम् [illegible]। पापकारिणी [illegible], मन्दभाग्या [illegible] एव [illegible] च [illegible]। महाभागं [illegible]।

(च) उत्पन्नेति। [illegible], पातालतलं [illegible]। अत्र [illegible]।

(छ) असवश्चेति। [illegible]। किम्, [illegible] किं [illegible]। हतशरीरकस्येति [illegible]। [illegible]। जन्मान्तरोपार्जितस्य [illegible]। [illegible] केन हेतुना [illegible]। [illegible]। [illegible] एव [illegible]।

যেন চন্দ্রের কিরণরূপ রজ্জুদ্বারা তাঁহাকে বন্ধন করিয়া লোকান্তরে নিয়া যাইতেছেন। (ঙ) কপিঞ্জল আমাকে দেখিয়া হস্ত উত্তোলন করিয়া "এখনই ইহার মৃত্যুবিধান করা উচিত হয় নাই" এইরূপ আক্ষেপ করিতে করিতে, তাঁহার কণ্ঠদেশে আলিঙ্গন করিয়াছিলেন; তখন কপিঞ্জলের অবলম্বন, পূর্ব্বাপেক্ষা শিথিল হইয়া নির্গত হইয়াছিল; তখনই মাত্র তাঁহার জীবন গিয়াছিল। আমি পাপিষ্ঠা, আমার ভাগ্য মন্দ; তাই আমি সেই মহাভাগ্যবান্‌কে সেই অবস্থায় দেখিয়াছিলাম।

(চ) তাহার পর, আমার মূর্চ্ছার অন্ধকার আসিয়া উপস্থিত হইল, আমি যেন পাতালের তলে যাইতে লাগিলাম; সুতরাং তখন আমি কোথায় গেলাম, কি করিলাম এবং কি প্রকার বিলাপ করিলাম—এ সমস্তই বুঝিতে পারিলাম না। (ছ) আমার এই দুষ্ট হৃদয় অত্যন্ত কঠিন ছিল বলিয়া, কিংবা এই হত দেহ অনেক দুঃখ-সমূহ সহ্য করিতে পারে বলিয়া,

अतिचिरकालवेदना दुःखभागिनी वज्रमिव पतितमप्रबोधकपूर्वमापन्नमज्ञान-तमो विवेकमात्मनमपश्यम् (घ)। अनवधाना च (१) सम्भावनीयं तमन्-तस्य चास्य जीवितम्, तथाच 'हा हा (२) किमिदमुपनतम्' इति मुक्तार्तनादा 'हा अम्ब ! हा तात ! हा सख्यः !' इति व्याहरन्ती, 'हा नाथ ! जीवितनिबन्धन ! आचक्ष्व, क्व (३) मामिमामनाथामशरणामवशाम् (४) विमुच्य यासि ?। पृच्छ तरलिकाम्, त्वत्कृते मया यादृशमनुभूता (५)। युगसहस्रायमाणः कथं च नीतो दिवसः। प्रसीद, सकृदप्यालप, दर्शय भक्तवत्सलताम्, (६) ईषदपि विलोकय, पूरय मे मनोरथम्, आर्त्तास्मि, भक्तास्मि, अनुरक्तास्मि, अनाथास्मि,

(घ) [illegible] दुःखभागिन्यहं [illegible] [illegible] वज्रमिव [illegible] पतितमिव सर्व, अपश्यं मूर्च्छां विवेकमात्मनं [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]।

(ङ) अनवधानेति। [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] जीवितं, अनवधाना [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। जीवितनिबन्धन ! जीवनधारणकारण ! [illegible]

বিধাতা আমার কপালে দীর্ঘকালীন শোক বিধান করিয়াছেন বলিয়া, কিম্বা আমি পূর্ব্বজন্মার্জ্জিত পাপ-ভাগিনী বলিয়া, অথবা লোহার মত দৈব দুঃখ দিতে নিপুণ বলিয়া, কিম্বা মদনপ্রভৃতি দেবতারা কর্ম্মে অত্যন্ত প্রতিকূল ছিল বলিয়া,—ইহার কোন্ কারণে যে তখন আমার প্রাণ নির্গত হইল না, তাহাও আমি বুঝিতে পারিয়াছিলাম না। (ঘ) চিরদুঃখিনী আমি, বহুকালের পর চৈতন্য লাভ করিয়া, কেবল ইহাই দেখিতে পাইলাম যে, আমার শরীরটা, অসহ্য শোকে দগ্ধ হইয়া থাকিয়া, অগ্নিতে পতিতের ন্যায় ভূতলে পড়িয়া ছটফট করিতেছে। (ঙ) তাঁহার সেই মরণ এবং তাঁহার মরণ হইলে নিজের জীবন-ধারণ—এই দুইটিই অসম্ভাবনীয় ছিল; তাই তখন আমি তাহা বিশ্বাস করিতে পারিতেছিলাম না। উঠিয়া 'হায়! হায়! এ কি উপস্থিত হইল' এই ভাবে মুক্তকণ্ঠে আর্ত্তনাদ করিয়া উঠিলাম, 'হা মাতঃ! হা পিতঃ! হা সখীগণ!' এইরূপ বলিতে লাগিলাম, 'হা নাথ! হা জীবনধারণের কারণ! হা নির্দ্দয়! তুমি বল, অশরণ-হীন অবস্থায় একাকিনী আমাকে পরিত্যাগ করিয়া কোথায় যাইতেছ?। আমি তোমার জন্য যেরূপ অবস্থা অনুভব করিয়াছি, তাহা তরলিকাকে জিজ্ঞাসা কর। একটি দিন, সহস্র যুগের ন্যায় বোধ হইয়াছিল; তাই তাহা কষ্টে অতিবাহিত করিয়াছি। তুমি প্রসন্ন হও, একবার মাত্র আলাপ কর, ভক্তবৎসলতা দেখাও, একটু চাহিয়া দেখ, আমার মনের অভিলাষ

(१) अनवधाना। (२) क्वचित् किमिदमापतितम्। (३) किं। (४) अशरणाम्।
(५) यादृशमनुभूतम्। (६) भक्तजनवत्सलताम्, [illegible]।

बालास्मि, अबलास्मि, दुःखितास्मि, अनन्यशरणास्मि, मदनपरिभूतास्मि, किमिति न करोषि दयाम्? (ग)। कथय, किमपराद्धम्, किंवा नानुष्ठितम् मया, कस्यां वा नाज्ञायामादृतम्, कस्मिन् वा मदनुकूले नाभिरतम्, येन कुपितोऽसि। दासीजनं (१) अकारणात् परित्यज्य व्रजन् न बिभेषि कौलीनात्? (घ)। अलीकानुरागप्रकाशन-(२) कुशलया किंवा मया वामया पापया (ङ)। या:, अद्यापि जीवामि, हा हतास्मि मन्दभागिनी। सर्वं मे न त्वम्, (३)

[illegible] भाव:। हे [illegible]! [illegible]। [illegible]। [illegible]। न [illegible] मरणं [illegible]।

(घ) कथयेति। [illegible]। मदनुकूले [illegible]। नाभिरतं [illegible]। दासीजनं [illegible]। कौलीनात् [illegible]। "कौलीनं [illegible]" इति [illegible]।

(ङ) अलीकेति। [illegible] अलीकानुराग: [illegible] कुशलया निपुणया, वामया [illegible] भाव:, पापया [illegible], मया किंवा [illegible]।

(च) या इति। [illegible]। [illegible]। [illegible] इति [illegible] भाव:। [illegible]। [illegible] भाव:। [illegible]

পূরণ কর; আমি পীড়িত, তোমার ভক্ত এবং তোমার প্রতি অনুরক্ত; আমি অবলা, বালিকা, নিরাশ্রয়া ও দুঃখিতা; তুমি ভিন্ন অন্য কেহ আমার রক্ষক নাই এবং আমি কামার্ত্ত; অতএব কেন আমার প্রতি দয়া করিতেছ না? । (ঘ) বল, আমি কি অপরাধ করিয়াছি? তোমার কোন কার্য্যের বা অনুষ্ঠান করি নাই? কোন্ আদেশের বা আদর করি নাই? তোমার অনুকূল কোন্ কার্য্যেই বা আসক্ত থাকি নাই? যে, তুমি কুপিত হইলে। দাসীকে অকারণে পরিত্যাগ করিয়া যাইতেছ—ইহাতে লোকাপবাদের ভয় হয় না কি? । (ঙ) আমি, মিথ্যা অনুরাগ দেখাইয়া প্রতারণা করিতে নিপুণ, সকলের পক্ষেই প্রতিকূল এবং পাপিষ্ঠ; সুতরাং আমাদ্বারা প্রয়োজন কি? । (চ) হায়! আমি এখনও জীবিত আছি, হায়! মন্দভাগ্য আমি বাঁচিয়াও মরিয়াছি! হায়! প্রাণবল্লভ! তুমি আমার হইলে না, পিতাও আমার পক্ষে থাকিলেন না, কুলকন্যার আচারও রহিল না, বন্ধুবর্গও থাকিল না এবং পরলোকও

(१) दासीजनं। (२)...विप्रलम्भन...। (३) सर्वं न [illegible]।

न तातः, (१) न जननी, न बन्धुवर्गः, न परलोकः, धिङ्मां दुष्कृतकारिणीम्, यस्याः कृते तवैवमीदृशी दशा वर्तते (ग)। नास्ति मत्सदृशी नृशंसहृदया, यानेनैवंविधं भवन्तमुत्सृज्य गृहं गतवती। किं मे गृहेण, किमम्बया, किंवा तातेन, किं बन्धुभिः, किं परिजनेन। कां नु उपयामि शरणम्? अयि दैव! दर्शय दयाम्, (२) विज्ञापयामि त्वां देवि दयितदर्शिकाम्। भगवति! भवितव्यते! कुरु दयाम्, पाहि वनितामनाथाम्। भगवत्यो वनदेवताः! प्रसीदत, प्रयच्छतास्य प्राणान्। अम्ब! (३) वसुन्धरे! सकललोकानुग्रहकारिणि! (४) किमसि (५) नानुकम्पसे। तात! कैलासेश! (६) शरणागतास्मि ते दर्शय दयामुताम्" इत्येतानि चान्यानि च प्रलपन्ती विलपन्ती [illegible] आविष्टेव उन्मत्तेव भूतोपहतेव [illegible] (घ)। [illegible] उपरि पतितमवलम्ब-

---

[illegible] न [illegible] एव [illegible] "[illegible] [illegible]।" इति साहित्यदर्पणात्।

(ग) नास्तीति। [illegible] कुमार इव [illegible] त्वां दैवि। हे भवितव्यते! [illegible] वनिता [illegible] भावः। [illegible] अनाथामिति [illegible]। कैलासेश! शिव! दर्शय दयाम् [illegible] भावः। [illegible] विलपन्ती। [illegible] भावः। [illegible] आविष्टेव [illegible] भूतैः [illegible] उन्मत्तेव [illegible] [illegible] "[illegible]" इति साहित्यदर्पणात्।

[illegible] নাই। আমি পাপকারিণী বলিয়া আমাকে ধিক্! কারণ—যাহার জন্য তোমার এইরূপ অবস্থা হইয়াছে! (২) আমার মত নিষ্ঠুরচিত্ত স্ত্রীলোক আর নাই; যে আমি, এই অবস্থায় তোমাকে পরিত্যাগ করিয়া গৃহে চলিয়া গিয়াছিলাম। আমার গৃহ, মাতা, পিতা, বন্ধুবর্গ এবং পরিজনবর্গে প্রয়োজন কি? হায়, আমি কাহার শরণ লইব? হে বিধি! দয়া দেখাও, আমি তোমাকে নিবেদন করিতেছি—আমার প্রাণবল্লভকে দান কর। হে ভগবতি ভবিতব্যতে! কৃপা কর, অনাথা রমণীকে রক্ষা কর। হে ভগবত্যো বনদেবতাগণ! প্রসন্ন হও, ইঁহার প্রাণ দাও। হে সকললোকানুগ্রহকারিণি! জননি! বসুমতে! কেন দয়া করিতেছ না? হে পিতঃ! কৈলাসনাথ! আমি তোমার শরণাগত হইয়াছি, আমার প্রতি দয়াপূর্ব-

---

(১) কুত্রচিৎ ন তাতে ইতি নাস্তি। (২) অয়ি দৈব! দর্শয় দয়াং, অয়ি দৈব! বিজ্ঞাপয়ামি। (৩) অম্ব। (৪)...অনুকম্পসেহপি। (৫) বসুমতি! মাতঃ। (৬) কৈলাস!।

ধারানিবহেনেব বিলীয়মানেব দ্রুততামিব নীয়মানা জলাধারৈরম্বৌক্তিক-জালা, (২) প্রকাশাকরৈরপি দশনময়ূখনিকরানুগততয়া চন্দ্রকারৈরিব নিষ্যন্দিতঃ শিরোধরৈরপি চিরবিনির্ম্মিতকুসুমতয়া (১) সুরতখেদজলবিন্দুভিরিবামরবৈরপি প্রসূত-(২) বিমল-মণি-বিরচনাসুতয়া প্রহসিতৈরিবোপেতা, (৩) তস্মোচিতার্থ-

---

(২) জলধীতি। [illegible] ধারানিবহেনেব [illegible] বিলীয়মানেব [illegible] নীয়মানা [illegible] জলাকারৈরিব [illegible] [illegible]।

(৩) প্রকাশেতি। প্রকাশাকরৈরপি [illegible] দশনময়ূখ [illegible] [illegible] ; [illegible] প্রহসিতৈরিব [illegible]। [illegible] শিরোধরৈরপি [illegible] কুসুমানি [illegible] [illegible]। [illegible] প্রহসিতৈরিব [illegible] [illegible]।

(৪) তস্যেতি। [illegible] [illegible]।

[illegible] এই রকম এবং অতীত অনেক রকম বিলাপ করিয়াছিলাম; তাহার কতই বা বলব, কিন্তু উন্মত্ত-লোকের ন্যায়, পিশাচগ্রস্তের ন্যায়, উন্মত্তের ন্যায় এবং ভূতাবিষ্টের ন্যায় কেবলই বিলাপ করিয়াছিলাম। (১) নয়ন হইতে অনবরত নিঃসৃত অশ্রুধারাপ্রবাহে ভূমিতেই যেন আমি লীন হইয়া যাইতেছিলাম, সেই স্থলে যেন দ্রবীভূত হইতেছিলাম এবং সেই স্থলে যেন জলাকারে পরিণত হইতেছিলাম। (২) মুখ হইতে বিলাপের অক্ষর নির্গত হইতেছিল, তাহার পিছনে পিছনে দশন কিরণও বহির্গত হইতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সেই বিলাপের অক্ষরগুলিও অশ্রুধারার সহিত নির্গত হইতেছে; কেশকলাপ হইতে পুষ্পসমূহ অনবরত পতিত হইতেছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যেন, কেশকলাপও অশ্রুজলবিন্দু বর্ষণ করিতেছে; আমার অলঙ্কার হইতে—নির্ম্মল মণিকিরণরূপ অশ্রু নির্গত হইতেছিল, তাহাতেও বোধ হইতেছিল যে, সেই অলঙ্কারগুলিও যেন কাঁদিতেছে। (৩) তাঁহার

---

(১)—বিমলাভরণতয়া। (২) প্রসূন...।

प्राणसमाश्वासाय स्पृशन्ती, (ग) मृतस्यापि सर्वात्मना हृदयं प्रवेष्टुमिच्छन्ती, (घ) करतलेन कपोलयोरालग्नचन्दन-ललाटतटमूले च ललाटे निहित-तरल-बिसवे-ष्टयोरंसयोश्चन्दन-रस-लव-सुषित-कमलिनी-पत्रप्रावृतमुरसि च हृदये परा-मृशन्ती (ङ) 'पुण्डरीक! निष्ठुरोऽसि, एवमप्यार्त्तां न गणयसि माम्' इत्युपालभमाना मुहुर्मुहुरालिङ्गनमकरवम्, मुहुर्मुहुः पर्यचुम्बम्, मुहुर्मुहुः (१) कण्ठे गृहीत्वा व्याक्रोशम् (च) 'आः पापे! त्वयापि मत्प्रत्यागमनकालं यावदस्यासवो न रक्षिताः' इति तरलिकामप्यमर्षयम्। 'अयि भगवन्! प्रसीद, प्रत्युज्जीवयैनम्' इति मुहुर्मुहुः (२) कपिञ्जलस्य पादयोरपतम्। मुहुर्मुहुश्च (३) तरलिकां कण्ठे गृहीत्वा प्रारुदम् (छ)। अद्यापि चिन्तयन्ती न जानामि तदिदम् क्वापि

(ग) मृतस्येति। सर्वात्मना [illegible] हृदयं प्रवेष्टुमिच्छन्तीव। [illegible]।

(घ) करेति। करतलेन निजपाणिना, कपोलयोः [illegible], [illegible] च [illegible] ललाटे च, तथा निहितानि [illegible] [illegible] कपोलयोः, [illegible] [illegible] [illegible] हृदये [illegible] च परामृशन्ती स्पृशन्ती अहम्।

(ङ) पुण्डरीकेति। [illegible]। एवं पुण्डरीकं। [illegible]। [illegible]।

(च) आः इति। पापे! [illegible]। [illegible] पुण्डरीकस्य प्राणाः, न रक्षिताः [illegible] [illegible] भावः। तरलिकामपि [illegible]।

জীবনলাভের নিমিত্তই, যেন নিজের মরণ ইচ্ছা করিয়াছিলাম। (গ) তিনি মরিয়া থাকিলেও, সর্ব্বপ্রকারেই যেন তাঁহার হৃদয়ে প্রবেশ করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলাম। (ঘ) তাঁহার কপোলযুগলের মূলদেশে, শুষ্ক চন্দনে শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল, স্কন্ধদ্বয়ের উপরে দুইটি আর্দ্র মৃণাল স্থাপিত ছিল, এবং চন্দনবিন্দুশোভিত একটি পদ্ম-পত্রখানা বক্ষঃস্থল আচ্ছাদিত ছিল; আমি করতলদ্বারা তাঁহার গণ্ডযুগলে, সেই ললাটে, সেই স্কন্ধযুগলে এবং সেই বক্ষঃস্থলে আমর্শন করিয়াছিলাম। (ঙ) 'পুণ্ডরীক! তুমি বড়ই নিষ্ঠুর; যেহেতু—তোমার শোকে আমি এইরূপ যাতনা ভোগ করিতেছি, তথাপি তুমি আমাকে গণনাই করিতেছ না' এইভাবে তিরস্কার করতঃ আমি বারংবার তাঁহার অনুনয় করিয়াছিলাম, বারংবার চুম্বন করিয়াছিলাম এবং বারংবার তাঁহার কণ্ঠ ধারণ করিয়া উচ্চৈঃস্বরে রোদন করিয়াছিলাম। (চ) 'আঃ পাপিষ্ঠে! এতাবৎ কাল! আমার ফিরিয়া আসিবার সময় পর্য্যন্ত, তুইও ইহার প্রাণরক্ষা করিলি না' এই বলিয়া সেই এক-

---

(१) [illegible]। (२) मुहुः। (३) मुहुः।

कुतस्तान्यचिन्तितान्यविदितान्यनुपदिष्टान्यदृष्टपूर्वाणि मे करुणालापाः सकलानि चाटुशतानि प्रादुरभवन् (च)। कुतस्ते संलापाः, कुतस्तान्यतिकरुणानि वैक्लव्यविलसितानि, अन्य एव स प्रकारः (छ)। प्रलयोर्मय इव शोकोदधितरङ्गा-वेलानाम्, अवयवा इव शोकासुखनिस्रुतप्रवाहाणाम्, पयोदा इव निरन्तरम् प्रलापा-नाम्, शिखरयातानीवावर्धन्त दुःखानाम्, प्रसूतय इव शोकोद्गमानां मूर्च्छानाम्।" (ज)

इत्येवमाक्रन्दनात्मानमावेदयन्त्या एव (१) तस्याः सम्प्रतिक्षणं कथमप्यति-वाहयन्त्याः अन्तरमनुभवन्त्या इव चेतना अहार मूर्च्छा (झ)। वैशम्पायनस्त्वीष

(च) कथेति। अदृष्टपूर्वाणि मयापि पूर्वमज्ञातानि। करुणानि दैन्यवचनानि। चाटुशतानि [illegible], प्रादुरभवन् [illegible], [illegible]।

(छ) कुत इति। संलापा विलापोक्तयः। वैक्लव्यविलसितानि [illegible]। स प्रकारः सा [illegible], अन्य एव [illegible] इव, [illegible] भावः।

(ज) प्रलयेति। [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]।

(झ) इतीति। सम्प्रतिक्षणं क्षणेन। कथमपि [illegible], [illegible]। अनुभवन्त्या इव [illegible]। [illegible]।

নদী দুইবার যাবৎ ইহাকে বিলাপ করিয়াছিলাম। 'ভগবন্! প্রসন্ন হউন, ইহাকে জীবিত করুন' এই কথা বলিয়া, বারংবার কপিঞ্জলের চরণযুগলে পতিত হইয়াছিলাম। বারংবার তাপসিকার কণ্ঠ ধারণ করিয়া রোদন করিয়াছিলাম। (ছ) অচিন্তিত, অনভ্যস্ত, অশ্রুতপূর্ব এবং নিজেরও অজ্ঞাত সেই সকল হৃদয়চ্ছেদ করুণবাক্য, কোথা হইতে যে, পুণ্যহীন আমার মুখ হইতে সেই সময়ে নির্গত হইয়াছিল, আজ চিন্তা করিয়াও তাহা স্মরণ করিতে পারিতেছি না। (জ) সে বিলাপ কোথায়? এবং বিহ্বলতাবশতঃ সেই অতিকরুণ রোদনই বা কোথায়? সে সমস্তই যে তখন সম্পূর্ণ অন্যরূপ ছিল। (ঝ) তখন বেগবান্ অশ্রুবেগের প্রবাহগুলিই যেন হৃদয়ের ভিতর হইতে উঠিতেছিল, নয়নযুগল অশ্রুপ্রবাহের জলধারাই যেন মুক্ত করিয়া দিয়াছিল, বিলাপের নূতন নূতন অঙ্কুরই যেন নির্গত হইয়াছিল, দুঃখের অঙ্কুরই যেন বৃদ্ধি পাইয়াছিল এবং মূর্চ্ছার অবিচ্ছিন্ন সন্তানই যেন জন্মিতেছিল।

(ঞ) মহাশ্বেতা, এইভাবে নিজের বৃত্তান্ত বলিতে বলিতেই অতীত, অনির্বচনীয় ও দারুণ

(१) निःश्वसन्त्या इव,—इत्यत्र च।

निश्वसती तां ससम्भ्रमं प्रसारितकरः (१) परिजन इव जातपीडश्चन्द्रापीडो विधृतवान्। अश्रुजलार्द्रेण च तदीयेनैवोत्तरीयवल्कलप्रान्तेन शनैः शनैर्वीजयन् संज्ञां लम्भितवान् (घ)। उपजातशोकवेगश्च बाष्पसलिलोत्पीडेन प्रक्षाल्यमानकपोलयुगलः (२) चन्द्रापीडस्तामवादीत्—"भगवति! मया पापेन तवायं पुनरभिनवतामुपनीतः शोकः, येनेदृशीं दशामुपनीतासि। तदलमनया कथया, संह्रियतामियम्, अहमप्यसमर्थः श्रोतुम्। अतिक्रान्तान्यपि हि सहीदरप्रमाणानि (३) अनुभवसमां वेदनामुपजनयन्ति दुःखानि। तदर्हसि कथमपि विधृतानिमानसुलभानसून् पुनः पुनः (४) शोकाग्नावेन्धनतामुपनेतुम्" इति। (ङ)

(घ) वीजयतीति। ससम्भ्रमं त्वरितं। [illegible] च [illegible]। संज्ञां लम्भितवान् चैतन्यं प्रापितवान्।

(ङ) उपेति। [illegible] चन्द्रापीडः, [illegible] कपोलयुगलं [illegible] चन्द्रापीडस्तामवादीत्। मया [illegible] इत्यर्थः। [illegible] इयं कथा संह्रियतां समाप्यताम्। अहमपि श्रोतुमसमर्थः [illegible] भावः। हि यस्मात्, अतिक्रान्तान्यपि अतीतान्यपि दुःखानि [illegible] अनुभवसमां [illegible] वेदनामुपजनयन्ति। कथमपि [illegible], विधृतान् [illegible] प्राणान् [illegible] पुनः पुनः [illegible] उपनेतुं नार्हसि, [illegible] भावः। [illegible]

কষ্টেনক সেই অবস্থাই যেন তখন অনুভব করিতে লাগিল; তাই মূর্চ্ছা আসিয়া তাঁহার চৈতন্য অপহরণ করিল। (ঘ) এবং প্রস্তরতলের উপরে বেগে পড়িয়া যাইতে লাগিল; তখন ব্যতিব্যস্তচিত্ত চন্দ্রাপীড়, পরিজনের ন্যায় হস্ত প্রসারণ করিয়া তাড়াতাড়ি তাঁহাকে ধরিলেন এবং তাঁহারই অশ্রুজলসিক্ত উত্তরীয় বল্কলপ্রান্তদ্বারা ধীরে ধীরে বায়ু সঞ্চালন করিয়া সংজ্ঞা লাভ করাইলেন। (ঙ) এই ঘটনাতে চন্দ্রাপীড়েরও শোক উপস্থিত হইল এবং অশ্রুজলের প্রবাহে তাঁহার গণ্ডযুগল প্রক্ষালিত হইতে লাগিল; তখন তিনি মহাশ্বেতাকে বলিলেন,—"ভগবতি! আমি পাপাত্মা; তাই আপনার এই অতীত শোককে পুনরায় নূতন করিয়া তুলিয়াছি; বিশেষতঃ, যে হেতু—আপনাকে এইরূপ অবস্থাতে উপস্থাপিত করিয়াছি। অতএব এই বৃত্তান্ত বলার আর প্রয়োজন নাই, এইখানেই ইহার উপসংহার করুন, আমিও

(१) ससम्भ्रमप्रसारितकरः। (२)...कपोलयुगला।
(३) [illegible] इति [illegible] पाठः। (४) पुनः।

एवमुक्ता दीर्घमुष्णञ्च निश्वस्य (१) बाष्पायमाणलोचना सनिर्वेदमवादीत्—"राजपुत्र! या (२) तस्यामतिदारुणायां क्षणदायामभिनवमृत्युसंश्रयेणेव परित्यक्ता, नेदानीं परित्यक्ष्यत इति (३) दूरापेतम्, (४) (च)। नूनमसुखोपहतायाः पापाया मम भगवानन्तकोऽपि परिहरति दर्शनम् (छ)। कुतश्च मे कठिनहृदयायाः शोकः, सर्वमिदमलीकमस्य दुरात्मनः (५) शठहृदयस्य, सर्वथाऽनेनैव ख्यापयेव निरपत्रपयाऽग्रामयं मयेोत्तमा (ज) यया चाधिगतमदनवेदनया

(च) एवमिति। एवमुक्ता चन्द्रापीडेनेति शेषः। बाष्पमुद्वमन्ति इति बाष्पायमाणे लोचने यस्याः सा तादृशी सती सा। [illegible] सनिर्वेदं "तत्त्वज्ञानापदीर्ष्यादेर्निर्वेदः स्वावमानना।" इति साहित्यदर्पणः। सा [illegible] व्यक्तिः। दूरापेतम् [illegible], दूरापेतं दूरं गतम्।

(छ) नूनमिति। असुखं दुःखमिति [illegible] शेषः [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] परिहरति परित्यजतीति नूनं निश्चितम्, अथवा दर्शनं [illegible] [illegible] [illegible] भावः। [illegible] [illegible]।

(ज) अथ तथापि पुनः शोकोदयात् [illegible] [illegible] इति। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भावः। [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। अथवा [illegible] भावः। दुरात्मनो दुष्टस्य। [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] भावः।

আর শুনিতে পারিতেছি না; কারণ— যে সকল দুঃখ অতীত হইয়া গিয়াছে, তাহারও কীর্তন করিতে আরম্ভ করিলে আত্মীয়লোকের অনুভূয়মান বেদনার তুল্য বেদনা জন্মাইয়া থাকে। আপনি কোন প্রকারে প্রাণধারণ করিয়া রহিয়াছেন, কিন্তু সেই প্রাণ চলিয়া গেলে ইহ জন্মে আর তাহা সুলভ হইবে না, অতএব বারংবার স্মরণ করিয়া সেই প্রাণকে শোকানলের ইন্ধন করা আপনার উচিত নহে।"

(চ) চন্দ্রাপীড় এইরূপ বলিলে মহাশ্বেতার নয়নযুগল, অশ্রু বর্ষণ করিতে লাগিল; তখন সে, দীর্ঘ ও উষ্ণ নিঃশ্বাস ত্যাগ করিয়া নির্বেদের সহিত বলিতে লাগিল—"রাজপুত্র! অত্যন্ত ভয়ঙ্কর সেই শোকের রাত্রিতে এই নৃশংস প্রাণ যাহাকে পরিত্যাগ করে নাই, এখন যে তাহাকে পরিত্যাগ করিবে—সে বহুদূর-পরাহত। (ছ) অত্যন্তধীর পাপে আমার সকল দুঃখের বাধা গিয়াছে, ইহ জন্মেও আমি পাপিষ্ঠা; সুতরাং নিশ্চয় ভগবান্ যমও আমার দর্শন পরিত্যাগ করিয়াছেন। (জ) আমার হৃদয় অত্যন্ত কঠিন; সুতরাং শোক আসিবে কোথা হইতে? দুরাত্মা ও ধূর্তস্বভাব এই হৃদয়ের নিকট এ সমস্তই অলীক বলিয়া বোধ হইয়াছে

(१) निःश्वस्य। (२) या तदा। (३) तै नाधिकानीं परित्यक्ष्यतीति। (४) दूरापेतमेतद्। (५) धूर्त्तस्य हृदयस्य इति नाधिकं।

यन्मयैवेदमनुभूतं, तस्याः का गणना कथनं प्रति ? (१) (झ) किंवा परमतः कष्टतरमस्मै यमन्यद्भविष्यति, यत्तव सत्र्वमें श्रोतुमाख्यातुं वा। केवलमस्य वृत्तान्तस्यानन्तरमाश्चर्यं यदभूत्तदावेदयामि, प्राणधारणकारणभूतं च (२) यश्चासौ यः समुत्पन्नः, तच्च कथयामि। यया दुराशामृगतृष्णिकया वशीकृतमिदमसुपरित्यक्तं परकीयमिव भारभूतमप्रयोजनमकृतज्ञं हतशरीरं धारयामि तदपि श्रूयताम्। (ञ)

ततश्च तथाभूते तस्मिन्नवस्थान्तरे मरणैकनिश्चया (३) बहु विलप्य तरलिकामब्रवम्—(४) "अयि उत्तिष्ठ निष्ठुरहृदये। कियद्रोदिषि ? (५) काष्ठान्याहृत्य विरचय चिताम्, अनुसरामि जीवितेश्वरम्" इति। (ट)

(झ) ननु तथापि कथनं [illegible] [illegible]

(ञ) अतःपरं कष्टतरमपि [illegible] किं [illegible]। [illegible] [illegible]

(ट) तत इति। [illegible] [illegible]

এবং এই নির্লজ্জ হৃদয়, আমাকে সকল প্রকারে বিদগ্ধদিগের অগ্রগণ্যা করিয়াছে। (ঝ) যে ব্যক্তি, দারুণ কায়ক্লেশ অনুভব করিয়া, আবার স্বচক্ষেই প্রায় এই সকল ঘটনাও প্রত্যক্ষ করিয়াছিল, তাহার আবার সেই ঘটনা বলিবার বিষয়ে চিন্তা করিবার কি আছে ?। (ঞ) ইহার পর, অধিক কষ্টকর আর বলিবারই বা কি আছে ? যাহা শুনিতে বা বলিতে পারা যায় না। এই বজ্রপাতের পরে যে আশ্চর্য্য ঘটনা হইয়াছিল, কেবল তাহাই নিবেদন করিতেছি এবং নিজের প্রাণ ধারণ করিবার কারণের কথায় তাহ অস্পষ্ট যে দুরাশ্বটি ঘটিয়াছিল, তাহাও বলিতেছি। যে দুরাশা-মৃগ-তৃষ্ণিকার বশীভূত হইয়া আমি, মৃতপ্রায় এবং পরকীয়ের ন্যায় ভারভূত, প্রয়োজনবিহীন ও অকৃতজ্ঞ এই পোড়া শরীর ধারণ করিতেছি, প্রয়োজন না থাকিলেও তাহা আপনি শ্রবণ করুন।

(ট) তাহার পর, সেইক্ষণে আমার সেই অবস্থান্তর ঘটিলে আমি, কেবল মরণেই কৃতনিশ্চয় হইয়া অনেক বিলাপ করিয়া তরলিকাকে বলিলাম,—'হে কঠিনহৃদয়ে ! উঠ,

(१) का गणना। (२)...कारणभूत इव। (३) मरणाभिलाषिणी मरणैकनिश्चया। (४) अब्रवं। (५) रोदिषि।

अत्रान्तरे झटिति चन्द्रमण्डलविनिर्गतः (१) गगनादवतीर्य केयूरकोटि-समासक्त[illegible]पल्लवं धवलतरदुकूलोत्तरीयमाकर्षन्, (ठ) श्रवण[illegible]-दोलित-कुण्डल-मणि-प्रभा-रक्त-गण्डस्थलः, (ड) स्थूलमुक्ताफलतया तारागण-मिव ग्रथितं अतिभास्वरं हारं (२) उरसा दधानः, (ढ) [illegible]-कुसुम-पल्लव-वासितोच्चोत्तमाङ्गः, (ण) अलि-कुल-नील-कुटिल-कुन्तल-निकर-विकट-मौलिः, (त) [illegible]-कुसुम-कर्णपूरः, कामिनी-कुच-कुङ्कुम-पत्रलता-लाञ्छितांस-

---

(ठ) [illegible] केयूरस्य कोटौ [illegible], [illegible] धवलतरं [illegible] उत्तरीयं [illegible]। अत्र [illegible]।

(ड) श्रवणेति। [illegible] कुण्डलयोर्मणि[illegible] रक्ते [illegible] गण्डस्थले यस्य सः। [illegible]।

(ड) स्थूलेति। उरसा वक्षसा। स्थूलानि मुक्ताफलानि [illegible] हेतुना, ग्रथितं तारागणमिव [illegible], अतिभास्वरं [illegible]। अत्र [illegible]। "[illegible]"[illegible]।

(ढ) [illegible]। [illegible] कुसुमपल्लवेन [illegible] वासितो [illegible] सः।

(ण) अलीति। अलिकुल[illegible] नीलेन कुटिलेन [illegible] च कुन्तलनिकरेण [illegible] विकटो [illegible] मौलिः [illegible] यस्य सः। अत्र [illegible]।

(त) [illegible]। [illegible] कुसुमे [illegible] कर्णपूरौ यस्य सः। कामिन्याः [illegible] कुचयोः [illegible] लाञ्छितौ [illegible]

আর কত রোদন করিবে? কাষ্ঠ আহরণ করিয়া চিতা নির্মাণ কর; আমি প্রাণেশ্বরের অনুগমন করিব।'

(১—ক) ইত্যবসরে, মহাপুরুষ-লক্ষণান্বিত ও দর্শনীয়মূর্তি কোন পুরুষ, চন্দ্রমণ্ডল হইতে নির্গত হইয়া, আকাশ হইতে ভূতলে নামিয়া, বাহুযুগলে মৃত পুণ্ডরীককে উত্তোলন করিয়া দুন্দুভিধ্বনির ন্যায় গম্ভীর স্বরে আমাকে বলিলেন,—"বৎসে! মহাশ্বেতে! তুমি প্রাণ পরিত্যাগ করিও না, ইহার সহিত তোমার পুনর্বার সম্মিলন হইবে" পিতার ন্যায় স্নেহপূর্বক এই কথা বলিয়া পুণ্ডরীকের দেহটির সহিতই আকাশে উঠিয়া গেলেন। তিনি আকাশ হইতে নামিবার সময়ে একখানা শ্বেত উত্তরীয় বসন আকর্ষণ করতঃ নামিতেছিলেন; সেই বসনখানা বায়ুবেগে কম্পিত হইয়া কেয়ূরের অগ্রে সংলগ্ন হইয়াছিল এবং সমুদ্রের ফেনপিণ্ডের ন্যায় তাহা শুভ্রবর্ণ ছিল;—দুই কর্ণে দোদুল্যমান দুইটি কুণ্ডলের মণির প্রভায় তাঁহার গণ্ডযুগল আরক্তবর্ণ হইয়াছিল;—

---

(১)...[illegible]। (২) [illegible]।

[illegible]देश:, कुमुद-धवल-देश:, महाप्रमाण:, पुरुषो महापुरुषलक्षणोपेतो दिव्या-कृति:, (ख) स्वच्छ-वारि-धवलेन देहप्रभावितानेन प्रावृण्वन्निव दिगन्तराणि, (ङ) आमोदिना च शरीरेण [illegible] शिशिरैव शीतलस्पर्शमिव जनयता [illegible]शीकर-निकरवर्षेण (१) तुषारपटलेनैवानुलिम्पन्, (च) गोशीर्षचन्दनरस-च्छटाभिरि-वासिक्तम्, (ग) ऐरावतकरपीवराभ्यां बाहुभ्यां मृणाल-[illegible] शीतलस्पर्शाभ्यां (२) तनुपवनमनुलिम्पन्, (घ) दुन्दुभिनादगम्भीरेण (३) स्वरेण

[illegible] यस्य स:। कुमुदवत् धवलो देशो यस्य स:। अत्र लुप्तोपमालङ्कार:। महत् प्रमाणं परिमाणं देहो यस्य स:। महापुरुषलक्षणै: [illegible] दिव्याकृति: [illegible]।

(ख) स्वच्छेति। स्वच्छवारिवत् निर्मलधवलत्वात् धवलेन, देहस्य प्रभाया वितानेन [illegible] दिगन्तराणि प्रावृण्वन्निव। अत्र लुप्तोपमासङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(ङ) आमोदिनेति। किञ्च, आमोदिना सौरभवता, शरीरेण [illegible], तुषारपटलेनैव हिमसङ्घेन, शिशिरैव शीतलेन, [illegible] शीतस्पर्शं जनयतेव [illegible]भावः, [illegible]निकरवर्षेण [illegible], अनुलिम्पन् दिगन्तराणीति सम्बन्धः। अत्र [illegible] संसृष्टि:।

(च) गोशीर्षेति। गोशीर्षाख्यं [illegible] चन्दनरसस्य छटाभिरिव [illegible] दिगन्तराणीति सम्बन्धः, [illegible] भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा-लङ्कार:।

(ग) ऐरेति। ऐरावतस्य करविक्षेपः [illegible] पीवराभ्यां बाहुभ्यां, [illegible] शीतलस्पर्शाभ्यां बाहुभ्यां, [illegible] तनुपवनम् [illegible]। अत्र लुप्तोपमा [illegible] संसृष्टि:।

বৃহৎ বৃহৎ মুক্তা-নির্মিত বলিয়া, প্রথিত [illegible] ও অত্যন্ত নির্মল একগাছা হার বক্ষঃস্থলে ধারণ করিয়াছিলেন; ধবল ও বিস্তৃত সূক্ষ্ম বসনদ্বারা উষ্ণীষ বন্ধন করিয়াছিলেন; [illegible] ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ ও বক্র কেশকলাপে তাঁহার চূড়াটিকে বৃহৎ দেখা যাইতেছিল; [illegible] দুইটি [illegible] তাঁহার কর্ণের আভরণ ছিল; কোন মহৎ [illegible] বক্ষঃস্থলে [illegible] চিহ্নিত হইয়াছিল এবং শরীরটি [illegible] ন্যায় ধবলবর্ণ ও বৃহৎ পরিমাণে ছিল; এই সকল কারণে তাঁহার আকৃতিটি স্বর্গীয় বলিয়া বোধ হইতেছিল; নির্মল জলের ন্যায় শুভ্রবর্ণ দেহপ্রভাদ্বারা তিনি যেন দিগ্‌দিগন্ত প্রচ্ছাদন করিতেছিলেন; তুষারবৃষ্টির ন্যায় শীতল ও সুগন্ধ দেহ হইতে নিঃসৃত ঘর্মজলবিন্দুবর্ষণদ্বারা শীতলতা জন্মাইয়াই যেন সকল দিক্

(১) [illegible]বর্ষেণ। (২) শীতলস্পর্শাভ্যাং। (৩) দুন্দুভিগম্ভীরেণ।

"वत्से! महाश्वेते! न परित्याज्याः (१) त्वया प्राणाः, पुनरपि तवानेन सह भविष्यति समागमः" इत्येवमाहन: (२) पितेवाभिधाय तेनैव सह गगनतल-मुदपतत्। (ङ)

अहन्तु तेन व्यतिकरेण सभया सविस्मया सकौतुका चोन्मुखी किमिदमिति कपिञ्जलमपृच्छम् (च)। असौ तु अप्रत्युत्तरमदत्त्वैवोत्तरमुदतिष्ठत्। "दुरात्मन्! (३) क्व मे वयस्यमपहृत्य गच्छसि" इत्यभिधायोत्कृष्ठ: सञ्जातकोपो बध्नन् सवेगं (४) उत्तरीयवल्कलेन परिकरं, उत्पतन्तं (५) तमेवानुसरन्नन्तरिक्ष-मुदगात्। पश्यन्त्या एव च मे सर्व एव ते तारागणमध्यं (६) अविशन्। (छ)

मम तु तेन द्वितीयेनेव प्रियतममरणेन कपिञ्जलगमनेन द्विगुणीकृतशोकायाः

(ङ) उदपतदिति। दुन्दुभिनादगम्भीरेण, स्वरेण आश्वास्य। अनेन शतपुण्डरीकेण सह गगनतलमुदपतदित्यन्वयः पूर्ववत् बोध्यः।

(च) अहमिति तेन व्यतिकरेण गगनतलोत्पतनरूपव्यापारेण। सभयेत्यादौ सर्वत्र सर्वातिशायिताकति-व्यापारदर्शनादिति भावः।

(छ) असाविति। असौ कपिञ्जलः। अप्रत्युत्तरम् उत्तरं। परिकरं कटिदेशम्। पश्यन्त्या एव मे पश्यन्तीमेव मामनादृत्येत्यर्थः "षष्ठी चानादरे" इति षष्ठी। ते पुण्डरीककपिञ्जलाः।

(ज) ममेति। द्वितीयेन प्रियतममरणेनेवेत्यन्वयः, तत्तुल्या वेदनादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा-लङ्कारः। द्विगुणीकृतम्। शोकायाः, शोकादि विशिष्यते।

সিক্ত করিয়াছিলেন এবং যোজনবিস্তারিত চন্দ্রমণ্ডলনিঃসৃত ধারাতেই যেন সকল দিক্ সিক্ত করিতে-ছিলেন, এবং তাঁহার সেই বাহুযুগল, ঐরাবত হস্তীর শুণ্ডের ন্যায় স্থূল ও অত্যন্ত দীর্ঘ ছিল এবং তাঁহার অঙ্গুলিসমূহ ও মৃণালের ন্যায় ধবলবর্ণ ছিল।

(চ) আমি কিন্তু সেই ঘটনা দেখিয়া ভয়, বিস্ময় ও কৌতূহলের সহিত ঊর্দ্ধ্বমুখ হইয়া কপিঞ্জলকে জিজ্ঞাসা করিলাম,—'এ, ব্যাপারটা কি?'। (ছ), তিনি কিন্তু সে কথার উত্তর না দিয়াই তাড়াতাড়ি উঠিলেন এবং বলিলেন—"দুরাত্মন্! আমার বন্ধুকে অপহরণ করিয়া তুমি কোথায় যাইতেছ?" এই কথা বলিয়া ক্রুদ্ধ হইয়া উত্তরীয়বল্কলদ্বারা তাড়াতাড়ি কটিদেশ বন্ধন করিয়া, ঊর্দ্ধ্বমুখ হইয়া, আকাশে উত্থিত সেই পুরুষটীর অনুসরণ করত আকাশে উঠিয়া গেলেন; এবং আমি দেখিতেছিলাম, এই অবস্থাতেই তাঁহারা সকলেই নক্ষত্রসমূহের মধ্যে প্রবেশ করিলেন।

(জ) কিন্তু দ্বিতীয় প্রিয়তমের মৃত্যুর ন্যায় কপিঞ্জলের সেই গমনে আমার শোক দ্বিগুণ

(१) त्याज्याः। (२) कश्चित् आहत इव मार्गः। (३) दुरात्मन्! पामर!।
(४) सवेगं। (५) उत्पतन्तं। (६) तारकापथमध्यं।

समापतदौत्सुक्येन हृदयम्। विस्मयव्याकुला च तरलिकामब्रवम् (१) 'अयि जानासि ? (२) कथय किमेतदिति' (ज)। सा तु तदवलोकनकौतुकभयसाध्वसा-नया लक्षिता अपि शोकाभिभाविना मरणाभिमुख्या वेपमानाङ्गयष्टिरश्रुसरल-जडया च वराकी विषण्णहृदया सकरुणमवादीत् - (झ) "भर्तृदारिके! न जानामि पापकारिणी, किन्तु महदिदमाश्चर्यम्, अमानुषाकृतिरेष पुरुषः, समाश्वासिता यातेन गच्छता सानुकम्पं पितेव भर्तृदारिका। प्रायेण चैवंविधा दिव्याः स्वप्नेऽप्यविसंवादिन्यो भवन्त्याकृतयः किमुत साक्षात्। (ञ) न चाल्पमपि, विचारयन्ती कारणमस्य मिथ्याभिधाने पश्यामि, अतो युक्तं विचार्यात्मानमस्मात् प्राणपरित्यागव्यवसायाद्विवर्तयितुम्, अतिमहत् खल्विदमाश्वासस्थानमस्यामव-स्थायाम् (ञ)। अपि च तमनुसरन् गत एव कपिञ्जलः, तस्माच्च 'कुतोऽयम्,

(ज) सेति। तरलिका सीदन्ती कृत्स्नेत्यर्थः। तत् कैषा वार्ता। शोकाभिभाविना शोकविह्वलया शोकस्य [illegible]।

(झ) अयि इति। आश्वासनं वचनम्। एवंविधा दिव्याः आकृतयः आकृतयः स्वप्नेऽपि प्रायेण अवि-संवादिन्यः सत्यवचना अमिथ्याभिधायिन्यो भवन्ति स्वप्नेऽपि न मिथ्या भाषन्त इत्यर्थः।

(ञ) ननु यदि मिथ्या भाषेत तदा किमित्याह न चेति। विचारयन्ती सती, अस्य पुरुषस्य मिथ्याभि-धाने अल्पमपि कारणं न पश्यामीत्यन्वयः। प्राणपरित्यागस्य व्यवसाय उद्यमस्तस्मात्। आश्वासं मनः। एवं "न परित्यक्तव्याः" इत्यादिवचनस्य वचनं, आश्वासस्य स्थानं कारणमित्यर्थः।

খণ্ডিত করিল, তাই হৃদয় অত্যন্ত বিদীর্ণ হইতে লাগিল। তখন বিস্ময়াবিষ্ট হইয়া তরলিকাকে বলিলাম—তরলিকে! যদি বুঝিয়া থাকিস্ তবে বল্—এ ব্যাপারটা কি?' (জ) কিন্তু দুঃখার্তা তরলিকা, সেই ঘটনা দেখিয়া, জীবনাশের আশঙ্কানিবন্ধন শোক-বিহ্বলা হইয়া তখন অভিভূত হইয়া পড়িল, তাহার শরীর কাঁপিতে লাগিল এবং আমার মরণের আশঙ্কায় তাহার হৃদয় বিষণ্ণ হইয়া গেল—এই অবস্থায় শোকের সহিত বলিল,—(ঝ) রাজকন্যে! আমি পাপিষ্ঠা, তাই এই ঘটনার কিছুই বুঝিতে পারি নাই। কিন্তু এ ঘটনা বড়ই আশ্চর্য। এই ব্যক্তির আকৃতি অলৌকিক; এবং ইনি যাইবার সময়ে পিতার ন্যায় দয়ার সহিত আপনাকে আশ্বস্ত করিয়া গিয়াছেন। এই জাতীয় দেবমূর্তি, প্রায়শঃ স্বপ্নেও মিথ্যা কথা বলেন না, সুতরাং প্রত্যক্ষ মিথ্যা কথা বলিবেন কেন? (ঞ) আমি বিবেচনা করিয়া, ইহার মিথ্যা কথা বলার অল্পও কারণ দেখিতেছি না; অতএব বিবেচনা করিয়া আপনার এই প্রাণপরি-ত্যাগের উদ্যম হইতে মনকে নিবৃত্ত করা উচিত; বিশেষতঃ এই অবস্থায় উহার এই বাক্যটি বড়ই আশ্বাসের কারণ। (ট) আরও দেখুন—কপিঞ্জল ও সেই লোকটীর পিছনে পিছনে

(१) यदि। (२) न जानासि।

को वायम्, किमर्थं वा (१) अनेनाप्यसमयगतासुहृत्[illegible] नीतः, क्व वा नीतः, कथमनयात्यन्तमीर्षितमसुना पुनः समागमाशाप्रदानेन भर्तृदारिका समाश्वासिता इति सर्वमुपलभ्य (२) जीवितं वा मरणं वा समाचरिष्यसि। अद्यप्रभृति हि मत्त-[illegible] (३) [illegible] (ख)। न च जीवन् कपिञ्जलो भर्तृदारिकामदृष्ट्वा स्थास्यति, तेन तत्प्रत्यागमनकालावधयोऽपि तावद्ध्रियन्तामसवः [illegible]।" इत्यभिदधाना पादयोर्मे न्यपतत् (ग)। अहन्तु [illegible] जीविततृष्णया, [illegible], तया च [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

(घ) [illegible]

গিয়াছেনই ; সুতরাং এই লোকটি কোথা হইতে আসিয়াছিল, সে কে, কেনই বা সে মৃত পুণ্ডরীককে তুলিয়া নিয়া গেল, কোথাই বা নিল, কি জন্যই বা আশ্বাসবাক্যে এই পুনরায় মিলনের আশা প্রদান করিয়া আপনাকে আশ্বস্ত করিয়া গেল, এই সমস্ত বিষয়ই সেই কপিঞ্জলের নিকট জানিয়া, প্রাণ ধারণ বা প্রাণ পরিত্যাগ—ইহার যেটা হয় করিতে পারিবেন ; কারণ—যে মহাপুরুষের জন্য আপনি উৎকণ্ঠিত হইয়াছেন, তাহা দুর্লভ হইবে না, পরেও হইতে পারিবে। (খ) কপিঞ্জল জীবিত থাকিয়া আপনাকে না দেখিয়া থাকিতে পারিবেন না ; অতএব তাঁহার ফিরিয়া আসা পর্যন্ত আপনি এই প্রাণ ধারণ করুন"—এই কথা বলিয়া তরলিকা আমার পায়ের উপর পড়িল। (গ) কিন্তু জীবনের আশা সকল লোকেরই অনতিক্রমণীয়, বিশেষতঃ দুঃখেতেই স্ত্রীলোকের হৃদয় দুর্বল, এবং তরলিকা সেই সকল কথা দ্বারা আমার [illegible] উৎপাদিত করিয়া দিয়াছিল, আর কপিঞ্জল ফিরিয়া আসিবেন বলিয়া আমার বিশ্বাসও জন্মিয়াছিল,—এই সকল কারণে সেই সময়ে জীবন ধারণ করাই যুক্তিসঙ্গত মনে

(१) किमर्थं च। (२) सर्वमिदमुपलभ्य। (३) [illegible]।

[illegible], अपि [illegible] च, तस्मिन् काले तथैव शु[illegible] [illegible] मोत्सृष्टवती जीवितम्। पापया हि किमिव न क्रियते (क)। तस्य पापकारिणी (१) कालरात्रिप्रतिमा सर्व[illegible] शून्यमयीमिव दुःखमयीमिव नरकमयीमिव अग्निमयीमिव [illegible] तथैव क्षितितले विचेष्टमाना [illegible] कपोल[illegible] [illegible] शिरोरुह[illegible] [illegible] निर्दयाक्रन्द-[illegible] (२) [illegible] तस्मिन्नेव [illegible] [illegible] (ख)

प्रभूतमपि [illegible] तस्मिन्नेव सरसि स्नात्वा कृतनियमा, [illegible]

न [illegible] [illegible]

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

করিয়া আমি জীবন পরিত্যাগ করি নাই ; পাপিলোকে [illegible] কি না করে ? । (খ) [illegible] [illegible], [illegible] নিদ্রা হইল না, সেই [illegible] ভূতলে পড়িয়া [illegible] করিতে [illegible] [illegible] ও [illegible] কেশকলাপ [illegible] এবং [illegible] [illegible] হইয়া [illegible] এবং [illegible] [illegible] [illegible] ও [illegible] হইয়া গেল,—এই অবস্থায় আমি [illegible] সহিত, সেই [illegible] [illegible] ও [illegible] সেই রাত্রি অতিবাহিত করিলাম ; তখন [illegible] [illegible], দুঃখময়ী, নরকময়ী ও অগ্নিময়ীর ন্যায় বোধ হইয়াছিল ;

(২) [illegible] করিয়া, সেই [illegible] করিয়া, [illegible]

---

(১) পাপকারিণী। (২)—[illegible]।

कमण्डलुमादाय तान्येव च वल्कलानि तामेवाक्षमालां गृहीत्वा, बुद्ध्वा निःसारतां संसारस्य, ज्ञात्वा च मन्दपुण्यतामात्मनः, (१) निरूप्य चाप्रतीकारदारुणतां व्यसनोपनिपातानाम्, आकलय्य दुर्निवारतां शोकस्य, दृष्ट्वा च निष्ठुरतां दैवस्य, चिन्तयित्वा चातिबहुदुःखतां स्नेहस्य, भावयित्वा चानित्यतां सर्वभावानाम्, अवधार्य चाकाण्डभङ्गुरतां सर्वसुखानाम्, अगणय्य तातमम्बाम्, परित्यज्य सह परिजनेन सकल-(२) बन्धुवर्गम्, निवर्त्य विषयसुखेभ्यो मनः, संयम्येन्द्रियाणि, गृहीतब्रह्मचर्या इदं त्रैलोक्यनाथमनाथशरणं (३) इमं शरणार्थिनी समाश्रिता (४)। (क)

अपरेद्युश्च कुतोऽपि समुपलब्धवृत्तान्तस्तातः सहाम्बया सह बन्धुवर्गेणागत्य सुचिरं कृताक्रन्दोऽनेकैरुपायैः, अभ्यर्थनाभिश्च बह्वीभिः, (५) उपदेशैश्चानेकप्रकारैः, शास्त्रैश्च (६) नानाविधैः, गृहगमनाय (७) मे महान्तं यत्नमकरोत्। यदा च

निर्वेदः। आकलय्य विदित्वा। अतिबहुदुःखतां च दुःखानि यस्मिन् तस्य भावस्ताम्। सर्वभावानां [illegible]। अकाण्डे असमये भङ्गुरतां नश्वरतां। [illegible] [illegible]। [illegible] शरणं [illegible]। शरणार्थिनी [illegible]।

(क) अपरेद्युरिति। कुतोऽपि जनात्, समुपलब्धः प्राप्तो वृत्तान्तो [illegible]। [illegible]

दुঃখিত হইয়া, পুণ্ডরীকের প্রতি প্রণয়বশতঃ সেই কমণ্ডলু, সেই বাকল কয়খানি ও সেই জপের মালা হাতে লইয়া, সংসারের অসারতা বুঝিতে পারিয়া, নিজের পুণ্য অল্প জানিয়া, প্রতিবিধান করিতে না পারায় উপস্থিত হইবার সময়ের বিপদ বড়ই ভয়ঙ্কর—ইহা নিশ্চয় বুঝিয়া, চেষ্টা করিয়া শোকের নিবৃত্তি করা যায় না—ইহা বিবেচনা করিয়া, বিধাতার নিষ্ঠুরতা দেখিয়া, স্নেহের ভিতরে বহুপরিমাণেই দুঃখ—ইহা চিন্তা করিয়া, সকল পদার্থেরই অনিত্যতা ভাবিয়া, সকল সুখই অসময়ে বিনষ্ট হইয়া যায়—ইহা স্থির বুঝিতে পারিয়া, পিতা ও মাতাকে গণনা না করিয়া, পরিজনদিগের সহিত সকল বন্ধুবর্গকে পরিত্যাগ করিয়া, বিষয়-সুখ হইতে মনকে নিবৃত্ত করিয়া এবং ইন্দ্রিয়দিগকে সংযত করিয়া, ব্রহ্মচর্য্য-অবলম্বন পূর্ব্বক শরণার্থিনী হইয়া, ত্রিভুবনের অধীশ্বর ও অনাথ-প্রতিপালক এই মহাদেবকে আশ্রয় করিলাম।

(ক) পরদিন পিতা, কোনও লোকের নিকট আমার বৃত্তান্ত জানিতে পারিয়া,—মাতা ও বন্ধুবর্গের সহিত আসিয়া বহুকাল পর্য্যন্ত বিলাপ করিলেন ;—পরে হস্তধারণপ্রভৃতি নানাবিধ উপায়, বহুবিধ অনুনয়, নানাপ্রকার উপদেশ ও নানাবিধ শাস্ত্রবাক্যে আমা[illegible]

(১) [illegible]। (২) [illegible] সকল...। (৩)...নাথং শরণং। (৪) [illegible]। (৫) [illegible]। (৬) [illegible]। (৭) [illegible]।

ग्रहादस्मादध्यवसायात् कथंचिदपि शक्नोति व्यावर्तयितुमिति निश्चयमधिगतवान्, तदा निराशोऽपि सुतस्नेहतया कुपितवेदस्य, पुनः पुनर्मया विसृज्यमानोऽपि बहून् दिवसान् स्थित्वा, शोकेन एवान्तर्दह्यमानहृदयो गृहानयासीत् । (क)

गते च ताते ततः प्रभृति तस्य जनस्यानुशोचनमात्रेण (१) कृतज्ञतां दर्शयन्ती, तदनुरागसंवर्धितमपुण्यबहुलमशुचिमालिन्यममङ्गलभूतमनेकक्लेशायासखेदजननि वासं इदमशरीरकं बहुविधैर्नियमशतैः शोषयन्ती, वन्यैश्च कन्दमूलफलादिभिर्वर्तमाना जपव्याजेन तद्गुणगणानिव गणयन्ती, त्रिसन्ध्यमस्मिन् सरसि स्नानमुपस्पृशन्ती, प्रतिदिनमर्चयन्ती देवं त्र्यम्बकम्, एवामिव गुहायां तरलिकया सह दीर्घं शोकमिममनुभवन्ती सुचिरं न्यवसम् (२) । (ख)

निवाप: । नैवेद्यकथैरं[illegible]दिभि: । [illegible]: । यर्थं [illegible], [illegible] [illegible], कथंचिदपि केनापि प्रकारेण व्यावर्तयितुं निवर्तयितुं न शक्यते । निराशोऽपि [illegible] निवर्तनाशारहितोऽपि ।

(ख) गत इति । अनुशोचनमात्रेण [illegible] । तस्य जनस्य पुण्डरीकस्य [illegible] । [illegible] पुण्डरीकस्य अनुरागेण अनुरागसंवर्धितमिव [illegible], बहूनि पुण्यविरोधीनि पापानि [illegible] तत्, दुःखानुभवादिति भाव:, [illegible] [illegible] तत्, [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]: । [illegible] । [illegible] [illegible] कुर्वाणा । तस्य पुण्डरीकस्य गुणगणान् गणयन्तीव । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

গৃহগমনের নিমিত্ত অত্যন্ত যত্ন করিলেন। তাহার পর যখন নিশ্চয় বুঝিতে পারিলেন যে, এই উদ্যম হইতে ইহাকে কোন প্রকারেই নিবারণ করিতে পারা যাইবে না, তখন নিরাশ হইয়াও এবং আমি বার বার বিদায় দিলেও, স্নেহ সহজে পরিত্যাগ করা যায় না বলিয়া অনেক দিন থাকিয়া, তিনি শোকের সহিতই গৃহে চলিয়া গেলেন, তখন সেই শোকানলে তাঁহার হৃদয় দগ্ধ হইতেছিল।

(খ) পিতা চলিয়া গেলে, আমি সেই অবধি কেবল অনুশোচনা [illegible] করিয়া সেই ব্যক্তির প্রতি কৃতজ্ঞতা দেখাইতে লাগিলাম; তাঁহার প্রতি অনুরাগ বশতঃ চিন্তায় চিন্তায় দিন দিন ক্ষীণ পাপপরিপূর্ণ, লজ্জাবিহীন, সকলের অমঙ্গলস্বরূপ এবং নানাবিধ কষ্ট ও পরিশ্রম সমূহের আধার এই পোড়া শরীরকে, উপবাসপ্রভৃতি নানাবিধ নিয়মে, শোষণ করিতে থাকিলাম এবং বনের ফল, মূল ও জলদ্বারা জীবন ধারণ করিয়া জপের ছলে তাঁহার গুণগ্রামই যেন গণ-

---

(१) [illegible] जनस्यानुशोचनमात्रेण । (२) शोकमनुभवन्ती, दीर्घ... ।

साहमेवंविधा पापकारिणी निर्लज्जा निर्दया क्रूरा च निःस्नेहा च हतहृदया च (१) गर्हणीया निष्प्रयोजनोत्पन्ना निष्फलजीविता निराशा (२) निरवलम्बना निःसुखा च (ख)। किं मया दृष्टया पृष्टया वा (३) सततमशरणमनाथामना करोति महाभागः" इत्युक्त्वा पाण्डुना वल्कलोपान्तेन [illegible] प्रच्छाद्य वदनं दुर्निवारबाष्पवेगमधारयन्ती निवारयितुमशक्नुवती मुक्तकण्ठमतिचिरमुच्चैः प्रारोदीत् (४)। (ग)

चन्द्रापीडस्तु प्रथममेव तस्या रूपेण विनयेन दाक्षिण्येन च मधुरालापतया च

(ख) साहमिति। पापकारिणी [illegible]। निर्लज्जा [illegible]। निर्दया [illegible]। क्रूरा कठिना [illegible]। निःस्नेहा [illegible]। हतहृदया [illegible]। गर्हणीया [illegible]। निष्प्रयोजनोत्पन्ना [illegible]। निष्फलजीविता [illegible]। निराशा [illegible]। निरवलम्बना निराश्रया [illegible]। निःसुखा च [illegible] च भावः। [illegible] परिकरालङ्कारः।

(ग) किमिति। महाभागो [illegible]। [illegible] मया दृष्टया पृष्टया वा किं करोति करिष्यति, अपि तु किमपि [illegible]। पाण्डुना [illegible]। [illegible] उपमालङ्कारः।

(घ) चन्द्रेति। [illegible]। मधुर [illegible]। [illegible]

করিতে লাগিলাম এবং তিন বেলা এই সরোবরে স্নান ও প্রতিদিন মহাদেবের অর্চনা করত, দীর্ঘকালব্যাপী এই শোক অনুভব করিতে করিতে এই গুহার ভিতরেই তরলিকার সহিত বহুকাল বাস করিতেছি।

(খ) আমি এই জাতীয় পাপিষ্ঠা, আমার কোন গুণ লক্ষণ নাই, লজ্জা নাই, আমি কুটিল-প্রকৃতি, আমার স্নেহ নাই, আমি নৃশংসা, নিন্দনীয়া, বিনা প্রয়োজনে উৎপন্না এবং আমার জীবনে কোন ফল নাই, গতি নাই, আশ্রয় নাই এবং সুখ নাই। (গ) আমি ব্রহ্মহত্যারূপ মহাপাতক করিয়াছি, সুতরাং আমাকে দেখিয়া বা জিজ্ঞাসা করিয়া মহাশয় কি করিবেন" এই কথা বলিয়া মহাশ্বেতা, শরৎকালীন মেঘখণ্ডদ্বারা চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায়, শুভ্রবর্ণ বল্কল-প্রান্তদ্বারা মুখমণ্ডল আচ্ছাদন করিয়া, দুর্নিবার অশ্রুবেগ নিবারণ করিতে না পারিয়া মুক্তকণ্ঠে উচ্চৈঃস্বরে বহুকাল রোদন করিয়াছিল।

(ঘ) এ দিকে মহাশ্বেতার রূপে, বিনয়ে, নম্রতায়, মধুর আলাপে, সকল সৎকার্য-

(१) क्वचित् [illegible] नास्ति। (२) क्वचित् [illegible] च दृश्यते। (३) [illegible]।
(४) प्रारोदीत्।

निःस्पृहतया चातिथ्यप्रियतया च (१) प्रश्रयाप्तत्वेन च निरभिमानतया च महानु-
भावत्वेन च शुचितया चोपारूढगौरवोऽभूत्, तदानीन्तु तेनापरेण दर्शितसद्भावे-
नाहृत्तान्तकथनेन तथा च सरलतया हृतहृदयः सुतरामारोपितप्रीतिरभवत् (ख)।
आर्द्रीकृतहृदयश्च शनैः शनैरेनामभाषत—"भगवति ! क्लेशभीरकृतज्ञः सुखाभि-
लाषी लोकः स्नेहसदृशं कर्मानुष्ठातुमशक्तो निष्फलेनाश्रुपातमात्रेण स्नेहमुप-
दर्शयन् रोदिति। त्वया तु कर्मणैव सर्वमाचरन्त्या किमिव न प्रेमोचितमा-
चेष्टितम्, येन रोदिषि (ग)। तदर्थमाजन्मनः (२) प्रभृति समुपचितपरिचय-
प्रेमाणमसंस्तुत इव (३) परित्यक्तो बान्धवजनः, अभिलषिता अपि सुखोपभोगाः

[illegible]तया। प्रश्रयाप्तत्वेन [illegible]। महानुभावः प्रभावो महात्मता भावत्वेन। शुचितया पवित्रतया च हेतुना। उपारूढमुत्पन्नं गौरवं महत्त्वं तां प्रति गुरुत्वबोधो यस्य स तादृशः। दर्शितः प्रकाशितः [illegible] [illegible]। सुतरामत्यर्थं यथा तथा आरोपिता उत्पादिता प्रीतिः प्रणयो यस्मिन् सः।

(ख) आर्द्रेति। तथा तोया आर्द्रीकृतहृदयश्च चन्द्रापीडः। एनां महाश्वेतां। [illegible]

(ग) [illegible]

পরিত্যাগে, অতিরিক্ত তপস্যায়, পাতিব্রত্যাবলম্বনে, অহঙ্কার না থাকায়, গুরুতর প্রভাব
থাকায় এবং পবিত্রতায় তাঁহার প্রতি চন্দ্রাপীড়ের প্রথমেই গুরুত্ববোধ জন্মিয়াছিল; কিন্তু
তাহার পর আবার সে যে, নিজের বৃত্তান্ত বলিয়াছিল, তাহাতে তাহার বিশেষ সাধুতা প্রকাশ
পাইয়াছিল; তাহাতে এবং সেই সরলতাচরণে চন্দ্রাপীড়ের হৃদয় আকৃষ্ট হইয়াছিল, এবং
অত্যন্ত প্রীতি জন্মাইয়াছিল। (খ) সুতরাং সেই প্রীতিনিবন্ধন প্রশান্তহৃদয় চন্দ্রাপীড় ধীরে ধীরে
মহাশ্বেতাকে বলিলেন,—"ভগবতি ! ক্লেশভীরু, অকৃতজ্ঞ এবং কেবল সুখাভিলাষী লোক
স্নেহের উপযুক্ত কার্য্য করিতে না পারিয়া, অনর্থক অশ্রুপাতদ্বারা লোকসমাজে স্নেহ
দেখাইবার নিমিত্ত রোদন করে; আপনি কিন্তু কার্য্যদ্বারাই সমস্ত করিয়াছেন, অতএব স্নেহের
উপযুক্ত কি না করিয়াছেন, যে রোদন করেন। (গ) জন্ম হইতে যাঁহাদের প্রতি স্নেহ
বৃদ্ধি পাইয়াছিল, অত্যন্ত প্রিয় হইলেও সেই বান্ধবগণকে আপনি তাঁহার জন্যই, অপরিচিতের

---

(१) [illegible] (२) आजन्मनः। (३) [illegible]

ता विषयाः, सुखानि (१) अतिमलिन-[illegible]दूरकृतानि, [illegible] निरतं नमितानमसुखितैः [illegible]नीता तनुः, [illegible] अधीरधैर्यम्, आयोजितमुपवासैः [illegible], अनितान्तमदुष्करमप्यनुष्ठितं (२) तपस्यावस्थानम् (ख)। अपि च, अनायासेनैवात्मा दुःखाभिभूतैः (३) परित्यज्यते, महीयसा तु (४) यत्नेन महीयसि क्लेशे नियुज्यते केवलम् (ग)। यदेतदनुमरणं नाम तदतिनिष्फलम्, अविद्वज्जनाचरित एष मार्गः, मोहविल-

---

[illegible]: [illegible] अतएव [illegible] [illegible] अपि [illegible] [illegible] [illegible] इति भावः। [illegible] अपि [illegible] विषयाः [illegible] [illegible] सुखानि [illegible]। [illegible] तनुरियं शरीरं, [illegible] [illegible], [illegible] अपि [illegible]। [illegible] इति [illegible] [illegible]।

(ग) अपिचेति : दुःखाभिभूतैर्जनैः, अनायासेनैव आत्मा जीवनं परित्यज्यते परित्यक्तुं शक्यते [illegible], तु किन्तु केवलं [illegible] यत्नेन [illegible] नियुज्यते [illegible] [illegible] इति भावः।

(घ) ननु "[illegible]" [illegible]

[illegible] ও পরিত্যাগ করিয়াছেন; অনায়াসলভ্য হইলেও [illegible] বিষয়গুলিকে তৃণের ন্যায় অবজ্ঞা করিয়া ত্যাগ করিয়াছেন; ইন্দ্রের সমৃদ্ধি হইতেও উৎকৃষ্ট সমৃদ্ধিগুলিকে ত্যাগ করিয়াছেন; [illegible] স্বভাবতই কৃশ হইলেও এই শরীরকে, নিজের অযোগ্য তপস্যার ক্লেশে আরও কৃশ করিয়াছেন; ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বন করিয়াছেন; দুষ্কর তপস্যায় আত্মাকে ব্যাপৃত করিয়াছেন এবং অল্প স্ত্রীলোকের পক্ষে দুষ্কর হইলেও আপনি সেই বনবাস স্বীকার করিয়াছেন। (গ) আরও দেখুন—লোকে দুঃখে পড়িয়া অনায়াসেই জীবন ত্যাগ করিতে পারে, কিন্তু মহাকষ্টকর [illegible] যে, সেই আত্মাকে নিযুক্ত করা, তাহাতে অত্যন্ত যত্নের প্রয়োজন। (ঘ) তবে, কোন কোন স্ত্রীলোক যে, পতির অনুমরণ স্বীকার করেন, তাহা অজ্ঞান নিব-

---

(१) विमुखानि। (२) दुष्करमपि[illegible],...दुष्करमपि कृतं। (३) दुःखाभिभूतैः।
(४) महीयसा च तु।

[illegible]विलसितम्, अज्ञानपद्धतिरियम्, रभसाचरितमिदम्, क्षुद्रदृष्टिरेषा, अतिप्रमादो ऽयम्, मौर्ख्यस्खलितमिदम्, यदुपरते पितरि भ्रातरि सुहृदि भर्तरि वा प्राणाः परित्यज्यन्ते, स्वयञ्चेन्न जहति न परित्याज्याः (ঘ)। अत्र हि विचार्यमाणे स्वार्थ एव प्राणपरित्यागोऽयम्, असह्यशोकवेदनाप्रतीकारत्वादात्मनः। उपरतस्य तु न कमपि गुणमावहति (ঙ)। न तावत्तस्यायं प्रत्युज्जीवनोपायः, न धर्मोपचयकारणम्, न शुभलोकोपार्जनहेतुः, न निरयपातप्रतीकारः, न दर्शनोपायः, न परस्परसमागमनिमित्तम् (চ)। अन्यामेव [illegible]

[illegible] किं [illegible] इति। अनुमरणं नाम [illegible] इति [illegible]। रभसाचरितं [illegible] इत्यर्थः। [illegible] अनुमरणविषया [illegible] क्षुद्रदृष्टिः [illegible]। अतिप्रमादः [illegible] मौर्ख्यस्खलितं [illegible]। प्राणाः स्वयं चेत् जहति न परित्यजन्ति तदा ते न परित्याज्या इत्यर्थः। [illegible] परित्याज्याः इति [illegible] न परित्याज्या इति पाठेन [illegible]। [illegible] "[illegible]" इति [illegible] [illegible]।

(ঙ) [illegible]। हि यस्मात्। अस्मिन्ननुमरणे विचार्यमाणे सति, अयं प्राणपरित्यागः स्वार्थ एव [illegible] इति भावः। [illegible]। आत्मनः [illegible] असह्यशोकवेदनायाः [illegible] प्रतीकारत्वात् [illegible]। [illegible] उपरतस्य मृतस्य जनस्य, कमपि गुणमुपकारं नावहति न [illegible], अयं प्राणपरित्यागः [illegible]।

(চ) [illegible] न तावदिति। अयं प्राणपरित्यागः, तस्य मृतस्य न [illegible] प्रत्युज्जीवनोपाय इत्यर्थः। धर्मोपचयकारणं [illegible]। शुभलोकस्य [illegible]। निरयपातप्रतीकारः [illegible]। दर्शनोपायः [illegible]। न [illegible] परस्परसमागमनिमित्तं [illegible] न कमपि गुणमावहतीति भावः।

এবং তাহা অজ্ঞানীর অবলম্বিত পথ, মূর্খের ব্যবহার, অজ্ঞানের রীতি, অবিবেচকের অদূরদৃষ্টির বিবেচনা, অত্যন্ত অনবধানতা এবং মূর্খতানিবন্ধন কর্তব্যের ক্ষতি; যে, পিতা, ভ্রাতা, সুহৃদ্ বা ভর্তার মৃত্যু হইলে নিজেও প্রাণ পরিত্যাগ করে; প্রাণ যদি নিজেই পরিত্যাগ না করে, তবে তাহাকে পরিত্যাগ করা উচিত নহে। (ঘ) এ বিষয় বিচার করিয়া দেখিলে বুঝা যায় যে, লোকে এই প্রাণত্যাগ, স্বার্থের জন্যই করিয়া থাকে; কারণ— প্রাণত্যাগ করিলে নিজের অসহ্য-শোক-বেদনার প্রতীকার হয়; কিন্তু ইহাতে মৃত ব্যক্তির কোনই উপকার করে না। (ঙ) এই প্রাণত্যাগ, মৃতব্যক্তির পুনরায় জীবন পাইবার উপায় নহে; [illegible]

[illegible] (१) जीवति भूमिम्, [illegible] संयुज्यते(ट) जीवन्नु [illegible], यतस्तु नोभय-मपि (ठ)। तत् तावत् नियामिकपत्नी रतिं समयति भर्तरि [illegible] [illegible] (२)दृष्टं [illegible] (ड)। [illegible] [illegible]-पादपीठे (३) [illegible] [illegible](४)- [illegible] (ढ)। [illegible] विराटदुहितरं

(ट) [illegible] [illegible]

(ठ) [illegible] [illegible]

(ड) [illegible] [illegible] "[illegible]" [illegible]।

[illegible], মৃত ব্যক্তির সহিত সাক্ষাৎ করিবার উপায় নহে এবং পরস্পর মিলনের কারণও নহে। (ট) পরাধীন জীব, নিজের কর্মফলানুসারে অন্য কোন স্থানেই জাত হইয়া থাকে; কিন্তু সেখানে সে, আত্মীয়ের পাশে কেবল [illegible] ([illegible]) (ঠ) কিন্তু মানুষ জীবিত থাকিয়া জলাঞ্জলিদানপ্রভৃতি দ্বারা মৃতব্যক্তির ও আপনার বহুতর উপকার করিতে পারে; আর মরিয়া গেলে মৃতেরও নহে, নিজেরও নহে। (ড) আপনি স্মরণ করিয়া দেখুন—[illegible] সকল রমণীগণের [illegible] ও মাহাত্ম্যশালী ভর্তা [illegible],—[illegible] [illegible] নিহত হইলেও, তাঁহার প্রিয়তমা [illegible] প্রাণ পরিত্যাগ করিয়াছিলেন

(१)...[illegible]...[illegible]। (२) [illegible]।
(३)...[illegible]। (४) [illegible]...।

[illegible] (१) [illegible] च [illegible] (२) [illegible] (ङ)। [illegible] (३) [illegible] [illegible] [illegible]

(ङ) [illegible]

[illegible]

(च) [illegible]

(ज) [illegible]

না। (ঙ) এবং অবহেলায় বিজিত সমস্ত রাজগণ, মস্তক [illegible] হইতে [illegible] তাঁহার পাদপীঠ [illegible] করিয়া দিতেন "এবং যিনি সমস্ত পৃথিবীর কর গ্রহণ করিতেন ও পরম সুন্দর ছিলেন, নিজের পত্নি সেই মহারাজ পাণ্ডু 'কিন্দম'-মুনির শাপানলে দগ্ধ হইলেও, [illegible] কন্যা কুন্তীদেবী, জীবন পরিত্যাগ করেন নাই। (চ) এবং [illegible] দেশের [illegible] আনন্দজনক, বিনীতস্বভাব ও বিক্রমশালী [illegible] নিহত হইলেও, [illegible]-কন্যা [illegible], জীবন ধারণই করিয়াছিলেন। (ছ) মহাদেবের [illegible] তাঁহার [illegible] বর্দ্ধিত করিয়াছিল এবং যিনি [illegible]

(१) [illegible]। (२) [illegible]। (३) [illegible]।

जयद्रथे (१) अर्जुनेन लोकान्तरमुपनीतेऽप्यनन्तरमपरित्यक्तप्राणा (ग)। अन्याश्च शतशः सुरासुर-मुनि-मनुज-सिद्ध-गन्धर्व-कन्यकाः भर्तृविरहिताः श्रूयन्ते धारितजीविताः। (घ)

लोकान्तरगतेनापि जीवितं सन्दिग्धोऽप्यस्य समागमो यदि स्यात्। भगवत्या तु ततः पुनः स्वयमेव समागमनसरस्वती समाकर्णिता, अनुभवे च को विचारः (ङ)। अत्र च तादृशामसम्भावितानां महापुरुषाणामविसंवादिनीं गरीयसापि कारणेन

[illegible] भावः, अतिमनोहरे, न तु सुरूपे इव विराजमाने [illegible] भावः, [illegible], न तु [illegible] इव [illegible], जयद्रथे, अर्जुनेन लोकान्तर-मुपनीतेऽपि [illegible], [illegible] दुर्योधनादिशतभ्रातृक्रोडे तु लालिता, [illegible] [illegible] भावः, [illegible] दुःशला, न तु [illegible] [illegible] भावः, [illegible]।

अहो ! [illegible] [illegible] प्रतीयते।

(घ) अन्याः इति। [illegible] इति शेषः।

(ङ) [illegible] इति। तदापि जीवितं लोकान्तरगतस्य परित्यक्तुं, यदि अस्य [illegible] सन्दिग्धोऽपि स्यात् भविष्यति न भविष्यति इति संशयितोऽपि स्यात्। किन्तु स समागमो न सन्दिग्धः, अपि तु [illegible], [illegible] जीवनत्यागः [illegible] इति भावः। तु किन्तु भगवत्या त्वया स्वयमेव ततः महापुरुषात् पुनः समागमनसरस्वती "पुनरपि तयैव सह भविष्यति समागमः" इति [illegible] समाकर्णिता, [illegible] च [illegible] को विचारः संशयः स्यात्, अपि तु कोऽपि [illegible]। अतः [illegible] जीवनधारणं कर्तव्यमिति भावः।

(च) ननु [illegible] [illegible] [illegible]

ছিলেন, সিন্ধুরাজ সেই জয়দ্রথ, অর্জুনকর্তৃক নিহত হইলেও, দুর্যোধন প্রভৃতি শত ভ্রাতার ক্রোড়ে লালিত, ধৃতরাষ্ট্র-কন্যা দুঃশলাও, প্রাণ পরিত্যাগ করিয়াছিলেন না। (ঘ) এবং দেব, দানব, মুনি, মানব, মনুষ্য, সিদ্ধ ও গন্ধর্বদিগের মধ্যে অন্য শত শত কন্যাও, বিধবা হইয়া জীবন ধারণ করিয়াছিলেন—ইহা শুনা যায়।

(ঙ) মৃত ব্যক্তির সহিত পুনরায় মিলন হইতেও পারে, না হইতেও পারে— এরূপ সংশয়ও যদি থাকিত, তাহা হইলেও প্রাণ পরিত্যাগ করা চলিত। কিন্তু আপনি নিজেই, সেই মহাপুরুষের মুখে পুনরায় মিলন হইবার কথা শুনিয়াছেন, সুতরাং বিষয়ে প্রত্যক্ষীভূত বিষয়ে আবার সংশয় কি? (চ) বিশেষতঃ, কোন গুরুতর কারণ থাকিলেও, সেইরূপ অলৌকিকা-

---

(१) क्वचित् जयद्रथे इति पाठो न दृश्यते।

[illegible] चेतसाप्यादरं कुर्यात् (ख)। उपरतेन च सह जीवन्त्याः कीदृशो समागमः, यतो निःसंशयमसावुपजातकारुण्यो महात्मा पुनः प्रत्युज्जीवनार्थमेवैनमुत्क्षिप्य सुरलोकं नीतवान् (ग)। अचिन्त्यो हि महात्मनां प्रभावः, बहुप्रकाराश्च संसार-वृत्तयः, (१) विचित्रं दैवम्, आश्चर्यातिशययुक्ताश्च तपःसिद्धयः, अनेकविधाश्च कर्मणां शक्तयः (घ)। अपि च सुनिपुणमपि विमृशद्भिः किमिवान्यत्तदपहरणे कारणमाशङ्क्येत जीवितप्रदानादृते (ङ)। न चासम्भाव्यमिदमवगन्तव्यं भगवत्या, (२) चिरप्रवृत्त एष पन्थाः (च)। तथाहि विश्वावसुना गन्धर्वराजेन

[illegible], उपरतेन च [illegible]। [illegible] कुर्यात्, अपि तु [illegible]। अतो न [illegible] समागमो भविष्यतीति भावः।

(ग) [illegible]। उपरतेन मृतेन। जीवन्त्याः [illegible]। एनं पुण्डरीकं। नीतवान् इत्यनुमीयत इति भावः।

(घ) [illegible] इति भावः। [illegible]

ङ-च। [illegible]

(ङ) [illegible]। जीवितप्रदानादृते जीवनदानं विना।

(च) ननु मृतस्य पुनर्जीवनमसम्भवमेवेत्याह। न चेति। इदं पुनर्जीवनं। एषः [illegible]; चिरप्रवृत्तः [illegible]। अतो [illegible] इति भावः।

শুচি ও সত্যবাদী মহাপুরুষদিগের বাক্যে, বিশ্বাসভঙ্গ জানিয়া প্রাণত্যাগ করিবে কিরূপে ?। (খ) পুণ্ডরীক মরিয়াছেন, আপনি জীবিত আছেন, সুতরাং মৃতব্যক্তির সহিত জীবিত ব্যক্তির মিলন হইবে কিরূপে ? অতএব, এ বিষয়ে কোনই সন্দেহ নাই যে, আপনার দুঃখ দেখিয়া সেই মহাপুরুষের দয়া জন্মিয়াছিল; তাই তিনি, পুনরায় জীবিত করিয়া দিবার নিমিত্তই পুণ্ডরীককে তুলিয়া স্বর্গে নিয়া গিয়াছেন। (গ) কারণ, মহাপুরুষদিগের প্রভাব, চিন্তার অগোচর; সংসারের বৃত্তান্তও নানাবিধ, দৈবের শক্তিও বিচিত্র; তপস্যার সিদ্ধিও অত্যন্ত আশ্চর্য্য এবং ধর্ম্ম ও অধর্ম্মের শক্তিও নানাপ্রকার। (ঘ) আমরা অত্যন্ত সূক্ষ্ম বিচার করিলেও, তাঁহার অপহরণ-বিষয়ে জীবন-দান-ভিন্ন অন্য কোন্ কারণের আশঙ্কা করিতে পারি ?। (ঙ) মৃত ব্যক্তির পুনরায় জীবনদান কথাটা আপনি অসম্ভব মনে করিবেন না; কারণ—এই পদ্ধতি চিরকালই চলিয়া আসিতেছে। (চ) দেখুন—গন্ধর্ব্বরাজ বিশ্বাবসু,

(१) ..वृत्तयः। (२) [illegible]।

मेनकायामुत्पन्नां प्रमद्वरां नाम कन्यकामाशीविषविषप्लुतजीवितां स्थूलकेशाश्रमे भार्गवस्य च्यवनस्य (१) नप्ता प्रमतितनयो मुनिकुमारको रुरुर्नाम आयुषोऽर्धेन योजितवान् (अ)। अर्जुनञ्चाश्वमेधतुरगानुसारिणं आत्मजेन बभ्रुवाहननाम्ना समरशिरसि शरापहृतप्राणम् (२) उलूपी (३) नाम नागकन्यका सोच्छ्वासमकरोत् (आ)। अभिमन्युतनयञ्च परीक्षितं (४) अश्वत्थामास्त्रपावकपरिप्लुष्टं, उत्तरोदरादुपरतमेव विनिर्गतम्, * उत्तराप्रलापोपजनितकृपो भगवान् वासुदेवो दुर्लभानसून् प्रापितवान् (इ)। उज्जयिन्याञ्च सान्दीपनेः (५) द्विजन्मनस्तनयमन्तकपुरादपहृत्य त्रिभुवनवन्दितचरणः स एवानीतवान् (ई)। अत्रापि कथञ्चिदेव-

(अ) [illegible] इत्यादि। आशीविषेण सर्पेण विषप्लुतं [illegible] जीवितं यस्याः ताम्। [illegible] मुनेराश्रमे। भार्गवस्य भृगुवंशजस्य। नप्ता पौत्रः। प्रमतिनाम्नस्तनयः पुत्रः। आयुषोऽर्धेन योजितवान् निजायुषोऽर्धं दत्त्वा जीवितवानित्यर्थः। [illegible]

(आ) अर्जुनमिति। [illegible] प्राणा यस्य तं। उलूपी अर्जुनपरिणीता [illegible]। सोच्छ्वासं [illegible] अकरोत्। [illegible]

(इ) परीक्षितमिति। [illegible] अश्वत्थाम्नो द्रोणपुत्रस्य, [illegible] अस्त्रपावकेन परिप्लुष्टं [illegible]। उपरतमेव मृतमेव। उत्तरायाः प्रलापेन विलापेन जनिता कृपा यस्य सः। असून् प्राणान् दुर्लभान् प्रापितवान्। [illegible]

(ई) उज्जयिन्यामिति। स एव वासुदेव एव। सान्दीपनेः [illegible] [illegible] तनयं? अन्तकस्य यमस्य पुरात्।

মেনকার গর্ভে প্রমদ্বরা নামে একটি কন্যা উৎপাদন করেন; সেই প্রমদ্বরা, মহর্ষি স্থূলকেশের আশ্রমে খেলা করিতেছিল—এমন সময়ে তাহাকে সর্পে দংশন করিয়া বিনষ্ট করে; তখন ভৃগুবংশজ চ্যবনের পৌত্র, প্রমতির পুত্র রুরু নামে মুনিকুমার, নিজের আয়ুর অর্দ্ধ দিয়া তাহাকে বাঁচাইয়া দেন। (অ) মহাবীর অর্জ্জুন, অশ্বমেধীয় অশ্বের অনুসরণ করতঃ মণিপুরে উপস্থিত হইয়াছিলেন, তখন বভ্রুবাহন নামে তাঁহারই পুত্র, যুদ্ধে শরপ্রহারে তাঁহার প্রাণ অপহরণ করিয়াছিলেন, তখন অর্জ্জুনভার্য্যা নাগকন্যা উলূপী সঞ্জীবন-মণি স্পর্শ করাইয়া তাঁহাকে জীবিত করিয়াছিলেন। (আ) অভিমন্যুর পুত্র পরীক্ষিৎ, অশ্বত্থামার ব্রহ্মাস্ত্রানলে গর্ভেই দগ্ধ হইয়া মৃত অবস্থাতেই উত্তরা হইতে নির্গত হইয়াছিলেন, তাহার পর উত্তরার বিলাপে ভগবান্ কৃষ্ণের দয়া জন্মিল, তাই তিনি পুনর্ব্বার পরীক্ষিতের দুর্ল্লভ প্রাণ দান করিয়াছিলেন। (ই) এবং ত্রিভুবনের পূজনীয় সেই ভগবান্ কৃষ্ণই, উজ্জয়িনী নগরীতে সান্দীপনিনামক এক ব্রাহ্মণের

* निर्गतम्।

(१) क्वचित् च्यवनस्येति नास्ति। (२) शरैः प्रहृतप्राणं। (३) उलूपी। (४) परीक्षितं। (५) सान्दीपनि…

मेव भविष्यति। तथापि किं क्रियते, क उपालभ्यते। प्रभवति हि भगवान् विधिः, बलवती च नियतिः, आत्मेच्छया न प्रभवन्त्युच्छ्वसितुमपि, अनिषिद्धमपि वाचैकान्तनिष्ठुरस्य दैवहतकस्य विलसितानि (१) न क्षमते (२) दीर्घकालम् अपरमणीयं प्रेम (ङ)। प्रायेण च निसर्गत एवानायत (३) स्वभावभङ्गुराणि सुखानि, आयत (४) स्वभावानि च दुःखानि (च)। तथाहि कथमप्येकस्मिन् जन्मनि समागमः, जन्मान्तरसहस्राणि च विरहः प्राणिनाम् (छ)। अतो नार्हस्यनिन्द्यमात्मानं निन्दितुम्, आपतन्ति हि संसारपथमतिगहनमवतीर्णाना-

---

एवं किल श्रूयते रामकृष्णाभ्यां गुरुदक्षिणार्थमनुज्ञातो गुरुः सान्दीपनिः प्रभासतीर्थे मृतस्य निजपुत्रस्य प्रत्यानयनं प्रार्थये। अथ भगवान् वासुदेवः सागरं प्रविश्य पञ्चजनं निहत्य, यमालयं गत्वा तं गुरुपुत्रं प्रत्यानीय गुरवे समर्पितवान्। इति हरिवंशवार्ता। [illegible] तु भवतैव [illegible] सुमहान्ति [illegible] न दुष्कराणि।

(ङ) प्रभवतीति। तथापि अस्मिन् दुष्करविषयेऽपि। क उपालभ्यते निन्द्यते। विधिर्विधाता प्रभवति सर्वं कर्तुं शक्नोति, बलवती नियतिश्च तथा प्रभवति। उच्छ्वसितुमपि आत्मवशाः न, अनिषिद्धमपि [illegible]। विलसितानि [illegible] दैवहतकस्य [illegible] दीर्घकालं न क्षमते न सहते।

(च) प्रायेणेति। निसर्गत एव स्वभावत एव, अनायतानि अल्पकालस्थायीनि च तानि स्वभावभङ्गुराणि सुखानि भवन्ति। आयतस्वभावानि दीर्घाणि स्थायीनि च। तथा च मुनिवाक्यं महाभारते—"अस्मिन् संसारे [illegible] दुःखबहुलानि [illegible] सुखानीति।"

(छ) तथाहीति। कथमपि अतिकष्टेन। समागमः सम्मेलनम्।

(ज) अतो नात्मानमुपालभ्य इति। हि यस्मात् एते [illegible] विपत्पाताः, अतिगहनं संसारपथं अवतीर्णानां प्राणिनामीदृशाः विपदः आपतन्ति सम्भवन्ति, तत्र तु धीराः [illegible]

গুরুকে যমের বাড়ী হইতে আনিয়া দিয়াছিলেন। (ঙ) অতএব এই বিষয়েও একেবারে কিছু হইবে। তথাপি করিবেন কি, কাহাকেই বা নিন্দা করিবেন। ভগবান্ বিধাতাই সকল করিতে পারেন, আর পারে প্রবল নিয়তি; কিন্তু কেহই, নিজের ইচ্ছায় শ্বাসপ্রশ্বাসও করিতে পারে না; বিশেষতঃ—অত্যন্ত নিষ্ঠুর পোড়া দৈবের চরিত্রগুলিও অত্যন্ত খল; সুতরাং সে অতুলিত-মনোহর প্রেমকে দীর্ঘকাল সহ্য করিতে পারে না। (চ) প্রায়ই দেখা যায়— সুখ, অল্প ও অল্পকালস্থায়ী; কিন্তু দুঃখ বিস্তৃত ও দীর্ঘকালস্থায়ী। (ছ) দেখুন—প্রাণিগণের কোন এক জন্মে কোন প্রকারে মিলন হয়, কিন্তু বিরহটা অন্য সহস্র জন্ম ধরে হইয়া থাকে। (জ) অতএব আপনি অনিন্দনীয় আত্মাকে নিন্দা করিতে পারেন না; কারণ যাহারা অত্য-

---

(১) বিলসিতানি। (২) ক্ষমতে। (৩) অনায়ত...। (৪) আয়ত...।

धीरी हृदयाः, धीरा हि तरन्त्यापदम्" (ঘ) इत्येवंविधैरन्यैश्च मृदुभिरुपसान्त्वनैः संस्थाप्य तां पुनरपि निर्झरजलेनाञ्जलिपुटोपनीतेनानिच्छन्तीमपि बलात् प्रक्षा-लितमुखीमकारयत्। (ঙ)

अत्रान्तरे च श्रुतमहाश्वेतावृत्तान्तोपजातशोक इव समुत्सृष्टदिवसव्यापारो रविरपि भगवानधोमुखतामयासीत् (চ)। अथ क्षीणे दिवसे, परिणत प्रियङ्गु-मञ्जरी-रजोनिभेन (१) पिञ्जरिम्णा रज्यमाने विजृम्भिणि नभस्तलके, (ছ)

धीरा एव आपदं तरन्ति, न पुनरधीरा इत्यर्थः। [illegible] भावः। अत्र [illegible] सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(ঙ) इत्येवमिति। [illegible] संस्थाप्य [illegible], चन्द्रापीडः अञ्जलिपुटोपनीतेन निर्झरजलेन, अनिच्छन्तीमपि [illegible] तां महाश्वेतां बलात् पुनरपि प्रक्षालितमुखीमकारयदित्यन्वयः।

(চ) अत्रेति। किञ्च, अत्रान्तरे अस्मिन्नवसरे, [illegible] भगवान्; [illegible] [illegible] समुत्सृष्टः परित्यक्तो दिवसव्यापारो दिनकार्यं [illegible] सः। [illegible] अधोमुखतां याति। [illegible] [illegible] उत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ছ) अथेति। परिणता पक्वा या प्रियङ्गुमञ्जरी तस्याः रजोनिभेन परागतुल्येन, पिञ्जरस्य भाव इति पिञ्जरिमा तेन पिञ्जरवर्णेन रज्यमाने, नभस्तलके सूर्यबिम्बे, विजृम्भिणि [illegible] सति। [illegible] [illegible]।

অনেক মহাত্মাদের অবতীর্ণ হইয়াছেন, তাঁহাদের এই জাতীয় বিপদ্‌ঘটনা অবশ্যই উপস্থিত হইয়া থাকে; তবে তাঁহাদের মধ্যে ধীর-প্রকৃতিরাই সেই বিপদ্ হইতে উত্তীর্ণ হইতে পারেন" (ঘ) চন্দ্রাপীড়, এইরূপ ও অন্যরূপ কোমল সান্ত্বনাবাক্যে মহাশ্বেতাকে প্রকৃতিস্থ করিয়া, অঞ্জলিপুটে নির্ঝরের জল আনয়ন করিয়া, মহাশ্বেতা ইচ্ছা না করিলেও বলপূর্বক পুনরায় তাঁহাকে মুখ প্রক্ষালন করাইলেন।

(ঙ) এই সময়ে, মহাশ্বেতার বৃত্তান্ত শ্রবণ করিয়া ভগবান্ সূর্যেরও যেন শোক জন্মিয়াছিল, তাই তিনি দিনের কার্য পরিত্যাগ করিয়া অধোমুখ হইলেন। (চ) তাহার পর, দিন শেষ হইয়া আসিল; সূর্যমণ্ডল, প্রিয়ঙ্গুলতার পক্বমঞ্জরীর রেণুর ন্যায় পিঙ্গলবর্ণে রঞ্জিত হইয়া নীচের দিক্ ঝুলিয়া পড়িল। (ছ) কুঙ্কুম ফুলের রসে রঞ্জিত ও ঘন শুভ্র যমুনার

(१)…रजोनिभे।

अविरल-कुङ्कुम-कुसुम-रस-राग-दुकूल-कोमलेन आतपेन सुप्यमानेषु दिङ्मुखेषु, (ख) चकोर-नयन-तारका-कान्तिना च (१) पिङ्गलिम्ना विलिप्यमाने तिरोहितनीलिम्नि व्योम्नि, (ग) कोकिलविलोचन-च्छवि-मनुकुर्वति आतपे (२) लाक्षेव भुवनमर्चिषि, (घ) यथाप्रधानमुन्मिषत्सु नक्षत्रेषु, (ङ) वन-महिषमलीमसवपुषि (३) च लोचनमुषि (४) मुषित-तारकापथ-प्रविशि कालि-मानमातन्वति शार्वरे तमसि, (च) अतनु तिमिर-तिरोहित-हरितभासु (५) गहनतां यान्तीषु तरुराजिषु, (छ) स्तिमित-जल-बिन्दु जाल जनित-जडिम्नि पवन-

(क) अविरलेति। किम्भूतेषु दिङ्मुखेषु, अविरलं घनं यत् कुङ्कुमकुसुमानां रसेन रक्तं यत् दुकूलं पट्टवस्त्रं तद्वत् कोमलेन सुखस्पर्शेन, आतपेन [illegible], सुप्यमानेषु क्रमशः परित्यज्यमानेषु सत्सु। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ख) चकोरेति। किम्भूते व्योम्नि, [illegible] नीलिमा यत्र तस्मिन् व्योम्नि आकाशे, चकोरस्य पक्षिणो नयनतारकायाः कान्तिरिव कान्तिर्यस्य तादृशेन, पिङ्गलिम्ना पिङ्गलवर्णेन विलिप्यमाने सति। लुप्तोपमा।

(ग) कोकिलेति। किम्भूते, कोकिलस्य विलोचनच्छविरिव नयनकान्तिरिव यत् पिङ्गलं तस्मिन् सन्ध्याकालीने अर्चिषि तेजसि, भुवनं लाक्षेव आरक्तं कुर्वति सति। लुप्तोपमा।

(घ) यथेति। नक्षत्रेषु [illegible], यथाप्रधानं प्रधानमनुसृत्य [illegible], उन्मिषत्सु उदयेन प्रकाशमानेषु सत्सु।

(ङ) वनेति। वनमहिषस्येव कृष्णवर्णं मलिनं वपुराकारो यस्य तस्मिन्। लोचनं मुष्णाति हरति-[illegible] तस्मिन्, एतेन गाढत्वं प्रतिपादितम्। मुषितः अपहृतो [illegible] तारकापथस्य गगनस्य प्रथिमा विस्तारो येन तस्मिन्, एतेन सर्वव्यापित्वं सूचितम्। शार्वरे रात्रिसम्बन्धिनि [illegible] तमसि अन्धकारे, कालिमानं कृष्णत्वं [illegible] विस्तारयति सति। अत्र लुप्तोपमा [illegible] द्वयोः संसृष्टिः।

(च) अतनुमिति। अतनुभिर्बहुभिस्तिमिरैस्तिरोहिता आच्छादिता हरिता हरिद्वर्णा भा दीप्तयो यासां तासु, तरुराजिषु गहनतां घनत्वाद्दर्शनेन निबिडतां यान्तीषु सतीषु। अत्र [illegible]।

তার কোমল অস্তকালীন সূর্য্যালোক, ক্রমে সমস্ত দিঙ্মণ্ডল পরিত্যাগ করিতে লাগিল। (খ) আকাশের নীলবর্ণ লুকাইয়া গেল, ক্রমে চকোর পক্ষীর নয়নের তারার ন্যায় কান্তি-সম্পন্ন পিঙ্গলবর্ণে সমস্ত আকাশ লিপ্ত হইল। (গ) কোকিলের নয়নের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ সন্ধ্যার আলোক, জগৎ আরক্তবর্ণ করিল। (ঘ) নক্ষত্রসমূহ প্রধান অনুক্রমে উদয় পাইতে লাগিল। (ঙ) বন্য মহিষের ন্যায় মলিনবর্ণ রাত্রির অন্ধকার, লোকের দৃষ্টিশক্তি লোপ করিয়া, আকাশের বিস্তার কমাইয়া, জগতের সর্ব্বত্র কালিমা বিস্তার করিল। (চ) গাঢ় অন্ধকারে বৃক্ষসমূহের হরিত্বর্ণ তিরোহিত হইল; সুতরাং তাহা আরও ঘন হইয়া উঠিল।

(१) ...तारकाकान्तिना। (२) अनुकारयति।

(३) वनमहिषमलीमसवपुषि। (४) [illegible]। (५) ...हरितभासु।

[illegible]न-कुसुम-परिमलानुमित-गमने चलित-लता-विटप-बहलिपल्लवे च पवने (क) निद्रा-निभृत-पतत्त्रिणि निशामुखे, (ख) महाश्वेता मन्दं मन्दमुत्थाय भगवतीमुपास्य पश्चिमां सन्ध्यां, कमण्डलुजलेन प्रक्षालितचरणा वल्कलशयनीये [illegible] (१) निःश्वस्य निषसाद (ग)। चन्द्रापीडोऽप्युत्थाय कुसुमं [illegible] द्वितीये शिलातले मृदुभि- र्लतापल्लवैः शय्यामकल्पयत् (घ)। उपविश्य तस्यां पुनः पुनः (२) तामेव [illegible] सततमभावयत्। आलोचयच्च मनसि—'एवं नाम (३)

(क) [illegible]ति। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] यस्मिन् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] यस्मिन्, तथा चलितं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] यस्मिन्, पवने वायौ च प्रागे [illegible] सति। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। अत्र [illegible] [illegible]।

(ख) निद्रेति। निद्रया [illegible] निःशब्दाः पतत्त्रिणो [illegible] यस्मिन् तत्र, निशामुखे रजन्यारम्भे सति।

(ग) महेति। [illegible] [illegible]। पश्चिमां सन्ध्यां सायंसन्ध्याम्। निषसाद उपविवेश।

(घ) चन्द्रेति। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

(ङ) उपेति। तस्यां शय्यायां। [illegible]। [illegible] [illegible], एवं नाम [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], तथा [illegible] [illegible]। [illegible], [illegible] [illegible]

(ক) তখন যে বায়ু বহিত হইতেছিল, যাহার শিশিরবিন্দুসমূহে তাহার শীতলতা অনুমিত হইতেছিল, বন্য পুষ্পের মৃদু সৌরভে তাহার গমন সূচিত হইতেছিল এবং সেই বায়ুভরে লতার পল্লবগুলি কাঁপিতেছিল। (খ) এই ভাবে প্রদোষকাল উপস্থিত হইল, পক্ষিগণ নীরব হইয়া গেল; (গ) এমন সময়ে মহাশ্বেতা, ধীরে ধীরে উঠিয়া সায়ংকালীন সন্ধ্যার উপাসনা করিয়া কমণ্ডলুর জলে চরণযুগল প্রক্ষালন করিয়া, বিষাদের সহিত দীর্ঘ নিশ্বাস ত্যাগ করিয়া, বল্কলের শয্যার উপরে উপবেশন করিলেন। (ঘ) এ দিকে চন্দ্রাপীড়ও উঠিয়া অঞ্জলিপুটে পুষ্পের সহিত ঝরণার জল লইয়া সূর্য্যের উদ্দেশে তাহা নিক্ষেপ করিলেন, পরে সন্ধ্যা ও ইষ্টদেবতার নমস্কার করিয়া, কোমল লতা-পল্লবদ্বারা সেই দ্বিতীয় প্রস্তরখণ্ডের উপরে শয্যা নির্মাণ করিলেন। (ঙ) তাহার পর সেই শয্যার উপরে উপবেশন করিয়া মনে মনে সেই মহাশ্বেতার বৃত্তান্ত

(১) [illegible] निःश्वस्य। (२) क्वचित् [illegible]। (३) [illegible]।

अप्रतीकार-दारुणो दुर्विषहवेगः कष्टः कुसुमायुधः, यदनेनाभिभूता महात्मानोऽपि एवमनपेक्षितकालक्रमाः समुत्सारितधैर्याः (१) सद्यो जीवितं जहति। सर्वथा नमो भगवते त्रिभुवनाभ्यर्चितप्रभावाय मकरकेतनाये"ति (ट)।

पुनः पप्रच्छ चैनाम्—"भगवति! सा तव परिचारिका वनवासव्यसनमित्रं दुःखसब्रह्मचारिणी तरलिका क्व गता" इति। (ठ)

अथ साऽकथयत्—"महाभाग! यत्तन्मया कथितममृतसम्भवमप्सरसां कुलम्, तस्मान्मदिरेति नाम्ना मदिरायतेक्षणा कन्यकाभूत् (ड)। तस्याश्चासौ सकल-गन्धर्व-कुल-मुकुट-कुसुम-पीठ-प्रतिष्ठित-चरणो देवश्चित्ररथः पाणिमग्रहीत् (ढ)।

अभिभूता आक्रान्ताः, महात्मानोऽपि जनाः, अनपेक्षितकालक्रमाः अचिन्तितमरणसमयाः तथा समुत्सारितं कुसुमायुधेनैव दूरीकृतं धैर्यं येषां ते तथाभूताः सन्तः। जहति परित्यजन्ति। त्रिभुवनेन त्रिलोकवासिना जनेन अभ्यर्चितः प्रभावो यस्य तस्मै, मकरकेतनाय कन्दर्पाय।

कादम्बर्यां खलु महाश्वेतावाक्यान्येव [illegible] "अपि [illegible]" इति [illegible]।

(ठ) कादम्बरीकथानकस्य [illegible] पुनः [illegible] इति। [illegible] वनवास एव व्यसनं विपत्तिस्तत्र मित्रं सहायीभूता, तथा दुःखे सब्रह्मचारिणी समाना [illegible]।

(ड) अथेति। मदिरा [illegible] मदिरायते मदिरावत् [illegible] दीर्घे ईक्षणे चक्षुषी यस्याः सा। "मदिरा (स्त्री) मदनखञ्जनः ... मद्ये।" इति शब्दकल्पद्रुमः।

(ढ) तस्या इति। चित्र, [illegible] सकलस्य गन्धर्वकुलस्य मुकुटकुसुमं किरीटाग्रमेव पीठं तत्र प्रतिष्ठितौ चरणौ यस्य सः, सकलगन्धर्वराजचक्रवर्तीत्यर्थः, देवश्चित्ररथः, तस्या मदिरायाः पाणिमग्रहीत्।

হাহাকার করিতে লাগিলেন। আবার উঁহার মনে হইল—'কামদেব এইরূপই বটেন, ইঁহার প্রতীকার নাই, তাই ইনি ভয়ঙ্কর; ইঁহার বেগ সহ্য করা যায় না, সুতরাং ইনি অত্যন্ত কষ্টদায়ক; যে হেতু—ইনি আক্রমণ করিলে প্রধান ব্যক্তিরাও, কালবিলম্ব সহ্য করিতে পারেন না, তাঁহাদেরও ধৈর্য্য নষ্ট হইয়া যায়; তখন তাঁহারা সদ্যই জীবন ত্যাগ করেন। অতএব ত্রিজগতের লোক যাঁহার প্রভাবের পূজা করে, সেই ভগবান্ কামদেবকে সর্ব্বপ্রকারে নমস্কার করি।' (ঠ) তদনন্তর চন্দ্রাপীড় পুনরায় মহাশ্বেতাকে জিজ্ঞাসা করিলেন—"ভগবতি! আপনার বনবাস-বিপদের সহায় ও দুঃখভোগের সহচরী পরিচারিকা সেই তরলিকা কোথায় গিয়াছে?"

(ড) তাহার পর মহাশ্বেতা বলিল,—"মহাশয়! আমি পূর্ব্বে যে সেই অমৃত হইতে উৎপন্ন অপ্সরার বংশের কথা বলিয়াছি, সেই বংশ হইতে মদিরায়তনয়না মদিরা নামে একটি কন্যা জন্ম গ্রহণ করেন। (ঢ) সমস্ত গন্ধর্ব্বগণের মুকুটাগ্র-পীঠে যাঁহার চরণযুগল প্রতিষ্ঠিত

---

(१) अपसारितधैर्याः।

অপরিমিতগুণাকৃষ্টহৃদয়স্তামবিমিতাতুলস্নেহেন (১) অখিলতাপিতান্তঃপুরেণ চৈত্র-রথঃ পট্টবন্ধেন ছত্র-চীন-চামর-চিহ্নেন মহাদেবীশব্দেন পরং প্রীতঃ প্রসাদমকরোৎ (ক)। অন্যোন্যপ্রেমসংবর্দ্ধিতয়োশ্চ তয়ো র্যৌবনসুখানি সেবমানয়োঃ কালেনাপত্যংভূতমেক-জীবিতমিব পিত্রোঃ, অথবা সর্ব্বস্যৈব গন্ধর্ব্বকুলস্য বা জীবলোকস্য, দুহিতরত্ন-মুদপাদি কাদম্বরীতি নাম্না (খ)। সা চ মে জন্মতঃ (২) প্রভৃত্যেকাসন-শয়ন-পানাশনা পরং প্রেমস্থানমবিভক্তবিশ্বাসসখী দ্বিতীয়মিব হৃদয়ং আসীৎ (গ)।

(ক) অপরেতি। চিত্র, অপরিমিতৈর্গুণৈরাকৃষ্টা [illegible] হৃদয়ং যস্য স তাদৃশ-চিত্ররথঃ, পরং প্রীতঃ সন্। [illegible] মহাদেবীশব্দেন [illegible] প্রসাদমকরোৎ।

(খ) অন্যোন্যেতি। অন্যোন্যেন পরস্পরমেব [illegible] তয়োঃ, [illegible] পিত্রোর্মাতাপিত্রোঃ, অথবা সর্ব্বস্যৈব গন্ধর্ব্বকুলস্য, বা অথবা সর্ব্বস্যৈব জীব-লোকস্য, [illegible] জীবনমিব, [illegible] ভাবঃ। কাদম্বরী নাম্না [illegible] কাদম্বরীতি নাম। অত্র [illegible] অলঙ্কারঃ।

(গ) সেতি। [illegible] মে মম [illegible] প্রেমস্থানং [illegible], অবিভক্তবিশ্বাসসখী [illegible]। অত্র [illegible] অলঙ্কারঃ।

হইয়াছে, সেই মুগ্ধমতি গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথ, সেই মদিরার পাণিগ্রহণ করেন। (ক) এবং মদিরার অনন্তগুণে আকৃষ্টচিত্ত গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথ অত্যন্ত সন্তুষ্ট হইয়া তাঁহাকে 'মহাদেবী' উপাধি দান করিয়া অনুগ্রহ করেন; সেই মহাদেবী পদ, অন্য রমণীর পক্ষে দুর্লভ ছিল, এবং তাহাকে অন্তঃপুরের অন্যান্য রমণী, প্রণিয়া হইতে নীচে পড়িয়া গেল এবং গন্ধর্ব্বরাজ সেই উপাধির সঙ্গে সঙ্গে একখানা সুবর্ণফলক দান করিলেন এবং মদিরার জন্য ছত্রধারী, বেত্রধারী ও চামরধারী ভৃত্য নিযুক্ত করিলেন। (খ) তাঁহারা পরস্পর, পরস্পরের প্রেম বৃদ্ধি করিতে থাকায় থাকিয়া যৌবনের সমস্ত সুখভোগ করিতে লাগিলেন; কালক্রমে কাদম্বরী নামে তাঁহাদের একটি আশ্চর্য্য কন্যারত্ন জন্ম গ্রহণ করিল; সে, পিতা-মাতার অথবা সমস্ত গন্ধর্ব্বগণের, কিংবা সমস্ত জীবলোকেরই যেন একমাত্র জীবন ছিল। (গ) জন্মকাল হইতে, কাদম্বরী আর আমি, একস্থানে উপবেশন, শয়ন, পান ও ভোজন করিতাম; তাহাতে সে আমার অত্যন্ত প্রেমের পাত্র ও সমস্ত বিশ্বাসস্থান দ্বিতীয় হৃদয়ের ন্যায় প্রাণ-সখী। (ঘ) সে আর আমি,

---

(১) [illegible]। (২) জন্মতঃ।

एकत्र तया मया च स्तन्यपीतादिव्यवहारेण (१) कलाः परिचिताः, विश्रब्धयोश्चिताभिश्च क्रीडाभिरभिन्नजनितनिर्भरमपनीतो बाल्यभावः (ङ)। सा चानुना मदीयेन वृत्तान्तेन समुपजातशोका नियममग्रहीत्—"नाहं कथंचिदपि शोकार्तायां महाश्वेतायामात्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि" इति। सखीजनस्य पुरतः—सशपथमभिहितवती च—"यदि कथमपि मामनिच्छन्तीमपि बलात्तातः कस्मैचित् दातुमिच्छति, तदाऽनशनेन वा हुताशनेन वा रज्ज्वा वा विषेण वा नियतमात्मानमुत्स्रक्ष्यामि" इति (च)। सर्वं च तदात्मदुहितुः कृतनिश्चयं नियम-ग्रहणं कर्णपरम्परया परिजनमुखाद्गन्धर्वराजश्चित्ररथः स्वयमश्रौषीत्। गच्छति काले समुपारूढनिर्भरयौवनामालोक्य सुतां (२) कालकुपितापदवयः (३) क्षणमपि न धृतिमलभत। एकापत्यतया चातिस्निग्धतया च न शक्तः किंचिदपि

(ङ) एकत्रेति। परिचिताः अभ्यस्ताः। विश्रब्धयोः [illegible] कलाः [illegible] तया [illegible] सहचया तथा [illegible]। बाल्यभावः शैशवं, अपनीतः अतिवाहितः।

(च) सेति। महाश्वेतायाः शोकाभिभूतायां तु पाणिं ग्राहयिष्यामीत्यन्वयः। अनशनेन अनाहारेण, हुताशनेन तत्र प्रवेशेन, रज्ज्वा उद्बन्धनेन, विषेण विषभक्षणेन। नियतं निश्चितं, आत्मानं शरीरं, उत्स्रक्ष्यामि परित्यक्ष्यामि।

(छ) सर्वमिति। नियमग्रहणं [illegible]। सुतां कन्यां कादम्बरीं, समुपारूढं [illegible] यौवनं [illegible]। [illegible]। धृतिं धैर्यम्।

একত্র নৃত্যগীতাদি কলাবিদ্যা অভ্যাস করিয়াছি এবং বালকের উপযুক্ত নানাবিধ খেলা করিয়া অবাধে বাল্যকাল অতিবাহিত করিয়াছি। (ঙ) কিন্তু আমার এই শোকের বৃত্তান্তে তাহারও শোক জন্মিয়াছিল, তাই সে, স্থির করিয়াছে যে,—'মহাশ্বেতা শোকাতুর থাকিতে আমি কোন প্রকারেও নিজের পাণিগ্রহণ করাইব না'। এবং সখীগণের সম্মুখে শপথ করিয়াছে যে—'আমার অনিচ্ছাসত্ত্বেও পিতা যদি বলপূর্ব্বক আমাকে কখনও কাহারও হস্তে দান করিতে ইচ্ছা করেন, তাহা হইলে আমি, অনশন অথবা অগ্নিপ্রবেশ কিংবা উদ্বন্ধন অথবা বিষভক্ষণ করিয়া নিশ্চয়ই প্রাণ পরিত্যাগ করিব।' (চ) তাহার পর গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথ, নিজ কন্যার মনে মনে দৃঢ়-নিশ্চয় ও শপথ-বাক্য—এ সমস্তই কর্ণপরম্পরায় কোন পরিজনের নিকট নিজেই শুনিতে পাইলেন। কিছুকাল অতীত হইল, তাহার পর কন্যা কাদম্বরীর পূর্ণ যৌবনকাল উপস্থিত দেখিয়া, অত্যন্ত সন্তপ্ত হইয়া ক্ষণকালের জন্যও ধৈর্য্যলাভ করিতে পারেন নাই, এবং কাদম্বরী একমাত্র সন্তান, তাহাকে আবার অত্যন্ত প্রিয়; সুতরাং নিজে, তাহাকে কিছুই বলিতে

---

(१) क्रीडनकव्यवहारेण। (२) च तां। (३) समुत्पन्नसन्तापः।

नामभिधातुम् (न)। अपश्यन्त्यन्यदुपायान्तरम्, इदमत्र प्राप्तकालमिति मत्वा, तया महादेव्या मदिरया सहावधार्य क्षीरोदनामानं कञ्चुकिनं (१) "वत्से! महाश्वेते! त्वद्व्यतिकरेणैव (२) दग्धहृदयानामिदमपरमस्माकमुपस्थितम्, इदानीन्तु कादम्बरीमनुनेतुं (३) त्वं शरणम्" इति सन्दिश्य मत्समीपमद्यैव (४) प्रत्युषसि प्रेषितवान् (प)। ततो मया गुरुवचन-गौरवेण सखीप्रेम्णा च क्षीरोदेन सार्धं सा तरलिका "सखि! कादम्बरि! किं दुःखितमपि जनमतितरां दुःखयसि। जीवन्तीमिच्छसि चेन्मां तत् कुरु गुरुवचनमवितथम्" इति सन्दिश्य विसर्जिता (फ)। नातिचिरं गतायाञ्च तस्यामनन्तरमेवेमां भूमिमनुप्राप्तो महाभागः" इत्यभिधाय तूष्णीमभवत्। (ब)

(प) अपश्यन्तीति। अत्र [illegible] न च अपश्यन्नुपायमिति पाठेन समन्वयः। प्राप्तकालमुचितम्। अवधार्य आलोचनया निर्णीय। कञ्चुकिनमिति [illegible] पर्यवसायः। त्वद्व्यतिकरेणैव तव दुःखेनैव [illegible] इदमपरं दुःखमुपस्थितम्, कादम्बर्या [illegible] इति भावः। अनुनेतुं अनुनयेन [illegible] [illegible]। [illegible] इति भावः।

(फ) तत इति। सा तरलिका विसर्जितेति सम्बन्धः। अर्थं कादम्बरीम्। दुःखयसि [illegible] भावः। तथाहि, गुरुवचनं पितुराज्ञावाक्यं अवितथं कुरु [illegible] सत्यं प्रतिपादय, अन्यथाहं जीवनं परित्यक्ष्यामीति भावः। अत्र [illegible], न च [illegible] समन्वयः।

(ब) नातीति। तस्यां तरलिकायां। नातिचिरं नातिदूरे। महाभागो भवान्।

পারেন নাই। (প) অতএব অন্য উপায় না দেখিয়া 'এখনে ইহাই উচিত' এইরূপ মনে করিয়া, সেই মহাদেবী মদিরার সহিত আলোচনা পূর্ব্বক স্থির করিয়া, অদ্যই প্রাতঃকালে আমার নিকটে ক্ষীরোদনামে কোন কঞ্চুকীকে এই কথা বলিয়া পাঠাইয়া দিয়াছিলেন যে,— "বৎসে! মহাশ্বেতে! কেবল তোমার ঘটনাতেই শোকানলে আমাদের হৃদয় দগ্ধ হইয়া গিয়াছে, তাহার পর আবার এই আর এক দুঃখ, উপস্থিত; অতএব এখন অনুনয়বাক্যে কাদম্বরীকে সম্মত করিতে একমাত্র তুমিই আমাদের আশ্রয়।" (ফ) তাহার পর আমি, গুরুজনের আদেশের প্রতি গৌরব ও সখীর প্রতি প্রণয়বশতঃ, এই কথা বলিয়া ক্ষীরোদের সঙ্গে তরলিকাকে পাঠাইয়া দিয়াছি যে—'সখি! কাদম্বরি! তুমি দুঃখিত ব্যক্তিকে আরও দুঃখিত করিতেছ কেন? তুমি যদি আমাকে জীবিত দেখিতে ইচ্ছা কর, তাহা হইলে পিতার বাক্য সত্য কর।' (ব) তরলিকা অনতিপূর্ব্বে চলিয়া গেলে, তাহার পরই আপনি এখানে উপস্থিত হইয়াছেন" এই কথা বলিয়া মহাশ্বেতা নীরব রহিল।

(१) क्वचित् 'दूति गता' इत्यधिकः पाठः। (२) त्वद्व्यतिकरेणैव। (३) कादम्बरीमभिबोद्धुं।
(४) क्वचित् 'अद्यैव' इति पाठो नास्ति।

अत्रान्तरे चाम्बरतलेन विडम्बयन्निव शोकानलदह्यमानं महाश्वेताहृदयम्, वहन्निव मुनिकुमारवधमहापातकम्, दर्शयन्निव चिरकालसक्तं दक्षयागागमन-दाहचिह्नम्, अविरलमसृणतृणचरणधवलः कृष्णमृगाजिन (१) प्रावृतार्धो वामस्तन इवाम्बिकायाः, धूर्जटिजटामुकुटचूडामणिभ्रममुदगात्तारकाराजः। (अ)

क्रमेण चोदिते गगनमहापयोधिपुलिने सकललोकनिद्राकलशे कुमुदबान्धवे विघटितकुमुदवने धवलितदशदिशि शङ्खधवले शीतलातपमयेऽपि (२) मानिनी-

(अ) अत्रेति। अत्रान्तरे अस्मिन्नवसरे। धूर्जटेः शूलिनः जटा तस्य मुकुटस्य चूडामणिरिति धूर्जटिः त्रिपुरारिः जटामुकुटस्य या चूडा तस्या मणिः। [illegible] भगवान् तारकाराजः, चाम्बरतलेन कौमुदीमयेन, शोकानलेन दग्धं अनुमन्यमानं यस्य तथाभूतं महाश्वेताया हृदयं विडम्बयन्निव अनुकुर्वन्निव, चाम्बरतलेन मुनिकुमारस्य पुण्डरीकस्य वधो मदनशरपातेन [illegible] महापातकं तत् वहन्निव धारयन्निव "[illegible]" इत्यादि [illegible] बोध्यम्। तथा चाम्बरतलेन चिरकालसक्तं दक्षयागागमनेन यो दाहजः चिह्नं दर्शयन्निव [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] इति [illegible]। [illegible] [illegible]:।

पुरा [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] इति [illegible]।

(आ) क्रमेणेति। किञ्च, गगनमेव महापयोधिः [illegible] पुलिनं [illegible]। अत्र [illegible]:। समस्तानां लोकानां भूरादीनां

(অ) এই সময়ে, মহাদেবের চূড়ার মণি ও নক্ষত্রস্বামী চন্দ্র উদয় পাইলেন;— তিনি কলঙ্কচ্ছলে, শোকানলদগ্ধ মহাশ্বেতার হৃদয়েরই যেন অনুকরণ করিতেছিলেন, মুনিকুমার-হত্যার মহাপাতকই যেন ধারণ করিতেছিলেন এবং দক্ষের যাগানলে যে দগ্ধ হইয়াছিলেন, চিরকাল-সংলগ্ন সেই চিহ্নই যেন দেখাইতেছিলেন এবং ঘন-তৃণ-সেবনে শুক্লবর্ণ ও কৃষ্ণসারের চর্ম্মে অর্দ্ধ-আবৃত পার্ব্বতীর বামস্তনটির ন্যায় বিরাজ করিতেছিলেন।

(ব) তাহার পর, আকাশরূপ মহাসমুদ্রের পুলিনস্বরূপ, ভূপ্রভৃতি সমস্ত লোকের মানসিক নিদ্রাকলসস্বরূপ, কুমুদগণের বন্ধু, শঙ্খের ন্যায় শুক্লবর্ণ ও মানিনীগণের মানভঙ্গকারী

(१) कृष्णाजिन…। (२) ऽतिशीतलातपवति।

मानसवी (१) कपिलोपिनि (२) मन्दाकिनीजले, (ञ) [illegible] ताम्र (३) [illegible] (४) [illegible], (ट) [illegible] च कैलास-मणिमयशिखराणां सर्वतः स्रोतःस्वपि प्रस्रवत्सु, (ठ) [illegible] [illegible] इव [illegible], (ड)

[illegible]

(ञ) [illegible]

(ट) [illegible]

(ठ) [illegible]

(ड) [illegible] "[illegible]" इति विश्वः।

ওষধিগণ চন্দ্রকিরণ, কুমুদবন প্রকাশ করিয়া, দশদিক্ উদ্ভাসিত করিয়া এবং শ্বেতপদ্মের [illegible] লোহিত হইয়া ক্রমে উপরে উঠিতে লাগিল; (ঝ) নক্ষত্রের আলোক, চন্দ্রের কিরণে আবৃত হইয়া ক্রমে ক্ষীণ হইয়া গেল। (ঞ) সকল দিকেই জ্যোৎস্নাপ্লাবনকারী কৈলাস পর্বতের চন্দ্রকান্তমণি হইতে নির্ঝরের জল পতিত হইতেছিল। (ট) [illegible] মধ্যে নূতন নূতন মৃণালের অঙ্কুর ছিল এবং পদ্মবনকে আক্রমণ করিবার জন্যই যেন তাহার উপরে চন্দ্রের কিরণ পড়িয়াছিল, তাহাতে পদ্মবনের শোভা বিলুপ্ত হইয়াছিল। (ঠ) রাত্রি

---

(১)...[illegible]। (২) [illegible] পাঠো নাস্তি। (৩) [illegible]। (৪) [illegible]।

कमलोदरकोषनिद्रे च शतपत्रोपविशविकसितमधुपि विश्वति विरहिणि चक्रवाक-चक्रवाके, (क) निर्वृत्ते च (१) चन्द्रोदये विस्तृते सर्व-भुवनभवनभाग-गोचारिणि विविधविहारिणि मनोहारिणि विद्याधराभिसारिकाजने, (ख) चन्द्रापीडः तुषारशीतलं महाश्वेतां पल्लवशयने शनैः शनैः (२) समुपाविशत्। तस्यां वेलायां किंनु खलु मामन्तरेण चिन्तयति वैशम्पायनः, किंवा वराकी पत्रलेखा, किंवा राजपुत्रलोकः' इति चिन्तयन्नेव निद्रां ययौ। (ग)

अथ क्षीणायां क्षपायामुषसि सन्ध्यामुपास्य शिलातलोपविष्टायां पवित्राक्ष-समर्थयापि जपन्त्यां महाश्वेतायां, निर्वर्तितप्राभातिकविधौ चन्द्रापीडे, (घ)

(क) कमलेति। विच। विरहिणि नियतमी चक्रवाकमिथुनैर्विरहस्य आत्मानिकत्वादिति भावः, अतएव कमलोदरे कमलकोषे निद्रा दुःखात् आर्तिया निद्रा यस्य तथाविधम्, तथा शतपत्रोदरनिर्गतमधुकरैः शोभितविरहिणीनिवहसहचरैः निर्वर्तितं कम्पितं सपुटं च तथाविधम्, चक्रवाकानां वैविध्यां चक्रवाकी मध्यमी वक्षसि विश्वति एवं कुर्वति सति। अत्र श्लेषानुप्राणितोऽलङ्कारः।

(ख) निवृत्त इति। विच। चन्द्रोदये निवृत्ते निष्पन्ने चन्द्रोदयेन निखिलभुवन इति भावः, सर्वभुवन-भवनभाग आत्मनः सुखिनश्च एव गोचरात्मसुखारा यस्य तथाविधम्, विविधविहारिणि आकाशचारिणि, मनोहारिणि परमसुन्दरी, विद्याधराभिसारिकाजने विस्तृते सर्वत्र संचरणशीलतया प्रसारिते सति। अत्र सर्वभाविषये विरहं वैशम्पायनं, तथा हारिणीत्वस्य एकस्मिन्नाक्षेपेण संकरः संसृष्टिः।

(ग) चन्द्रेति। सुप्तां निद्रितवान्। मामन्तरेण विना। वराकी क्षुद्रा।

(घ). अथेति। क्षपायां रात्रौ क्षीणायां अपगतप्रायायां उषसि प्रभातकाले। अक्षसमर्थयापि-"आनन्द रूपके"त्यादिश्रवणात्। चन्द्रापीडे च निर्वर्तितो निष्पादितः प्राभातिकविधिः प्रातःकृत्यं येन तथाविधे सति।

উপস্থিত হওয়ায় চক্রবাকদম্পতিগণ, পরস্পর বিচ্ছিন্ন ও শোক-বিহ্বল ক্লিষ্টভূত হইয়া রব করিতেছিল, এদিকে অস্তোন্মুখকোরকের বৃহৎ বৃহৎ ভ্রমর তাহাদিগকে কাঁপাইতেছিল। (গ) আকাশচারী পরমসুন্দর বিদ্যাধরবধূগণ শিশিরের ন্যায় আনন্দাপ্লুত বিস্তৃত করতঃ অভিসারে যাইতেছিল, কিন্তু চন্দ্রের উদয়ে অন্ধকার দূরীভূত হওয়ায় তাহারা ইতস্ততঃ পলায়ন করিতে লাগিল। (ঘ) এমন সময়ে চন্দ্রাপীড়, মহাশ্বেতাকে নিদ্রিত দেখিয়া ধীরে ধীরে পল্লবের শয্যার উপরে উপবেশন করিলেন এবং চিন্তা করিতে লাগিলেন যে,—'এই সময়ে বৈশম্পায়ন আমাকে না দেখিয়া কি চিন্তা করিতেছেন,—বালিকা পত্রলেখাই বা কি ভাবিতেছে এবং রাজপুত্রগণই বা কি মনে করিতেছেন' এইরূপ চিন্তা করিতে করিতে নিদ্রিত হইয়া পড়িলেন।

(ঙ) অনন্তর রাত্রি অতীত হইলে প্রভাতকালে, মহাশ্বেতা সন্ধ্যাবন্দন শেষ করিয়া

(१) निवृत्ते च। (२) क्वचित् विवक्षितांश्चित्।

তরলিকয়া ষোড়শবর্ষবয়সা, সাবষ্টম্ভাকৃতিনা, মদ-খেদালস-গজপতেরিব মন্থর-গুরুণি (১) পদানি নিক্ষিপতা, (ক) পর্য্যুষিতচন্দনাঙ্গরাগ-ধূসরোরুদণ্ডকেন, কুঙ্কুম-রাগ-পিঞ্জরাম্বরেণ, চামীকর-শৃঙ্খলা-কলাপ-নিবিড়-নিয়মিতং কক্ষ্যাকল্পা-তিরিক্ত-[illegible] এব কেবলং বসানেন, (খ) নিম্নোদরতয়া বিভাব্য-মধ্যেন, বিপুলবক্ষসা, দীর্ঘানুবৃত্তপীনবাহুনা, (গ) বামপ্রকোষ্ঠদোলায়মান-মাণিক্যবলয়েন, [illegible] কর্ণা-

(ক) তরেতি। [illegible] তরলিকয়া [illegible] পরীবারঃ। [illegible] বিশেষণানি। ষোড়শবর্ষাণি বয়ো যস্য তেন। [illegible] আকৃতির্যস্য তেন। [illegible] মন্থরাণি [illegible] গুরুণি [illegible], পদানি [illegible], নিক্ষিপতা [illegible]।

(খ) পর্য্যুষিতেতি। [illegible] পূর্ব্বদিনকৃত [illegible] চন্দনাঙ্গরাগেণ ধূসরৌ [illegible] যস্য তেন। কুঙ্কুমরাগেণ [illegible] পিঞ্জরং [illegible] কক্ষ্যাকল্পাতিরিক্তং [illegible] চামীকরস্য [illegible] নিবিড়ং [illegible] নিয়মিতং [illegible] কেবলং [illegible] বসানেন পরিদধতা, ন তু [illegible] ধারয়তেতি ভাবঃ।

(গ) নিম্নেতি। নিম্নোদরতয়া [illegible] বিভাব্যমানং মধ্যং যস্য তেন। বিপুলবক্ষসা [illegible]। দীর্ঘৌ আয়তৌ, অনুবৃত্তৌ সুগোলৌ, পীনৌ স্থূলৌ চ বাহূ যস্য তেন।

(ঘ) বামেতি। বামে প্রকোষ্ঠে [illegible] দোলায়মানং [illegible] মাণিক্যবলয়ং যস্য তেন [illegible]

একখানি [illegible] উপরে উপবেশন করিয়া [illegible] করিতেছিল, চন্দ্রাপীড় [illegible] সমাপন করিয়া অবস্থান করিতেছিলেন (ক) এমন সময়ে কেয়ূরক নামে একটী [illegible] সহিত তরলিকা আসিয়া সেই প্রভাতকালেই সেখানে উপস্থিত হইল; সেই বালকটির বয়স ষোড়শ বর্ষ বলিয়া বোধ হইতেছিল, আকৃতিও সরল ছিল এবং সে, মদপরিশ্রমে অলসগামী গজরাজের ন্যায় ধীরে ধীরে পদক্ষেপ করিয়া আসিতেছিল, (খ) শুষ্ক চন্দনের অঙ্গরাগে তাহার ঊরুযুগল ধূসরবর্ণ ছিল এবং কুঙ্কুমের অঙ্গরাগে কোন স্থান পিঙ্গলবর্ণ ও কোন স্থান রক্তবর্ণ ছিল; সে কেবল পরিধেয় বস্ত্রই পরিধান করিয়াছিল, সেই বস্ত্রখানা স্বর্ণ-শৃঙ্খলা-কলাপে দৃঢ়বদ্ধ ছিল, এবং তাহার কটিবন্ধনের অতিরিক্ত অঞ্চলটুকু [illegible] কাঁপিতেছিল; (গ) তাহার উদর কৃশ ছিল বলিয়া কটিদেশও কৃশ ছিল, বক্ষঃস্থল বিস্তৃত ছিল এবং বাহুযুগল দীর্ঘ, সুগোল ও স্থূল ছিল; (ঘ) বাম হস্তে একটি রত্ন-বলয় দুলিতেছিল, কর্ণাভরণের [illegible] হইতে [illegible] নানাবর্ণের কিরণজাল নীচের দিকে পড়িতেছিল, তাহাতে বোধ

(১) [illegible]……মন্থরমন্থরাণি।

[illegible]रीवमिवं[illegible]सुदधता, (ख) चूतपल्लवकोमलमनवरतताम्बूल-रस-रागान्धकारमधरं दधता, (ग) कर्णान्तायतस्य कमलधवलस्य लोचनयुगलस्य धवलधवलैव दिगन्तराणि कुमुदवनानीव वर्षता शुक्लीकृतमिव दिवसं कुर्वता, (घ) कमलपत्र-मृदु-ललाटेन, अलि-कुल नील-सरल चिकुर[illegible] [illegible]तिना, राजकुल-सम्पर्क-चतुरेण, गन्धर्वदारकेण केयूरकनाम्ना [illegible] [illegible] [illegible] मानुषासीत् (ङ)। आगतस्य च [illegible]

[illegible] इव। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ... अत्र [illegible] अलङ्कारः।

(ख) चूतेति। चूतस्य [illegible] पल्लववत् कोमलं, तथा अनवरतेन ताम्बूलेन [illegible] [illegible] ... अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ग) कर्णेति। कर्णान्तायतस्य कमलधवलस्य लोचनयुगलस्य [illegible] धवलाभिः दिगन्तराणि [illegible] [illegible] कुमुदवनानि वर्षतेव, दिवसं शुक्लीकृतमिव [illegible] कुर्वतेव, लोचनयुगलस्य [illegible] [illegible] भावः। अत्र [illegible] [illegible] [illegible]; तथा [illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] 'कमलधवलस्य लोचन[illegible] [illegible] दिगन्तराणि [illegible]' इति पाठेन [illegible]।

(घ) कमलेति। कमलपत्रवत् [illegible] मृदु [illegible] ललाटं यस्य तेन। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। [illegible] [illegible] [illegible] तेन। तत्र राजकुले [illegible] [illegible] [illegible] चतुरेण, [illegible] [illegible] इति भावः। [illegible]।

হইতেছিল যে,—সে যেন এক অঙ্গে বর্ণিত একখানা [illegible] উত্তরীয় [illegible] ধারণ করিয়াছে; (খ) আমের পল্লবের ন্যায় কোমল ও সর্বদা তাম্বূল চর্বণ করায় রক্ত ও মলিনবর্ণ অধরপুট ধারণ করিয়াছিল; (গ) আকর্ণবিস্তৃত এবং পদ্মের ন্যায় ধবলবর্ণ নয়নযুগলের [illegible] সে যেন দিগ্‌দিগন্তর ধবলবর্ণ করিয়াছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, সে যেন, শ্বেতোৎপল [illegible] বর্ষণ করিতেছে এবং দিবাভাগকে যেন শ্বেতবর্ণময় করিতেছে; (ঙ) তাহার ললাটদেশ [illegible] ন্যায় বিস্তৃত ছিল; কেশকলাপ, ভ্রমরসমূহের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ ও সরল ছিল এবং [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

চন্দ্রাপীড়ং সুচিরমালোক্য (১) মহাশ্বেতায়াঃ সমীপমুপগম্য [illegible] সবিস্ময়মুপাবিশৎ। (চ)

অনন্তরঞ্চাতিদূরানতেনোত্তমাঙ্গেন প্রণম্য কেয়ূরকোঽপি মহাশ্বেতাদৃষ্টিনির্দ্দিষ্টং নাতিসমীপবর্ত্তি বিষ্টরমভেজে (ছ)। সমুপবিষ্টশ্চ (২) তমদৃষ্টপূর্ব্বমধঃকৃত-কুসুমায়ুধমুপহসিতসুরাসুরগন্ধর্ববিদ্যাধররূপং রূপাতিশয়ং চন্দ্রাপীড়স্য দৃষ্ট্বা বিস্ময়মাপেদে। (জ)

পরিসমাপ্তজপা তু মহাশ্বেতা পপ্রচ্ছ তরলিকাম্—"কিং ত্বয়া দৃষ্টা প্রিয়সখী কাদম্বরী কুশলিনী? করিষ্যতি বা মদ্বচনম্?" ইতি। (ঝ)

(চ) আলোক্যেতি। আশ্চর্য্যং; [illegible] ইতি ভাবঃ।

(ছ) অনীতি। অতিদূরানতেন [illegible] উত্তমাঙ্গেন মস্তকেন। প্রণম্য মহাশ্বেতামিতি। মহাশ্বেতয়া দৃষ্ট্যা [illegible] নির্দ্দিষ্টং [illegible] বিষ্টরম্ আসনং অভেজে [illegible]।

(জ) সমুপেতি। সমুপবিষ্টশ্চ কেয়ূরকঃ। অধঃকৃতঃ পরাজিতঃ কুসুমায়ুধঃ কন্দর্পো যেন তৎ, [illegible] সুরাসুরগন্ধর্ব্ববিদ্যাধরাণাং রূপং যেন তৎ, রূপাতিশয়ং সৌন্দর্য্যা-তিশয়ম্।

(ঝ) পরীতি। [illegible]

(চ) আসিয়া চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়া তরলিকার 'ইনি কে?' এইরূপ কৌতুক জন্মিল; তাই সে, বহুকাল পর্য্যন্ত চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়া, মহাশ্বেতার নিকটে যাইয়া, তাঁহাকে সবিস্ময়ে নমস্কার করিয়া উপবেশন করিল।

(ছ) তাহার পর কেয়ূরকও অত্যন্ত অবনত মস্তকে মহাশ্বেতাকে প্রণাম করিল, পরে মহাশ্বেতা, তাহার বসিবার জন্য অনতিনিকটবর্ত্তী একখানা প্রস্তরখণ্ডকে নয়নভঙ্গীদ্বারা নির্দ্দিষ্ট করিয়া দিল; কেয়ূরক তাহার উপরে উপবেশন করিল। (জ) কেয়ূরক উপবেশন করিয়া চন্দ্রাপীড়ের সেই অলৌকিক সৌন্দর্য্য দেখিয়া বিস্ময়াপন্ন হইল; কারণ—সেরূপ সৌন্দর্য্য পূর্ব্বে আর দেখে নাই, এবং সে সৌন্দর্য্য কামদেবের সৌন্দর্য্যকেও পরাস্ত করিয়াছিল এবং দেবতা, দানব, গন্ধর্ব্ব ও বিদ্যাধরগণের সৌন্দর্য্যকেও উপহাস করিতেছিল।

(ঝ) এদিকে মহাশ্বেতা জপ সমাপন করিয়া তরলিকাকে জিজ্ঞাসা করিল,—'তরলিকে! তুই আমার প্রিয়সখী কাদম্বরীকে ভাল দেখিয়াছিস্ ত? সে আমার কথামত কার্য্য করিবে ত?'

---

(১) অবলোক্য। (২) উপবিষ্টশ্চ।

अथ सा तरलिका विनयावनतमौलिरीषदास्फालित-(१) कर्णपाशमतिमधुरया गिरा व्यजिज्ञपत्—"भर्तृदारिके! दृष्टा खलु मया भर्तृदारिका कादम्बरी सर्वतः कुशलिनी। विज्ञापिता च निखिलं भर्तृदुहितुः सन्देशम्। यावच्च यत्तया सस्नेह-सुख-सुधा-स्नुतास्रु-(२) बिन्दुवर्षं रुदित्वा प्रतिसन्दिष्टम्, तदेष तवैव विसर्जितस्तया एव वीणावाहकः (३) केयूरकः कथयिष्यति" इत्युक्त्वा विरराम। (ञ)

विरतवचसि तस्यां केयूरकोऽब्रवीत्—"भर्तृदारिके! महाश्वेते! देवी कादम्बरी दृढदत्तकण्ठग्रहा त्वां विज्ञापयति—'यदियमागत्य मामवदत्तरलिका, तत् कथय किमयं गुरुजनानुरोधः? किमिदं सखित्वपरीक्षणम्? किं स्व-निवासापराधनिपुणोपालम्भः? किं प्रेमविच्छेदाभिप्रायः? किं मत्परित्यागोपायः? किंवा प्रकोपः? (ट)। जानास्येव मे सहज-प्रेम-निबन्धन-(४)निर्भरं

(ञ) अथेति। विनयेन अवनतो मौलिर्मूर्धा यस्याः सा। ईषदास्फालितौ [illegible] कर्णपाशौ सुवर्णकुण्डलं यस्मिन् कर्मणि तद्यथा तथा। भर्तृदुहितुश्च। तया कादम्बर्या, सस्नेहं [illegible] यथा तथा मुक्तानि [illegible] अश्रुबिन्दूनां वर्षो यस्मिन् कर्मणि तद्यथा तथा रुदित्वा यत् प्रतिसन्दिष्टं, तदेव केयूरकः कथयिष्यतीति सम्बन्धः।

(ट) विरतेति। दृढं दत्तः कण्ठग्रहः आलिङ्गनं यया सा। सखी निवासः [illegible] निपुणोपालम्भः [illegible] [illegible] अपराधस्य [illegible] [illegible] किंविधः [illegible] प्रेमविच्छेदाय अभिप्रायः [illegible]। [illegible] परित्यागोपायः किं।

(ঞ) তাহার পর তরলিকা, মস্তক অবনত করিয়া, ঈষৎ কর্ণকুণ্ডল দোলাইয়া, অতিমধুর বাক্যে জানাইল—"রাজকন্যে! আমি, রাজকন্যা কাদম্বরীকে, সকল প্রকারেই কুশল দেখিয়া আসিয়াছি এবং আপনার সকল কথাই তাঁহাকে জানাইয়াছি। তিনি অবিচ্ছিন্ন ধারায় মুক্তার ন্যায় স্থূল অশ্রু-বিন্দু-বর্ষণপূর্বক রোদন করিয়া যে প্রত্যুত্তর দিয়াছেন, তাহা এই কেয়ূরক বলিবে, এ তাঁহারই বীণাবাহক এবং তিনিই ইহাকে পাঠাইয়াছেন।" এই কথা বলিয়া তরলিকা বিরত হইল।

(ট) সে বিরত হইলে কেয়ূরক বলিতে লাগিল,—"রাজকন্যে! মহাশ্বেতে! কাদম্বরী দেবী, আপনার কণ্ঠে গাঢ় আলিঙ্গন করিয়া জানাইতেছেন যে—'এই তরলিকা আসিয়া আমাকে যে বলিল,—সে বিষয়ে তুমি বল দেখি,—'এটা কি গুরুজনের অনুরোধ? না—আমার সখ্য পরীক্ষা করা? কিংবা আমি যে গৃহে বাস করিতেছি, এই অপরাধের উপযুক্ত তিরস্কার?

(१) कर्णपाश...। (२) सस्नेहसुखास्रु...। (३) वीणावाहकः। (४)...निबन्ध।

हृदयम्, एवमतिनिष्ठुरं वक्तुमहो कथमपि न शङ्किता? तवाऽमधुरभाषिणी नापि शिक्षिता वक्तुमप्रियं परुषमभिधातुं वा? (ठ) कोऽपि तावत् का इव सहृदयः कमनीयवयसामविषये कर्मण्येवंविधे मतिमुपसर्पयेत्? विपुलाति-दुःखाभिभवात्प्रदग्धोऽयमीदृशो जनः (ड)। सुहृदःखेदिनि हि मनसि कैव सुखाशा? कैव निर्वृतिः? कीदृशाः सम्भोगाः? कानि वा हसितानि? (ढ)। योऽयमीदृशी दयासुवनीता प्रियसखी कथमतिदारुणं तमर्थं विषमिवाप्रियकारिणं

(ठ) जानासीति। ... [illegible] ... परिपूर्णं मे मम हृदयं त्वं जानास्येव, तथापि एवमतिनिष्ठुरं वाचिकमप्रेषयितुं शङ्कितासीत्यन्वयः।

(ड) ननु वाचिकाहरे को नाम दोषः, ... [illegible] ... इति। कोऽपि ... [illegible] ... सर्वथा सुखविधायिनि ... [illegible] ... मनः, ... [illegible] ... सुखे, ... [illegible] ... परिणामदुःखदायिनि, ... [illegible] ... भावः, कर्मणि वाचिकाहरे मतिमुपसर्पयेत् ... [illegible] ... अपि तु कोऽपि नेत्यर्थः। ... [illegible] ... दुःखाभिभवात्प्रदग्धोऽयमीदृशो जन इति भावः।

(ढ) ननु ... [illegible] ... इति। सुहृदःखेदिनि ... [illegible] ... निर्वृतिः शान्तिः ... [illegible] ... दुःखभाराक्रान्ते हि मनसि सुखादीनां ... [illegible] ... एव नास्तीति भावः।

(ण) ... [illegible] ... तथापि ... [illegible] ... इति। ... [illegible] ... प्रियसखी ... [illegible] ... कृतवती ... [illegible] ... अप्रियकारिणं ... [illegible] ... यदि तु ... [illegible] ...

আবার এমন কর্ম করিবার মত একটা কথা যায়? ... লোককে পরিত্যাগ করার একটা উপায়? অথবা কোন কামজনিত ক্রোধ? (ঠ) তুমি ত জানই যে, আমার মন তোমারই অকৃত্রিম প্রেমে পরিপূর্ণ; তথাপি তুমি, এই জাতীয় অত্যন্ত নিষ্ঠুর কথা পাঠাইতে শঙ্কিত হও নাই কেন? তুমি সেইরূপ মধুরভাষিণী ছিলে, কিন্তু এখন অপ্রিয় ও নিষ্ঠুর কথা বলিতে তোমাকে কে শিখাইল?। (ড) দেখ, সহৃদয় হইয়াও কোন্ বুদ্ধিমান্ ব্যক্তি, ... ও পরিণামে দুঃখজনক এইরূপ কার্য্যে মন অর্পণ করে? সুতরাং আমাদের মত অত্যন্ত দুঃখিতচিত্ত লোকের কথা আর বলিব কি?। (ঢ) আর দেখ প্রিয়, সর্ব্বদাই বন্ধুর দুঃখে দুঃখিত তাহাদের আবার সুখের আশা কি? শান্তিই বা কি? সম্ভোগই বা কি? এবং হাস-পরিহাসই বা কি?। (ণ) কিন্তু, যে কন্দর্প, তোমাকে এইরূপ ব্যাপারে উপনীত করিয়াছে, ... ও বিষের তুল্য অপ্রিয়কারী সেই কন্দর্পের অভিপ্রায় আমি কি ... পূর্ণ করিতে পারি? দেখ—... পরিণী তাঁহার বিরহে বিষণ্ণ হইয়া পড়িয়া...

कथं कथामं कुर्वीयाम् ? दिवसकरास्तमयविधुरासु नलिनीषु सहवासपरिचया-च्चक्रवाकयुवतिरपि पतिसमागमसुखानि परित्यजति (१) किमुत नार्यः (क)। अपि च (२) यत्र भर्तृविरहविधुरा परित्यक्तपरपुरुषदर्शना दिवानिशं नियसति प्रियसखी, कथमिव तत्रम हृदयमपरः प्रविशेत्तम: ? (ग)। यत्र च भर्तृविरह-विधुरा नीच-मन-(३) कर्विंशाकुले प्रियसखी महत् दुःखमनुभवति, तत्र:कथमहमन-लोलत् कथमात्मसुखाभिलाषिणी पाणिं ग्राहयिष्यामि ! कथं वा मम सुखं भविष्यति ? (घ) त्वत्प्रेमणा चास्मिन् वस्तुनि मया (४) कुमारिकाजनविरुद्धं स्वातन्त्र्यमालम्ब्याङ्गी-

त्य[illegible] भावः। तथा च नलिनीषु दिवसकरस्य सूर्यस्य [illegible] विधुरासु सतीषु। सहवास-परिचयात् एकत्र[illegible]। यत्र तिर्यग्जातिरप्येवमाचरति तत्र किमुत मर्त्ये नार्यः। सुतरां नापि [illegible] सख्या ममापि पतिसमागमसुखं त्याज्यमेवेति भावः। अत्र [illegible]।

(ख) अपि चेति। यत्र हृदये। प्रियसखी [illegible]। नियसति [illegible] भावः। [illegible] पतिविरहे:, कथं प्रविशेत् कथमपि नेति तात्पर्यं, [illegible] [illegible]

(ग) यत्रेति। यत्र यस्या। [illegible] प्रियसखी [illegible]। तत्र तदा। [illegible] महत् दुःखं। कथं पाणिं ग्राहयिष्यामि कथमपि नैवेत्, [illegible] दुःखयोः [illegible] भावः। कथं वा सुखं भविष्यति कथमपि नेति तात्पर्यं, दुःखपूर्वं [illegible] भावः।

(ट) अस्मिन्निति। अस्मिन् वस्तुनि पाणिग्रहणविषये। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] कथा। सा कादम्बरी।

তাহার সহিত একত্র বাস করার প্রণয়বশতঃ যুবতি চক্রবাক পক্ষিণীও পতির সহিত মিলনসুখ পরিত্যাগ করে ; এ অবস্থায় রমণীগণের কথা আর বলিবার কি আছে ? । (ক) বিশেষতঃ, তুমি পতি-বিরহে আকুল হইয়া পর-পুরুষের দর্শন পর্যন্ত পরিত্যাগ করিয়া যে হৃদয়ে দিবারাত্রি বাস করিতেছ, আবার সেই হৃদয়ে অন্য লোক প্রবেশ করিবে কিরূপে ? (খ) আর তুমি যখন ভর্তার বিরহে বিহ্বল হইয়া, [illegible] শরীরকে শোষণ করিতে থাকিয়া [illegible] কষ্ট অনুভব করিতেছ, তখন আমি তাহা অগ্রাহ্য করিয়া কেবল নিজের সুখাভিলাষিণী হইয়া কিরূপে পাণিগ্রহণ করাইব ? কিরূপেই বা তাহাতে আমার সুখ হইবে ? । (গ) আমি তোমার প্রণয়বশতই এই বিষয়ে স্বাধীনতা অবলম্বন করিয়া নিন্দা স্বীকার করিয়াছি, বিনয়কে অবজ্ঞা করিয়াছি, গুরুবাক্য লঙ্ঘন করিয়াছি, লোকাপবাদ অগ্রাহ্য করিয়াছি এবং স্ত্রীলোকের

(१) [illegible]। (२) [illegible] नेति [illegible]। (३) [illegible] न [illegible]।
(४) [illegible]।

जातसमयः, समयश्चोरितो विनयः, गुरुवचनमतिक्रान्तम्, (१) न गणितो लोकापवादः, वनितानाम् सहजमामदयसुलभा लज्जा, सा कथय कथमिव पुनरपनयति ? (ङ)। तदयमञ्जलिविरचितः, प्रणामोऽयम्, इदञ्च पादग्रहणम्, अनुग्रहाय मम, वनमितो गतासि मे जीवितेन सहेति मा कथाः स्वप्नेऽपि पुनरिदमर्थं मनसि" इत्यभिधाय तूष्णीमभूत् (च)।

महाश्वेता तु तच्छ्रुत्वा सुचिरं विचार्य "गच्छ, स्वयमेवाहमागत्य यथार्हमाचरिष्यामि" इत्युक्त्वा केयूरकं प्राहिणोत् (छ)। गते च केयूरके चन्द्रापीडमुवाच—"राजपुत्र ! रमणीयो हेमकूटः, चित्रा च चित्ररथराजधानी, बहुकुतूहलः किम्पुरुषविषयः, पेशलो गन्धर्वलोकः, सरलहृदया महानुभावा च कादम्बरी, यदि नातिखेदकरमिव गमनं कलयसि, नायतोऽस्ति वा गुरुप्रयोजनम्,

[illegible] : [illegible] वर्जितानाम् सखीजनो लोकः, स तु [illegible] प्रभृति समाश्रितः।

(च) अभिधेति। इति शेषः। स्वप्नेऽपि मनसि समस्तं [illegible] चिन्तं पुनरपि मा कुर्याः। तूष्णीमभूत् केयूरक इति शेषः।

(छ) महेति। गच्छ गच्छ। यथार्हं यथायोग्यं। [illegible] समाश्रित इति पाठेऽपि समाधेयं यदि वदन्ति।

(ज) गत इति। चित्रा आश्चर्या। किम्पुरुषविषयः किन्नरदेशः, बहूनि कुतूहलानि कौतुकोद्दीपक-वस्तूनि यस्मिन् सः। पेशलः सुन्दरः। "चारौ दक्षे च पेशलः।" इत्यमरः। यदि ते गमनं नातिखेदकरमिव

আকস্মিক অনর্থের লজ্জাও পরিত্যাগ করিয়াছি ; অতএব বল দেখি—সেই কাদম্বরী কি করিয়া আমার এই বিষয়ে প্রবৃত্ত হইবে ? ; (ঙ) অতএব আমি এই হাত জোড় করিতেছি, এই প্রণাম করিতেছি এবং এই চরণ ধারণ করিতেছি, তুমি আমার প্রতি অনুগ্রহ কর ; তুমি এ স্থান হইতে আমার জীবনের সহিতই বনে গিয়াছ ; অতএব স্বপ্নেও যেন আমার এ বিষয় মনে করিও না" এই কথা বলিয়া কেয়ূরক নীরব হইল।

(ছ) কিন্তু মহাশ্বেতা সেই সকল কথা শুনিয়া বহু সময় বিবেচনা করিয়া বলিল,—"কেয়ূরক ! তুমি চলিয়া যাও ; আমি নিজেই আসিয়া যাহা উপযুক্ত হয়, তাহা করিব" এই কথা বলিয়া কেয়ূরককে বিদায় করিল। (জ) এবং কেয়ূরক চলিয়া গেলে মহাশ্বেতা চন্দ্রাপীড়কে কহিল,—"রাজপুত্র ! হেমকূট পর্বত অত্যন্ত মনোহর, গন্ধর্বরাজ চিত্ররথের রাজধানীও বড় আশ্চর্য, কিন্নরদেশেও বহুতর কৌতূহলোদ্দীপক বস্তু রহিয়াছে, গন্ধর্বলোকও বেশ সুন্দর ;

(১) অতিক্রান্তম্।

अदृष्टपूर्वविषयकुतूहलि वा चेतः, मद्वचनमनुवर्त्यं वा भवान् (१) कुतूहलि वा (२) आश्चर्यदर्शनम्, (३) अर्होऽस्मि वा प्रणयम् (४) एतमप्रत्याख्येयमयोग्यं वा जनं मन्यसे, समारूढो वा परिचयश्रेयः, अनुग्राह्यो वाऽयं जनः ततो नार्हसि [illegible] कर्त्तुमभ्यर्थनाभिभवम् (च)। मयैव सह गत्वा हेमकूटमतिरमणीयं [illegible] नाभिधानं, तत्र दृष्ट्वा च मत्प्रियसखीं कादम्बरीम्, अपनीय तस्याः कुमतिमनो-मोहविलसितम्, एकमहोऽविरम्य श्वोभूते प्रत्यागमिष्यसि (छ)। मम हि निष्कारणबान्धवं भवन्तमालोक्यैव दुःखान्धकारभाराक्रान्तेन मनसः आश्वासपद[illegible]

[illegible]परिज्ञानमनवाप्तमिव, न अवाप्तमिव न [illegible]। [illegible] न [illegible] भवति। अदृष्टो भूतपूर्वं [illegible] "भूतपूर्वे चरट्" इति चरट्प्रत्ययः। अदृष्टपूर्वोऽपूर्वो [illegible] यो विषयो देशस्तस्मिन् तद्दर्शने [illegible] कुतूहलमस्यास्तीति तत्। अनुवर्त्यमिति [illegible], [illegible]। [illegible] वा अर्होऽस्मि [illegible] योग्या वा भवामि। [illegible] जनम्। समारूढ उत्पन्नः। [illegible]।

(च) मयैवेति। [illegible] [illegible]। [illegible] सर्वैव मम [illegible]। [illegible] [illegible] यो मनोमोहविलसितम्: 'अपि [illegible] नाहं [illegible]' [illegible] 'चन्द्रापीड [illegible]' [illegible] अपनीय [illegible] दूरीकृत्य, एकं अहो दिवसं विरम्य, श्वोभूते परदिने।

(छ) ममेति। हि निश्चये। निष्कारणबान्धवं [illegible] दुःखितचित्त[illegible] [illegible], भवन्तमालोक्यैव विद्यमानायाः मम दुःखान्धकारभाराक्रान्तेन [illegible], [illegible]

আর কাদম্বরীও মহাশ্বেতা ও অন্যান্য কৈলাস-প্রভৃতি; অতএব সে স্থানে গমন-কথাটা যদি অত্যন্ত পরিশ্রমকর বিবেচনা না করেন, কিংবা কোন গুরুতর কার্য্যের ব্যাঘাত না হয়, অথবা পূর্ব্বে যে দেশ দেখেন নাই, তাহা দেখিবার জন্য আপনার মনে যদি কৌতূহল থাকে, কিংবা আপনি যদি আমার অনুরোধ রক্ষা করিতে ইচ্ছা করেন, কিংবা কোন আশ্চর্য্য দর্শন করা যদি আপনার সুখ জন্মায়, অথবা আমি যদি আপনার প্রণয়ের যোগ্য হই, কিংবা যদি এই ব্যক্তিকে প্রত্যাখ্যান করা অনুচিত মনে করেন, অথবা আপনার সহিত আমার যদি পরিচয়ের লেশও জন্মিয়া থাকে, কিংবা এই ব্যক্তি যদি আপনার অনুগ্রহের যোগ্য হয়, তাহা হইলে আপনি আমার এই প্রার্থনা নিষ্ফল করিতে পারিবেন না। (চ) অত্যন্ত সৌন্দর্য্যের আধারভূমি সেই হেমকূট পর্ব্বতে আমারই সহিত গমন করিয়া, সেখানে আমারই সখী কাদম্বরীকে দেখিয়া তাহার কু-সংস্কার-জনিত চিত্তভ্রমের আচ্ছন্ন দূর করিয়া এবং একটি দিনমাত্র সেখানে বিশ্রাম করিয়া আবার পরদিন ফিরিয়া আসিবেন। (ছ) আপনি বিনা কারণেই আমার বন্ধু হইয়াছেন; সুতরাং আপনাকে দেখিয়াই আমার চিত্ত দুঃখান্ধকারে পরিপূর্ণ হইলেও সহসা[illegible]

(१) भवानपि। (२) अविदुष्कराणि वा। (३) आश्चर्यदर्शनम्।

(४) अर्होऽस्मि वा प्रणयस्य....सम्भावितम्।

ञ्जितमिव चेतसा, श्रावयित्वा तद्वृत्तान्तमिमं लघुतामिव गतः शोकः। दुःखितमपि जनं रमयन्ति सज्जनसमागमाः (क)। परसुखोपपादनपराधीन एव भवादृशां गुणोदयः" (ख)। इत्युक्तवतीं तां चन्द्रापीडोऽब्रवीत्—"भगवति! दर्शनात् प्रभृति परवानयं जनः कर्तव्येषु यथेष्टमशङ्कितया नियुज्यताम्" इत्यभिधाय तया सहैवोदचलत् (ग)।

क्रमेण च गत्वा हेमकूटमासाद्य गन्धर्वराजकुलं, समतीत्य काञ्चनतोरणानि सप्तकक्षान्तराणि कन्यान्तःपुरद्वारमवाप (घ)। महाश्वेतादर्शनप्रधावितेन दूरादेव कृतप्रणामेन कनकवेत्रलताहस्तेन प्रतीहारजनेनोपदिश्यमानमार्गः

[illegible] प्रतिभाति, इदानीं [illegible] लघितोऽस्मीति भावः, तथा इदं वृत्तान्तं श्रावयित्वा [illegible] शोकः [illegible], "[illegible]" इति [illegible] भावः। [illegible] दुःखितमिति। सज्जनसमागमाः दुःखितमपि जनं रमयन्ति आनन्दयन्ति, दर्शनेनैव [illegible] [illegible] भावः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(ख) विशेषतश्च भवतीति। भवादृशां गुणोदयः [illegible] गुणानामभ्युदयः परेषां सुखोपपादनपराधीनः सुखोत्पादनपरायत्त इत्यर्थः, सुतरां मया [illegible] सुखयिष्यतीति भावः। [illegible] परिहृत्य [illegible] परिहरिष्यतीति [illegible] प्रथम इति बोध्यम्।

(ग) इतीति। [illegible]। परवान् पराधीनः [illegible] इत्यर्थः।

(घ) क्रमेणेति। किञ्च, चन्द्रापीडो गत्वा, गन्धर्वराजस्य चित्ररथस्य कुलं [illegible] हेमकूटं [illegible], काञ्चनानां तोरणानि [illegible] सप्तकक्षान्तराणि समतीत्येत्यन्वयः।

(ङ) महेति। महाश्वेताया दर्शनेन प्रधावितो [illegible]। कनकवेत्रलता: [illegible] प्रतीहारजनेन दौवारिकजनेन उपदिश्यमानो मार्गः पन्था यस्य सः, कुमारश्चन्द्रापीडः,

---

গেছ যেন উচ্ছ্‌সিত হইয়া উঠিয়াছে এবং আপনাকে নিজের এই বৃত্তান্ত শুনাইয়া সেই শোকটা যেন লঘু হইয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছে; কারণ, সজ্জনের সহিত সংসর্গ দুঃখিত ব্যক্তিকেও আনন্দিত করিয়া থাকে। (ক) বিশেষতঃ, ভবাদৃশ ব্যক্তিদের গুণগ্রাম, সর্বদাই পরের সুখসম্পাদনে প্রবৃত্ত থাকে।" মহাশ্বেতা এই কথা বলিলে চন্দ্রাপীড় তাঁহাকে বলিলেন,—"ভগবতি! আপনার সন্দর্শন হইতে আরম্ভ করিয়া এই ব্যক্তি আপনার অধীন হইয়া পড়িয়াছে; সুতরাং আপনি নিঃশঙ্কচিত্তে ইচ্ছানুসারে এই ব্যক্তিকে কর্তব্য কার্যে নিযুক্ত করিতে পারেন।" এই কথা বলিয়া চন্দ্রাপীড় মহাশ্বেতার সঙ্গেই চলিলেন।

(ঘ) ক্রমে যাইয়া, গন্ধর্বরাজের রাজধানী হেমকূট পর্বতে উপস্থিত হইয়া, স্বর্ণ-তোরণ-সমন্বিত সাতটি কক্ষা অতিক্রম করিয়া কন্যাপুরের দ্বারে উপস্থিত হইলেন। (ঙ) তখন স্বর্ণ-বেত্রলতিকা-ধারী দৌবারিকগণ, মহাশ্বেতাকে দেখিয়া দ্রুত আসিয়া দূর হইতেই প্রণাম করি

প্রবিশ্য (ট) অসংখ্যেয়নারীগণতরঙ্গসঙ্কুলম্, (১) অমানমপরমিব জীবলোকম্, (ঠ) ইয়ত্তাং গণয়িতুমিব ত্রৈলোক্যস্ত্রৈণমিব সংগৃহীতম্, (২) (ড) অপুরুষমিব সর্গান্তরম্, (ঢ) অঙ্গনাদ্বীপমিবাপূর্বমুৎপন্নম্, (ণ) পঞ্চমমিব নারীযুগাবতারম্, (ত) অপরমিব পুরুষদ্বেষিপ্রজাপতিনির্মিতম্, (থ) অনেককল্পকালসমার্জিতমুৎপাদ্য স্থাপিতমিবাঙ্গনাকোষম্, (৩) (দ) অতিবিস্তারিণা

কুমারীপুরাভ্যন্তরং দদর্শেতি পরেণান্বয়ঃ। অত্র জীবলোকাদিভিরেকবচনান্তৈঃ কুমারীপুরাভ্যন্তরমিতি সমস্ত-নামস্য বিশেষণানি। সর্বত্রৈব তাদৃশবাক্যস্থানেষু ন কশ্চিদ্বিশেষস্যাপাদীতি বোধ্যম্।

(ঠ) অমানমিতি। অসংখ্যেয়ানি সংখ্যাতুমশক্যানি নারীণাং গণতরঙ্গাদি সঙ্কুলানি তৈঃ অমানং পরিমাণ-রহিতম্। তদ্বৎ অঙ্গনাজীবমিশ্রম্ অপরং পরিমাণবিহীনং প্রদেশং উৎপ্রেক্ষিতমিতি বোধ্যম্। তথা চ অপরং জীবলোক-মধ্যে জীবলোকমিব। অত্র চ প্রতুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ড) ইয়ত্তামিতি। ইয়তাং গণয়িতুং এতাবন্তো নার্য ইতি সংখ্যাং জ্ঞাতুং বিধিনা ব্রহ্মণা সংগৃহীতমানীতম্ ত্রৈলোক্যস্য ত্রিভুবনস্য স্ত্রৈণং স্ত্রীসমূহমিব। উৎপ্রেক্ষা বা।

(ঢ) অপুরুষমিতি। অপুরুষং সর্গান্তরমিব পুরুষবর্জিতমন্যা বিধেঃ সৃষ্টিমিব। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা বা।

(ণ) অঙ্গনেতি। অপূর্বং নূতনমুৎপন্নং অঙ্গনানাং স্ত্রীণাং দ্বীপমিব। উৎপ্রেক্ষা বা।

(ত) পঞ্চমমিতি। পঞ্চমং নারীযুগাবতারমিব। সত্যাদিযুগচতুষ্টয়ানন্তরং পঞ্চমং স্ত্রীময়ং নারীযুগমবতীর্ণমিতি ভাবঃ। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা বা।

(থ) অপরমিতি। অপরমন্যৎ পুরুষদ্বেষিণঃ প্রজাপতের্বিধাতুর্নির্মাণং সৃষ্টিমিব। অত্রাপি ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা বা। পুরুষদ্বেষিণেতি কেবলস্ত্রীনির্মাণমেব সূচিতম্।

(দ) অনেকেতি। অনেককল্পেষু কালসমার্জিতং স্ত্রীজাতিসমূহং উৎপাদ্য বিধিনা নিধায় স্থাপিতং অঙ্গনা-কোষং স্ত্রীভাণ্ডারমিব। অত্র উৎপ্রেক্ষা বা।

অগ্রে অগ্রে পথ বলিয়া দিতে দিতে চলিল—এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় প্রবেশ করিয়া কন্যাপুরের অভ্যন্তরদেশ দেখিতে পাইলেন; (ঠ) দেখিলেন, সেই কন্যাপুর, লক্ষ লক্ষ রমণীগণে পরিপূর্ণ রহিয়াছে; তাহাতে, উহাকে আর একটি জীবলোকের ন্যায় বোধ হইতে লাগিল; (ড) ত্রিভুবনে কত স্ত্রীলোক আছে তাহার সংখ্যা জানিবার জন্য, বিধাতা যেন ত্রিভুবনের সমস্ত স্ত্রীলোক একত্র সংগ্রহ করিয়াছিলেন; (ঢ) পুরুষবর্জিত আর একটি সৃষ্টি বলিয়া বোধ হইতে লাগিল; (ণ) স্ত্রীলোকময় নূতন আর একটি দ্বীপ যেন উৎপন্ন হইয়াছিল; (ত) পঞ্চম নারীযুগ যেন অবতীর্ণ হইয়াছিল; (থ) পুরুষবিদ্বেষী বিধাতার সৃষ্ট আর একটি সৃষ্টি বলিয়া বোধ হইতেছিল; (দ) বিধাতা অনেক কল্পে স্ত্রীলোক সৃষ্টি করিবেন বলিয়া, আগেই তাহার কতকগুলি সৃষ্টি করিয়া স্ত্রীলোকের একটা ভাণ্ডার যেন সেখানে রাখিয়া দিয়া-

(১)...ণ্যমানম্। (২) সংগৃহীতম্। (৩)...কোষম্।

युवतिजन-लावण्यप्रभापूरेण प्लावितदिगन्तरेण दिवसेऽप्यनवरतमविरतेन हिमक-आर्द्रीकुर्वतेव भुवनान्तराणि बहल-(१) प्रभावर्षिणा मरकतमणिमयेन सर्वतः परिसरतया तेजोमयमिव, चन्द्रमयूखसमूहैरिव निर्मितसंस्थानम्, ज्योत्स्नयेव घटितसर्वावयवम् आतपप्रभाभिरिव लिप्यादितदिगन्तरम्, (क) विभ्रमैरिव कृतसर्वोपकरणम्, (ख) यौवनविलासैरिवोत्पादितावयवम्, (ग) रतिविल-सितैरिव रचित-(२) सञ्चयम्, (घ) मकरध्वजचरितैरिव कल्पितावयवम्, (ङ)

(ञ) युवतीति । [illegible] दिगन्तराणि येन तेन, [illegible] सुधारसनिवहैरिव [illegible] भुवनान्तराण्यार्द्रीकुर्वतेव स्थितेन, युवतिजनानां लावण्यस्य यः प्रभापूरः कान्तिप्रवाहस्तेन कर्त्रा, तथा बहलप्रभावर्षिणा मरकतमणिमयेन भूतलेन च कर्त्रा, सर्वतः समन्तात् परिसरे व्याप्तं तत्र भवनम् [illegible], तेजोमयमिव [illegible] निर्मितमिव, चन्द्रमयूखसमूहैर्निर्मितं संस्थानम् आकारो यस्य तदिव, तथा ज्योत्स्नया घटितो निर्मितः सर्वावयव [illegible] तदिव, [illegible] इति भावः । तथा आतपप्रभाभिर्लिप्यादितानि दिगन्तराणि यस्य तदिव, [illegible] इति भावः । [illegible] द्वितीयमिदं [illegible] तेजोमयमिति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

(क) विभ्रमैरिति । विभ्रमैर्विलासैः कृतानि सर्वाणि उपकरणानि सामग्र्यो यस्य तदिव । द्वितीयमेतत् ।

(ख) यौवनेति । यौवनविलासैरुत्पादिता अवयवाः यस्य तदिव । द्वितीयमेतत् । पूर्वं विभ्रमाः कृत्रिमाः, अत्र तु यौवनविलासाः स्वाभाविका इति भेदः ।

(ग) रतीति । रतेः कामभार्यायाः विलसितैर्विलासैः रचितो निर्मितः सञ्चयो [illegible] यस्य तदिव । द्वितीयमेतत् ।

(घ) मकरेति । मकरध्वजचरितैः कामदेवाचरणैः कल्पितावयवं निर्मितावयवमिव । द्वितीयमेतत् ।

ছিলেন ; (ঞ) যুবতিগণের লাবণ্যকান্তির বিপুল প্রবাহ দিগ্‌দিগন্ত প্লাবিত করিয়া, অমৃত রসের ধারাতেই যেন দিবাভাগে সিক্ত করিতেছিল এবং জগতের মধ্যস্থান সকল যেন আর্দ্র করিতেছিল এবং মরকতমণিময় আস্তরণ হইতে প্রচুর প্রভা নির্গত হইতেছিল ; সুতরাং সেই লাবণ্য কান্তির প্রবাহে এবং সেই মণিময়ের আলোকে সকল দিক ব্যাপ্ত ছিল বলিয়া, সেই কন্যাপুরের [illegible] যেন আলোকময় বলিয়া বোধ হইতে লাগিল, এবং তাহার অংশগুলিকে বিধাতা যেন চন্দ্র কিরণদ্বারা নির্মাণ করিয়াছিলেন ; সমস্ত স্থানটাই যেন জ্যোৎস্নাদ্বারা প্রস্তুত করিয়াছিলেন এবং আতপের আলোকেই যেন দিগ্‌দিগন্ত সৃষ্টি করিয়াছিলেন বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল ; (ক) কৃত্রিম হাব-ভাবেই যেন তাহার সমস্ত সামগ্রী তৈয়ার করা হইয়াছিল ; (খ) স্বাভাবিক যৌবনবিলাসেই যেন তাহার সমস্ত অংশ নির্মিত হইয়াছিল ; (গ) রতিদেবীর বিলাসদ্বারাই যেন কার্য্যকলাপ সৃষ্টি করা হইয়াছিল ; (ঘ) কামদেবের আচরণেই যেন [illegible]

---

 (१) बहल... । (२) विरचित... ।

अनुरागेणेवानुलिप्तसकलदेशम्, (१) (च) शृङ्गारमयमिव, सौन्दर्य्यमयमिव, सुरताधिदैवतमयमिव, कुसुमशरमयमिव, कुतूहलमयमिव, आश्चर्य्यमयमिव, सौकुमार्य्यमयमिव, कुमारः कुमारीपुराभ्यन्तरं ददर्श। (छ)

अतिबहलतया च तत्र कन्यकाजनस्य समन्तादाननधृतिभिरिन्दुबिम्बवृष्टिमिव पतन्तीम्, (ज) अपाङ्गविक्षेपैर्वलितकुवलयवनमयीमिव क्रियमाणामवनीम्, (झ) अविच्छिन्न-(२) भ्रूलताविभ्रमैः काम-कार्मुक-विलास-शतानीव (३) प्रवर्तितानि, (ञ) निरन्तरशिखाकलापान्धकारैर्बहुलपक्ष-प्रदोष-सार्वामिव सञ्च-

(च) अन्विति। अनुरागेणानुलिप्तसकलदेशमिव। विशेषणमेतत्।

(छ) शृङ्गारेति। अत्र तु सर्वत्र [illegible] उत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ज) अतीति। [illegible]

(झ) अपाङ्गेति। [illegible] उत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ञ) अवीति। [illegible] अत्रानुप्रासालङ्कारः।

(ट) निरवीति। [illegible] "[illegible]" इति मेदिनी।

নির্মাণ করা হইয়াছিল ; (চ) এবং অনুরাগদ্বারাই যেন সকল স্থান লেপিয়া দেওয়া হইয়াছিল ; (ছ) এবং সেই কন্যাপুরের মধ্যস্থানটী যেন শৃঙ্গারময়, সৌন্দর্য্যময়, ... মদনবাণময়, কৌতুকময়, আশ্চর্য্যময় ও কোমলতাময় ছিল।

(জ) চন্দ্রাপীড় আরও দেখিলেন যে,—সেখানে কন্যারা খুব বেশী সংখ্যায় ছিল বলিয়া, সকল দিকেই তাহাদের মুখের শোভা প্রকাশ পাইতে থাকায় যেন চন্দ্রমণ্ডলের বর্ষা হইতেছিল ; (ঝ) তাহারা কটাক্ষপাত করিয়া ভূতলটাকে যেন নীলোৎপলবনময় করিতেছিল ; (ঞ) ভ্রূলতাকে ভ্রূক্ষেপ হইতে থাকায়, শতশত কাম-ধনুই যেন ঘূর্ণিত হইতেছিল ; (ট) কেশকলাপগুলি অন্ধকার থাকায়, কৃষ্ণপক্ষের অসংখ্য প্রদোষকালই যেন সঞ্চিত

(१)...मवेशम्। (२) अविच्छिन्न...। (३) कामकार्मुकशतानीव।

च्युतः, (ट) विततप्रभाभिरुत्फुल्लकुसुम-धवलानिव वसन्तदिवसान् सृजन्तः, (ठ) श्वसितानिलपरिमलैर्मलयमारुतानिव परिश्रमतः, (ड) कपोलतलकान्तिलोकै- र्मणिदर्पणशकलानीव स्फुरितानि, (ढ) करतलरागैरिव रक्तकमलवनवर्षिण- मिव जीवलोकम्, (ण) करनखकिरणस्फुरणेन (१) कुसुमायुधशरस्तम्बैरिव संच्छादितानि दिङ्मण्डलानि, (२) (त) आभरणकिरणेन्द्रायुधजालकैरुत्थाप्य- मानानीव भवन-(३) मयूरवृन्दानि, (थ) यौवनविकारैरुत्पाद्यमानानीव मकरध्वजसहस्राणीव। (द)

उचितव्यापारव्यपदेशेन कुमारिकाणां सखीजनसन्निवेशेषु पार्थिवशतानि,

(ट) विततेति। विततप्रभाभिः, उत्फुल्लकुसुमधवलान् वसन्तदिवसानिव। अत्रोत्प्रेक्षा।
(ठ) श्वसितेति। श्वसितानिलपरिमलैर्निःश्वासवायुसौरभैः, परिभ्रमतो मलयमारुतानिव। अत्रोत्प्रेक्षा।
(ड) कपोलेति। कपोलतलकान्तिलोकैर्दीप्तिभिः स्फुरितानि मणिदर्पणशकलानीव। अत्रोत्प्र- क्षा।
(ढ) करेति। करतलानां रागेण रक्तिमा, जीवलोकं रक्तकमलवनवर्षिणमिव। क्रियोत्प्रेक्षा।
(ण) करेति। करनखानां मयूखानां किरणस्फुरणेन प्रसरणेन, दिङ्मण्डलानि कुसुमायुधस्य मदनस्य शरस्तम्बैः संच्छादितानीव। क्रियोत्प्रेक्षा।
(त) आभेति। आभरणकिरणा इन्द्रायुधानीव अथवा आभरणकिरणा एवेन्द्रायुधानि तेषां जालकै- रुत्पतितैः समूहैः, उत्थाप्यमानानि भवनमयूरवृन्दानीव, तद्दर्शनात् नर्त्तयितुमारब्धानीति भावः। मेघोदय- समययोः सर्वे एकदैव घटेतां तदनुप्रेक्षाभावात्।
(थ) यौवनेति। यौवनविकारैः उत्पाद्यमानानि मकरध्वजसहस्राणीव। अत्रोत्प्रेक्षा।
(द) उचितेति। व्याजेन, उचितव्यापारव्यपदेशेन कर्त्तव्यकार्य्यकरणव्याजेन पार्थिवशतं नृपति-

হইয়াছিল; (ট) তাহাদের হাতের প্রভা প্রকাশ পাইতে থাকায়, কতকগুলি বসন্তকালের দিনই যেন প্রস্ফুটিত পুষ্পে ধবলবর্ণ হইয়া বিচরণ করিতেছিল; (ঠ) নিশ্বাসবায়ুর সৌরভ বহিতেছিল বলিয়া, মলয়বায়ুই যেন পরিভ্রমণ করিতেছিল; (ড) কপোলমণ্ডলের প্রভা প্রকাশিত হওয়ায়, অসংখ্য মণিময় দর্পণই যেন দীপ্তি পাইতেছিল; (ঢ) পাণিতলের রক্তিমা প্রকাশ পাইতে থাকায়, জগৎসংসার যেন রক্তপদ্ম বর্ষণ করিতেছিল; (ণ) নখের কিরণ প্রসারিত হওয়ায়, দিগ্‌দিগন্ত যেন সহস্র সহস্র কামবাণে আবৃত হইয়াছিল; (ত) ইন্দ্রধনুর ন্যায় অলঙ্কারের কিরণসমূহ উত্থিত হইতে থাকায়, গৃহপালিত ময়ূরগণই যেন উড়িতেছিল; (থ) এবং সেই কন্যাগণ যৌবনবিকারেই যেন সহস্র সহস্র কামদেব সৃষ্টি করিতেছিল।

(१) करनखमयूखेन। (२) संच्छादितदिङ्मण्डलानि, संच्छादितमण्डलानि। (३) भुवन···।

वेत्रवाद्येषु पुष्पनव्यतिकरान्, वीणासु करकङ्कणापातान्, कन्दुकक्रीडासु करतल-प्रहारान्, भवन-(१) लता-सेक-कलस-कण्ठेषु भुजलतापरिष्वङ्गान्, लीलादोलासु नितम्ब-स्तन-(२) प्रेङ्खितानि, ताम्बूलवीटिकावखण्डनेषु दशनोपचारान्, बकुल-विटपेषु मधुगण्डूषप्रचारान्, अशोकनवलताङ्गेषु चरणाभिघातान्, उपहारकुसुम-खननेषु सीत्कारान्, (३) अतिरिक्तं सुरतमिवाभ्यस्यन्तीनामपश्यत् । (क)

यत्र च (४) कन्यकाजनस्य कपोलतलालोक एव मुखप्रक्षालनम्, लोचनान्येव कर्णोत्पलानि, हसित-च्छवय एवाङ्गरागाः, निःश्वासाः (५) एवाधिवासगन्ध-प्रयुक्तयः, अधरद्युतिरेव कुङ्कुमानुलेपनम्, (६) आलापा एव तन्त्रीनिनादाः, भुजलता एव चम्पकमालाः, (७) करतलान्येव लीलाकमलानि, स्तना एव

मज्जनशीलानामिव तासां कुमारिकाणामितामावरणाभ्यासादिप्रायः । तान्येव सुरतलीलाचरणानि यद्वै-विभुमाद्य इत्येवादि । भवनलतासलिलेषु सखीभिः कलसधारणेषु, परिवर्तनानि सुरतकालीनपरिष्वङ्गानु-करणकाराणि । वेत्रवाद्येषु वंशीवादनेषु पुष्पनव्यतिकरान् पुष्पनव्यापारान् । वीणासु वीणावादनेषु, कर-कङ्कणापातान् नखक्षतानि । कन्दुकक्रीडासु हस्तकन्दुकासु । भवनलतानां ये सेककलसाः सेचनकुम्भास्तेषां कण्ठेषु, भुजलतानां परिष्वङ्गानालिङ्गनानि । लीलादोलासु तत्र ये पर्यङ्कविमर्दाः, नितम्बयोः स्तनयोश्च प्रेङ्खि-तानि आन्दोलनानि । ताम्बूलवीटिकानां खण्डनेषु चर्वणेषु, दशनोपचारान् दन्तव्यापारानि । बकुल-विटपेषु बकुलवृक्षेषु, मधुगण्डूषप्रचारान् तत्कुसुमविकासनाय सुखादुर्गन्धमद्यक्षेपान् । उपहारार्थ कुसुमानि उपहारकुसुमानि येषामस्यादनाय मूलच्छेदनानि कुर्वन्ति तेषु खननेषु खातेषु, कण्टकव्रणदशनादिषु पीडा-स्मरणाः 'सीत्' इत्येव शब्दाः सीत्कारास्तान् । उपहारकुसुमखननेषु तु मूलकण्टकक्षतव्यवस्थायां सीत्-कारश्रवणं इति बोध्यम् । अत्र सामान्यविशेषोत्प्रेक्षालङ्कार इति दिक् ।

(क) यत्रेति । कपोलतलालोक एव मण्डनकारणं च, मुखं प्रक्षाल्यते अनेनेति मुखप्रक्षालनं मुख-धौतिकजलद्रव्यम् । एतेन कपोलतलानां स्वच्छातिशयो व्यज्यते । लोचनान्येव कर्णोत्पलानि, एतेन लोचनानां नीलत्वं दीर्घत्वञ्च सूच्यते । हसितच्छवय एव हासद्युतय एव अङ्गरागाः । एतेन हसितच्छवी-नामतीव वैशद्यं द्योत्यते । निःश्वासा एव अधिवासगन्धप्रयुक्तयः शरीरसंस्काराय गन्धयोगाः । "संस्कारो गन्ध-माल्याद्यैः स्यात्तदधिवासनम्" इत्यमरः । एतेन निःश्वासानामतीव सौगन्ध्यं व्यज्यते । अधरद्युतिरेव कुङ्कुमलेपन

(ক) ... ... ।

(খ) এবং যেখানে কন্যাগণের গণ্ডস্থলের আলোকই মুখপ্রক্ষালনের জল, নয়নযুগলই কর্ণের উৎপল, হাস্যের শোভাই অঙ্গরাগ, নিঃশ্বাসবায়ুই শরীর-সংস্কারে গন্ধপ্রয়োগ, অধরের প্রভাই কুঙ্কুম-লেপন, পরস্পর আলাপই বীণার ঝঙ্কার, ভুজলতাই চম্পকপুষ্পের মালা, পাণিতলই

(१) भुवन… । (२)…स्तन… । (३) सीत्कारान् । (४) यत्र च । (५) निःश्वासाः ।
(६) कुङ्कुमानुलेपनं । (७) भुजलतैव चम्पकमालाः ।

दर्पणाः, निजदेहसमैर्वाङ्कलावगुण्ठनम् नवनलदामभिः विलासमपि विधिवाताः [illegible], कोमलाङ्गुलिदाम एव चरणावलम्बनः, नवमल्लिकारोपित एव कुङ्कुमोपहार-कुसुममलाः । (क)

यत्र चापलक्षकरलोऽपि चरणातिभारः, बकुलमालिकाभिरवलम्बनमपि नमक-चित्रवरम्, मधुरागमीलनमपि [illegible]निखिलम्, पंकजमारोऽपि मानिकारचन, मधुपगलितरवनवविहृतिरपि चरतलविधुतिहेतुः, नवमल्लिकाकुसुमधारणमपि नमः, कर्णपूर-कमल-मधुकर-पक्ष-पवनोऽप्यायासकरः । (ख)

[illegible]

(ख) यत्रेति । [illegible]

লীলাপদ্ম, জলমধ্যেই বর্ণ, নিজদেহের কান্তিই অবগুণ্ঠন, [illegible] বিলাসের [illegible], কোমল অঙ্গুলী অঙ্গুরে রঞ্জিবাই চরণের অলক্তক বর্ণ এবং নবমল্লিকা কুসুমে গ্রথিত [illegible] কুন্তল-বিন্যস্ত পুষ্প ছিল।

(খ) যাহা দেখানে, [illegible] চরণ পায়ে ভার বোধ হইত, বকুলফুলের মালার [illegible] [illegible] নিশ্বাস বৃদ্ধি করিত, [illegible] [illegible] কারণ ছিল, [illegible] [illegible] কারণ হইত, [illegible] [illegible] হেতু ছিল, [illegible]

यत्र च यत्र सखीदर्शनेष्वपरिजनहस्तावलम्बनमुत्थानमतिसाहसम्, प्रसाधनेषु हारभारवहनचतुरता स्तनयोः कठिनप्रभावः, कुसुमावचयेषु द्वितीयकुसुम-(१) ग्रहण-मप्यनुचितमशोभितम्, कलाशिल्पेषु मालाग्रथनम् (२) कष्टकुमारजनव्यापारः, देवताप्रणामेषु मध्यभागभङ्गो नातिविस्मयकरः। (क)

(क) यत्र नगर्यां [illegible] सौकुमार्यं प्रतिपादयितुमाह यत्रेति। [illegible] [illegible]

পতিগৃহে থাকিত এবং কর্ণালঙ্কার-পত্রের উপরে উপবিষ্ট ভ্রমরগণের পক্ষবায়ুও কর্ণাভরণের ক্লেশ ঘটাইত ?

(খ) এবং যেখানে কোন কোন কন্যা সখীদিগকে দেখিয়া পরিচারিকাদের হস্ত ধারণ না করিয়াই যে গাত্রোত্থান করিত, তাহা অত্যন্ত সাহসের কার্য্য করিয়াছে, বলিয়া সকলে বিবেচনা করিত। অলঙ্কার পরিবার সময় যে মুক্তামালার ভার সহ্য করিতে পারিত তাহা কেবল স্তনযুগলের কঠিনতার প্রভাবে। ফুল তুলিবার সময় যে একটী ফুল তুলিয়া আর একটী ফুল তোলা, তাহাও যুবতীদের পক্ষে অসম্ভব ছিল। কলাদের শিল্পকার্য্যের মধ্যে, কেবল যে মালা গাঁথা, তাহাও কঠিন লোকের কার্য্য বলিয়াই বিবেচিত হইত। আর দেবতাদের নমস্কার করিবার সময় যে, সেই কন্যাগণের কটিদেশ একেবারে ভাঙ্গিয়া যাইত না, তাহা অত্যন্ত আশ্চর্য্যজনক বলিয়া বোধ হইত।

---

(१)...पुष्प...। (२) नातिकर्म्म।

तत्र चैवंविधस्य किञ्चिदभ्यन्तरमतिक्रम्य चन्द्रापीडः परिभ्रमन् कादम्बरीभवनाभ्यन्तरवर्तिनः परिजनस्य शुश्राव तांस्तानतिमनोहरानालापान् (घ)। तथाहि "लवलिके! कल्पय केतकीधूलिभिर्लवलीलतालवालमण्डलानि (ङ)। सागरिके! गन्धोदक-कनक-दीर्घिकासु (१) विकिर रत्नवालुकाम् (च)। मृणालिके! कृत्रिमकमलिनीषु कुङ्कुमरेणुमुष्टिभिः रञ्जय यन्त्रचक्रवाकमिथुनानि (२) (छ)। मकरिके! कर्पूरपल्लवरसेनाधिवासय गन्धपात्राणि (ज)। रजनिके! तमाल-(३) वीथिकान्धकारेषु निधेहि मणिप्रदीपान् (४) (झ)। कुमुदिके! रक्षार्थं शकुनि-कुलरक्षणाय मुक्ताजालैर्दाडिमीफलानि (ञ)। निपुणिके! लिख (५) मणि-

(घ) तत्रेति। तत्र कुमारीपुरके। कादम्बर्याः भवनाभ्यन्तरे सर्वदा वर्तितस्य।

(ङ) लवलिकेति। लवलिके इति कस्याश्चित् सम्बोधनम्। एवमन्यत्रापि। केतकीधूलिभिः केतकी-कुसुमपरागैः लवलीलतानां आलवालमण्डलानि जलाधारमण्डलानि उपरि वितानानि कल्पय रचय।

(च) सागरेति। गन्धोदककनकदीर्घिकासु सुरभिजलपूर्ण-स्वर्णमयदीर्घिकावापीषु।

(छ) मृणेति। कृत्रिमकमलिनीषु कृत्रिमपद्मसरोवरेषु। यन्त्रचक्रवाकमिथुनानि कृत्रिमचक्रवाक-चक्रवाकीमिथुनानि। कुरुत रञ्जय।

(ज) मकरेति। कर्पूरपल्लवरसेन हरीत द्रवेण, अधिवासय सुरभीणि कुरु।

(झ) रजनीति। तमालवीथिकानां तमालतरुपङ्क्तीनां अन्धकारेषु तिमिरेषु। निधेहि स्थापय।

(ञ) कुमुदिके इति। शकुनिकुलेभ्यः पक्षिसमूहेभ्यो रक्षणाय। छादय आवृणु।

(ঘ) এই প্রকার সেই কন্যাপুরের মধ্যে, চন্দ্রাপীড় কিছু দূর অতিক্রম করিয়া, ইতস্ততঃ বিচরণকারী কাদম্বরীর আসন্ন পরিচারিকাগণের নানাবিধ মনোহর আলাপ শুনিতে পাইলেন। (ঙ) যথা—"লবলিকে! কেতকীপুষ্পের রেণুদ্বারা লবলীলতার আলবালগুলির উপরে মণ্ডপ (গোলাকার ভিত্তি) নির্মাণ কর। (চ) সাগরিকে! সুগন্ধিজলে পরিপূর্ণ সোনার দীর্ঘিগুলিতে রত্নের বালি ছড়াইয়া দাও। (ছ) মৃণালিকে! কৃত্রিম-পদ্মের সরোবরে যে সকল যন্ত্রের (কলের) চক্রবাক ও চক্রবাকী আছে, তাহাদিগকে মুঠে মুঠে কুঙ্কুমরেণু দিয়া রঞ্জিত কর। (জ) মকরিকে! কর্পূরের রস ও পল্লবের রস দিয়া গন্ধদ্রব্যের পাত্রগুলিকে সুগন্ধিত কর। (ঝ) রজনিকে! তমালতরুশ্রেণীর অন্ধকারে মণিময় দীপগুলিকে রাখিয়া দাও। (ঞ) কুমুদিকে! পক্ষিগণ হইতে রক্ষা করিবার নিমিত্ত দাড়িমফলগুলিকে মুক্তার জালে আচ্ছাদিত কর। (ট) নিপুণিকে! মণিময় পুত্তলিকাগুলির স্তনমণ্ডলে

(१) गन्धोदकदीर्घिकासु। (२) कृत्रिम-चक्रवाक... (३) तमालतमाल...। (४) मणिदीपान्। (५) लिखय।

[illegible]कुङ्कुमरसपङ्कमङ्गाम् (ख)। [illegible]लिके। परागैः [illegible]- [illegible]र्णैर्मा (१) [illegible]वेदिकाम् (ग)। [illegible]रिके। [illegible] मदिरारवेन [illegible]माला[illegible]णि (घ)। [illegible]लिके। पाटलय सिन्दूर- रेणुना कामदेव[illegible] (ङ)। [illegible]लिके। पायय [illegible]मधुरसं [illegible] (च)। [illegible]लिके। [illegible] (छ)। [illegible]लिके। [illegible]वीररसम् (ज)। [illegible]लिके। देहि [illegible]पुंस्कोकिलेभ्य[illegible]कलिका[illegible] (झ)। [illegible]लिके। [illegible] [illegible]णि [illegible]रीताम् (ञ)। [illegible]लिके। [illegible] (२) [illegible]-

(क) [illegible] इति। [illegible] [illegible]।

(ख) [illegible] इति। [illegible]वेदिकां, [illegible]।

(ग) [illegible]इति। [illegible]।

(घ) [illegible]इति। कामदेव[illegible], पाटलय [illegible]।

(ङ) [illegible]इति। [illegible]मधुरसं [illegible]।

(च) [illegible]इति। [illegible]।

(छ) [illegible]इति। [illegible]।

(ज) [illegible]इति। [illegible] कोकिला[illegible] पुंस्कोकिलाः [illegible] पुंस्कोकिला- [illegible] [illegible]।

(झ) [illegible]इति। [illegible]।

(ञ) [illegible]इति। [illegible]।

[illegible] দিয়া [illegible] করিয়া দাও। (খ) [illegible]লিকে। [illegible] [illegible]-বেদিকাটিকে পরিষ্কার কর। (গ) [illegible]লিকে। [illegible] দিয়া, [illegible] [illegible] কর। (ঘ) [illegible]লিকে। সিন্দূরের রেণু দ্বারা, [illegible] [illegible] করিয়া দাও। (ঙ) [illegible]লিকে। [illegible] [illegible] পান করাও। (চ) [illegible]লিকে। [illegible] লইয়া যাও। (ছ) [illegible]লিকে। [illegible] দাও। (জ) [illegible]লিকে। [illegible] কোকিলদিগকে [illegible] দান কর। (ঝ) [illegible]লিকে। [illegible] [illegible] করাও। (ঞ) [illegible]লিকে। [illegible]

(१) [illegible]। (२) [illegible]।

হস্ত-গলিত-চামরং ! (১) নবকমলিনীমৃণালকলাপমাকলয়েতি" ইত্যেতান্যন্যানি চ জল্পত এব কাদম্বরীভবনসমীপম্ (২) উপযযৌ (৩)। (ন)

ধূসরিতায়মানমুপবনলতা-গলিত-কুসুম-রেণু-পটলৈঃ, (প) দুর্দিনায়মান-মনিয়ত-পতৎপল্লব-মত্ত-কোকিল-(৪) মধুকারবাম-রস-বর্ষৈঃ, (ফ) নীহারায়মাণ-মনিলবিধূতবীরুৎ-কুসুম-শীকর-শীধু-ধারা-ধূলিভিঃ, (ব) [illegible]

(ন) জল্পত ইতি। [illegible]

(প) ধূসরিতেতি। উপবনস্য [illegible]

(ফ) দুর্দিনেতি। [illegible]

(ব) নীহারেতি। [illegible]

"[illegible]" [illegible]

(ভ) [illegible]

অবশেষ] চামর আন্দোলন করার পরিশ্রমে তোমার হাতখানি অবশ হইয়াছে, তাই চামরটি পড়িয়া গিয়াছে; সুতরাং তুমি সেই চামর ধরে করিয়া নবপদ্মিনী মৃণালগুলিকে আন্দোলিত করিতেছ" এই রকম ও অন্যান্য অনেক রকম আলাপ শুনিতে শুনিতেই চন্দ্রাপীড় যাইয়া কাদম্বরীর বাড়ীর নিকট উপস্থিত হইলেন।

(ন) সেখানে উপস্থিত হইয়া একটি পথ দেখিতে পাইলেন; পার্শ্ববর্তী উপবনের লতা হইতে নিপতিত পুষ্পের রেণুসমূহে সে পথটি ধূলিধূসর ন্যায় বিরাজ করিতেছিল; (প) চঞ্চল কোকিলগণ নখদ্বারা আম্রগুলিকে ক্ষত বিক্ষত করিয়াছিল, সুতরাং তাহার রসধারাতে সেই পথটিকে দুর্দিনের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ফ) রমণীগণ, পুষ্প-বিকাশের নিমিত্ত বকুল বৃক্ষে মদ্য সেচন করিতেছিল; বায়ু তাহার কণাগুলিকে ইতস্ততঃ ছড়াইয়া দিতেছিল; সুতরাং সেই পথটিকে তুষাররাশির ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ব) তৃণাঙ্ক-

(১)...কলয়। (২) ভবনং। (৩) আযযৌ। (৪)...কলাকুল...।

[illegible]स्तवकोपहारैः, (१) (क) नीलाशोक(२)वनायमानं कुसुम-प्रकर-पतित-मधुकर-सन्तानसञ्चारैः, (ख) तथा च सततं यौवनस्य रागसञ्चरायमाणं चरणालक्तकरसविसरैः, (ग) अम्बरतोद्भवर्तित्तदिवसायमानमकरन्दामोदैः (घ) चन्द्रलोकायमानं दन्तपत्रमणिमयपत्रैः, (ङ) प्रियङ्गुवनायमानं कृष्णागुरुपत्र-भङ्गैः, (३) (च) कोकिलायमानं कर्णपूराशोकपल्लवैः, (४) (छ) धवलायमानं चन्दनरसविलेपनैः, (ज) हरितायमानं शिरीषकुसुमाभरणैः, (झ) [illegible]

(क) नीलेति। कुसुमप्रकरेषु पतितानि मधुकरजालानि [illegible]।

(ख) तथेति। तथा च यदि [illegible]। सततः यौवनस्य [illegible] विसरैः [illegible], [illegible] रक्तिमा: [illegible]।

(ग) अम्बरेति। [illegible] सौरभैः, [illegible]।

(घ) चन्द्रेति। [illegible] चन्द्रलोकायमानं [illegible]।

(ङ) प्रियङ्गुति। कृष्णागुरोः पत्रभङ्गैः [illegible], प्रियङ्गुवनायमानं [illegible] प्रियङ्गु[illegible]।

(च) कोकिलेति। कर्णपूरभूता ये अशोकपल्लवाः, कोकिलायमानम्।

(छ) धवलेति। चन्दनरसविलेपनैः [illegible], धवलायमानम्।

(ज) हरितेति। शिरीषकुसुमाभरणैः, हरितायमानं [illegible]।

পুষ্পের দল সকল বিক্ষিপ্ত থাকায় সে পথটি, যেন একটি [illegible] বিরাজ করিতেছিল; (খ) নানাস্থানে বিক্ষিপ্ত [illegible] পুষ্প সমূহের উপরে [illegible] বসিয়া [illegible] করিয়াছিল, তাহাতে সেই পথটি নীলবর্ণ অশোকবনের ন্যায় শোভা পাইতেছিল; (গ) রমণীগণ [illegible] [illegible] করিতেছিল; সুতরাং তাহাদের চরণের অলক্তকরসে সেই পথটিকে রক্তিমার [illegible] ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ঘ) [illegible] সৌরভে [illegible] ন্যায় বোধ হইতে-ছিল; (ঙ) হস্তি-দন্ত-নির্মিত কর্ণভূষণের আলোকে, চন্দ্রলোকের ন্যায় প্রতীতি হইতেছিল; (চ) [illegible] স্থানে কৃষ্ণাগুরু পত্রাবলী অঙ্কিত থাকায় প্রিয়ঙ্গুবনের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ছ) অশোক-পল্লবের কর্ণভূষণে [illegible] বলিয়া বোধ হইতেছিল; (জ) চন্দনরস [illegible] ধবলবর্ণের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ঝ) আর শিরীষপুষ্পের অলঙ্কারে হরিদ্বর্ণের ন্যায় প্রতীতি হইতেছিল; (ঞ) তাহার পর, [illegible]

---

(১) [illegible]। (২) নীলাশোক ..। (৩) প্রিয়ঙ্গুবনায়মানং [illegible], [illegible] [illegible]। (৪) [illegible]।

[illegible]वार्धमानसीमोमयत [illegible] खौजनेन मायारैरिव [illegible] दीर्घेण्यामुत्काकारं मार्गमद्राक्षीत् (क)। तेन चान्तर्निपतन्तं (१) [illegible] नदीविवरावतरमिव [illegible] (ख)। तन्मध्ये च प्रति-बोल इव महता प्रतीहारीमण्डलाधिष्ठितपुरोभागं श्रीमण्डपं ददर्श। (ग)

तत्र च मध्यभागे पर्यङ्किकामाश्रितं [illegible] उपविष्टेन (२) [illegible] परिवृत्[illegible] [illegible] परिवृताम्, (घ)

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

(घ) [illegible]

[illegible] উপবিষ্ট [illegible] দুই পার্শ্বে [illegible] প্রাচীরের ন্যায় দণ্ডায়মান থাকিয়া সেই পথটিও আকৃতিতে কোন দীর্ঘবাহু মনুষ্যদেহের আকৃতির ন্যায় করিয়াছিল ; (খ) চন্দ্রাপীড় আরও দেখিলেন—[illegible] ন্যায় গমন নদীর স্রোত যেমন প্রবাহিত হয়, সেইরূপ পূর্ব্বোক্ত [illegible] [illegible], সেই পথ দিয়া, ভিতর হইতে নির্গত হইতেছে। (গ) চন্দ্রাপীড়, প্রতিস্রোতের ন্যায় সেই [illegible] মধ্য দিয়া যাইয়া, একখানি শ্রীমণ্ডপ দেখিতে পাইলেন ; প্রতীহারীগণ তাহার সম্মুখভাগে অবস্থান করিতেছিল ;

(ঘ) চন্দ্রাপীড়, সেই শ্রীমণ্ডপের মধ্যভাগে কাদম্বরীকে দেখিতে পাইলেন ; তাঁহার পর্য্যঙ্কের প্রান্তভাগে [illegible] উপবিষ্ট ও [illegible]

---

(१) [illegible]। (२)...[illegible]।

नीलांशुकप्रच्छदपटप्रावृतस्य नातिमहतः (१) पर्यङ्कस्योपान्ते (२) धवलोपधान-न्यस्त विपुल-भुजलतावष्टम्भेनावस्थिताम्, महावराहदंष्ट्रावलम्बिनीव महीम्, (ख) विस्तारिणि देहप्रभाजालकेन भुजलताविक्षेपपरिभ्रमैः प्रसरन्तीभिरिव चामर-ग्राहिणीभिरुपवीज्यमानाम्, (ग) निपतितप्रतिबिम्बतया मणिकुट्टिमेषु नागैरिवापह्रियमाणाम्, उपान्ते च रत्नभित्तिषु दिक्पालैरिव पृथक् पृथक् (३) नीयमानाम् उपरि मणिमयपेयमरैरिवोत्क्षिप्यमाणाम्, (घ) हृदयमिव

(क) नीलेति। नीलांशुकमेव प्रच्छदपट आस्तरणवस्त्रं तेन प्रावृतस्य [illegible], नाति-महतः अनतिबृहतः पर्यङ्कस्य उपान्ते [illegible], धवलं शुभ्रम् उपधानं [illegible] [illegible] विपुला [illegible] भुजलता [illegible] [illegible] [illegible] अवस्थिता, अतएव महावराहस्य [illegible] दंष्ट्रावलम्बिनीं महीमिव स्थिताम्, [illegible] दंष्ट्राकल्प-[illegible] इति भावः। अत्रापि नीलोपमालङ्कारः।

(ख) विस्तेति। विस्तारिणि समन्तात् प्रसारिणि, कादम्बर्या देहप्रभाजालकेन [illegible] भुजलताक्षेप[illegible] बाहुलता एव [illegible] [illegible] परिभ्रमैः [illegible], प्रसरन्तीभिरिव [illegible] [illegible], चामरग्राहिणीभिः [illegible] उपवीज्यमानाम्। अत्र [illegible] [illegible] सङ्करः।

(ग) निपतितेति। [illegible] मणिकुट्टिमेषु निपतितप्रतिबिम्बतया हेतुना, [illegible] [illegible] अपह्रियमाणामिव। एतेन [illegible] [illegible] सूचिता। किञ्च, उपान्ते समीपे रत्नभित्तिषु निपतितप्रतिबिम्बतया हेतुना, दिक्पालैः [illegible] [illegible], पृथक् पृथक् नीयमानामिव, [illegible] प्रतिबिम्बपतनादिति भावः। एतेनास्या दिक्पालानामनुरागो भणितः। उपरि [illegible] [illegible] निपतितप्रतिबिम्बतया हेतुना, [illegible] [illegible] [illegible] नीयमानामिव। एतेनास्या [illegible] [illegible] द्योतितः। अत्र [illegible] [illegible] एव [illegible]।

মৌক্তিক সহস্র সহস্র ফণাগণ, তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল। (খ) অনতিবৃহৎ একখানি পর্য্যঙ্ক, তাহার উপর নীলবর্ণের একখানি আস্তরণ বস্ত্র আবৃত, আবার তাহার উপর একটি শ্বেতবর্ণ বালিশ, তাহার উপরে বাম বাহুলতা ন্যস্ত করিয়া রাখিয়া, অবনতবদনে কাদম্বরী অবস্থান করিতেছিলেন ; সুতরাং তখন তাঁহাকে, আদিবরাহের দন্তাবলম্বিনী পৃথিবীর ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (গ) চামরধারিণী পুত্তলিকাগণ, কাদম্বরী শরীরের কান্তি-মধ্যে নিজ নিজ ভুজলতারূপ ক্ষেপণীদ্বয় (দাঁড়, বৈঠা) সঞ্চালনপূর্ব্বক বিচরণ করিতে থাকিয়াই যেন চামর আন্দোলন করিতেছিল। (ঘ) নীচের মণিময় ভূমিতে (মেঝে) কাদম্বরীর প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল বলিয়া, পাতালবাসী নাগগণই যেন তাঁহাকে নীচের দিকে অপহরণ করিয়া লইয়া

(१) महतः। (२) पर्यङ्के, पर्यङ्कस्य। (३) [illegible] [illegible] [illegible]।

प्रवेशितां महामणिस्तम्भैः, पाठितामिव भवनदर्पणैः, गवाक्षमुखेन कौमलकमल-कोटरुत्कीर्णेन विद्याधरलोकेन गगनतलमिवारोप्यमाणाम्, (ख) चित्रकर्मरूपलोकेन कुतूहलसम्पुञ्जितेन त्रिभुवनेनेव परिवृताम्, (ग) भूषण-रव-प्रनृत्त-शिखि-गण-चित्र-बर्हणैव भवनेनापि कौतुकोत्पादितलोचनसहस्रेणेव दृश्यमानाम्, (घ) आत्मपरिजनेनापि दर्शनकौतुकोपार्जितदिव्यचक्षुषेवानिमिष-

---

(क) प्रवेशितामिति। महामणिस्तम्भैः बृहद्‌ प्रवेशितामिव, तेष्वपि प्रतिबिम्बपातादित्याशयः। भवनदर्पणैः गृहदर्पणैः पाठितामिव, तेष्वपि प्रतिबिम्बपातादिति भावः। तथा गवाक्षमुखेन, सौमलकमल मध्ये कचिदपि उत्कीर्णेन लिखितेन विद्याधर निर्मितेन, विद्याधरलोकेन विद्याधरयुवतिभिः गगनतलमारोप्यमाणामिव, तेष्वपि प्रतिबिम्बपातादित्याशयः। सर्वत्रैवोत्प्रेक्षा। ... सौन्दर्यातिशयः सूचितः। ... इत्युत्प्रेक्षा।

(ख) चित्रेति। चित्रकर्मरूपेण चित्रितमूर्त्तिच्छलेन, अपूर्व्वदर्शनकुतूहलात् कादम्बर्या एव दर्शन-कौतुकात् सम्पुञ्जितेन समागतमिलितेन, त्रिभुवनेन त्रिभुवनवासिजनसमूहेन, परिवृतामिव। अत्र कारणस्य त्रिनेत्र्युत्प्रेक्षा। एतेन तस्य लोकातिगं चित्रं तस्याश्च सौन्दर्यातिशयो व्यज्यते।

(ग) भूषणेति। भूषणानां रवेण शब्देन प्रनृत्तं शिखिगणस्य चित्रितं बर्हं यस्य तथाभूतेन भवनेनापि तेन सौन्दर्येणापि, कौतुकेन कादम्बरीदर्शनकुतूहलेन उत्पादितं लोचनसहस्रं येन तादृशेनेव सता, बर्हचन्द्रकाणां लोचनसदृशत्वादिति भावः, दृश्यमानामिव। उत्प्रेक्षा। एतेन तस्या अनुपमाः सौन्दर्यातिशयश्च सूचितः।

(घ) आत्मेति। आत्मनः परिजनेनापि, तस्याः एव दर्शनकौतुकात् उपार्जितानि लब्धानि दिव्यानि निर्निमेषत्वात् अलौकिकानि चक्षूंषि येन तादृशेनेव, अनिमिषनयनेन सता, निर्निमेषं यथा दृश्यमानाम्। कादम्बर्या अतिलोभनीयत्वात् उत्प्रेक्षा। तथाः सौन्दर्यातिशयश्च व्यज्यते।

যাইতেছিল এবং নিকটবর্ত্তী মণিময় ভিত্তিতে তাঁহার প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল বলিয়া, ইন্দ্রাদি দিক্‌পালগণই যেন তাঁহাকে পৃথক পৃথক্‌ভাবে লইয়া যাইতেছিলেন; উপরের মণিময় ছাদে প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল বলিয়া, অন্তরীক্ষ দেবগণই যেন তাঁহাকে তুলিয়া নিতেছিলেন। (খ) বৃহৎ বৃহৎ মণিময় স্তম্ভগুলি যেন কাদম্বরীকে হৃদয়ের ভিতরে প্রবেশ করাইয়াছিল; গৃহের দর্পণগুলি যেন তাঁহাকে পান করিয়াছিল এবং ছাদে খোদিত গবাক্ষস্থ বিদ্যাধরমূর্ত্তিগুলি যেন তাঁহাকে আকাশে তুলিয়াছিল। (গ) চিত্রিত প্রতিমূর্ত্তিচ্ছলে ত্রিভুবনই যেন দর্শন কৌতুকবশতঃ পুঞ্জীভূত হইয়া তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল; (ঘ) অলঙ্কারের শব্দে ময়ূর ময়ূরী আসিয়া নৃত্য করিতেছিল, তাহাতে তাহাদের বিচিত্র পুচ্ছদেশ সেখানে বিস্তার করিতেছিল, সুতরাং সেই গৃহমণ্ডপও যেন কৌতুকবশতঃ নিজের সহস্র নয়ন সৃষ্টি করিয়া কাদম্বরীকে দেখিতেছিল। (ঙ) নিজের পরিজনবর্গও, দর্শনের লোভেই যেন দিব্য চক্ষু

नयनेन निर्वर्ण्यमानाम्, (ङ) अवयवैरपि रागाविष्टैरिवाधिष्ठित-सर्वाङ्गीम्, (१) (च) अस्पृष्टपुरुषामिव मुग्धतां त्यजमानाम्, (छ) अदत्तामपि मन्मथावेश-परवशेनेव स्वयमात्तां यौवनेन, (ज) अतिबहलित-चरणराग-दीधितिभिरिव निर्गताभिः नखमयूखपाटलित-लावण्यजल-वेणिकाभिरिव गलिताभिः निर्वर्तित-(२) रक्ता-शुक-दशा-शिखाभिरिव (३) [illegible]ताभिः, पादाभरण-रक्ताम्बुजमुकुल-सन्देह-दायिनीभिः, अतिकोमलतया नखविवरेण वमन्तीभिरिव (४) रुधिरधारावर्ण-

(ङ) अवयवैरिति। अवयवैरपि [illegible] [illegible] रागाविष्टैरिव [illegible] [illegible] अधिष्ठितानि सर्वाङ्गानि [illegible]। [illegible]। एतेन [illegible] सूचिता।

(च) अस्पृष्टेति। [illegible] मुग्धं शैशवं [illegible], [illegible] शैशवं मुग्धतां [illegible]। [illegible] [illegible]। मुग्धं [illegible] [illegible] इति भणितम्।

(छ) अदत्तामिति। अदत्तामपि पित्रादिभिरसमर्पितामपि, [illegible] यौवनेन [illegible] [illegible]। [illegible]। यौवनारम्भः सूचितः।

(ज) अतिबहलितेति। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible], [illegible] पाटलितं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible], निवर्तितं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भावः, [illegible] [illegible]-

পাত করিয়া নির্নিমেষ নয়নে তাঁহাকে দেখিতেছিল। (ঙ) সমস্ত অঙ্গপ্রত্যঙ্গ, রাগাবিষ্ট হইয়াই যেন কাদম্বরীর সমস্ত অঙ্গে অধিষ্ঠান করিতেছিল। (চ) শৈশবকাল পুরুষ স্পর্শ করে নাই বলিয়াই যেন কাদম্বরী তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়াছিল। (ছ) পিতা বা মাতা কাদম্বরীকে দান না করিলেও, যৌবনকাল কামাবিষ্ট হইয়াই যেন নিজেই তাঁহাকে গ্রহণ করিয়াছিল। (জ) কাদম্বরী নিজ-চরণযুগলদ্বারা যেন প্রবাল-মণির [illegible] একটি নদী সৃষ্টি করিয়াছিলেন; কারণ, সেই চরণযুগল, [illegible] নখসমূহের [illegible] নখের উপরে রক্তবর্ণ মণিসমূহ ধারণ করিয়াছিল এবং তাহার অঙ্গুলীগুলিকে বোধ হইতেছিল যে,—চরণযুগলের রক্তিমা হইতে [illegible] কিরণ যেন নির্গত হইয়া স্থিরভাবে রহিয়াছে; আলতার ফলে রক্তিম [illegible]-

(१)...सर्वाङ्गाम्। (२) निर्वर्तित...। (३)...दशाभिरिव। (४) वर्षन्तीभिरिव।